अक्षरवार अनुक्रमणिका.

पांचमी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

एकमेवाद्वितीयम्.

प्रार्थनामाळा भाग १ लो प्रसिद्ध थये आज आशरे पचीशेक वर्ष थयां; ए अरसामां तेनी चार आवृत्तियो थइ दरेक आवृत्तिनी बब्बे हजार नकलो खपी गइ छे; ते उपरथी गुजराती वाचकवर्गमां ए पुस्तक घणुं प्रिय थइ पड्युं छे ए स्पष्ट जणाय छे. चोथी आवृत्ति खपी गयाथी आ पांचमी आवृत्ति प्रसिद्ध करी छे.

पाछली आवृत्तियो करतां आमां कांइक फेरफार कर्यो छे. दरेक अंकनी गद्य प्रार्थना पछी एकेक दिंडी उमेरी छे; अंक ९ मा मां झुलणा छंद हतो ते "ब्रह्मसंगीत" नामे हालमां समाज तरफथी प्रसिद्ध थयेला एक न्हाना पुस्तकमां बीजां प्रभातीयां साथे छाप्यो छे तेथी ते ए अंकमांथी काढी नांखी तेने स्थळे बीजा छंद मूक्या छे. संगीतनां पदना राग, ताल, पुस्तकनी अंदरज पदने मथाळे आप्या छे तेथी गायननी अनुक्रमणिका काढी नांखी छे; पदनी चालो पाछली आवृत्तिमां हती ते आमां नथी आपी, कारण के आ पुस्तकनां पद हवे घणां लोकप्रसिद्ध थइ गयां छे. पुस्तकने अंते छंद, दिंडी, संगीत

तेनुं अवलंबन करीने ईश्वरनी अंतराधना करवी एज उत्तम उपासनानुं विधान छे; मूर्त्ति अथवा सृष्ट वस्तुनी पूजा ए ईश्वरनी खरी भक्ति नथी. ईश्वरनी प्रार्थना करवामां तथा पापथी मुक्त थवामां कोइनी माध्यस्थीनी जरुर नथी. इंद्रादिक देवताओ तथा देवियो मनकाल्पित देव छे. सूर्य, अग्नि, जल, वायु, ए ईश्वरनी बनावेली वस्तुओ छे तेमां ईश्वरनिर्मित आश्चर्यकारक शक्ति जोइने प्राचीन ऋषियोए तेओनुं वर्णन करवामां अतिशयोक्ति करी अलंकार रूपे देवसंज्ञा आपी छे; पण वस्तुतः तेओमां देवत्व कांइ नथी. वळी उषा (प्रातःकाल) तथा वसु (धन) इत्यादि घणा कल्पनाना देव मानी तेमनी स्तुतिना मंत्रो रचेला छे; पण ऋषियो पाछा एम पण कही गया छे के इंद्र वरुण, अग्नि ए सर्व सूर्यनां नाम छे. ए उपरथी तथा बीजां ऋषिवचनो उपरथी सिद्ध थायछे के खरा पूजनीय देव एक ईश्वर छे. बीजी कोइ वस्तु जड अथवा चैतन्यमां देवत्व नथी. ईश्वर विना बीजी कोइ वस्तुमां देवत्व अथवा थोडुं पण ऐश्वर्य मानवाथी ईश्वरनी स्वतंत्रता, महत्त्व, तथा वेदनां महावाक्योने बाध आवेछे. श्वेताश्वेतर उपनिषत् आध्याय ६ मंत्र ८--९

नतस्यकार्यंकरणंचविद्यते । नतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते॥

परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयते।स्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच॥८॥

स्तोत्र तथा संगीतमां देवना देव, देवाधिपति, देवेश, एवा शब्दो आव्या होय अथवा आवे तो ते प्रथमना देव शब्दनो अर्थ ईश्वर परत्व करवो नहि. देव एटले दिव्य, उत्तम प्राणी एटलोज ए ठेकाणे अर्थ समजवो; पुण्यशाली प्राणि पुण्याचरणथी परलोकमां उत्तम पदवीने पामे ए वात असंभवित नथी.

बीजुं ध्यानमां राखवुं जोइये के भक्ति करवानुं अंतरनुं तथा बाहारनुं विधान सर्व प्रकारे पवित्र तथा नीतियुक्त होवुं जोइये. ज्यां अनीतिनो देखाव के भास थाय तथा जे ध्यान के क्रियाथी मन विकार पामी असद्वृत्तिनो भाव उत्पन्न थाय अथवा थवानो संभव होय एवा अर्चनाविधिनो सर्वथा त्याग करवो जोइये.

उपासना करनारे उपरनी सर्व सूचनाओ लक्षमां राखवी अने परमकृपाळु परमेश्वरने शरणापन्न थइ तेनी उपासना करवी जेथी ईश्वर प्रसन्न थशे अने तेओना आत्माने अक्षय सुख मळशे.



ॐ तत्सत्परमात्मने नमः ॥

बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ जगत्नो कर्ता अने नियंता परमेश्वर ए अप्रतिम आनंदमय अने अद्वितीय छे; ए बधा गुणोनी साथे ते न्यायी तथा परमकृपालु छे, अने तेनां सरजेलां प्राणीओनुं ते पालनपोषण करीने तेओनी प्रार्थना यथाघटित सांभळे छे, अने पोताना सद्गुणी साचा भक्तोने मोक्ष आपे छे. ए समर्थ प्रभुना गुण, महिमा, मंगळभाव, तथा स्तुति गाइ तेनी शुद्ध भक्ति तथा उपासना करवी ए मनुष्यनो मुख्य धर्म छे. उपासना करवाना घणा विधि छे, परंतु अप्रतिम ईश्वरनी अनन्य भावथी मानसि-भक्ति करवी एज उत्कृष्ट भक्ति अने एज तेने प्रिय छे एम सर्व परमार्थदर्शक सर्वोत्तम पंक्तिनां शास्त्रनो सिद्धांत छे. ए सृष्टिनो कर्ता छे, तेनी भक्ति करवी अने तेने प्रसन्न राखवो ए ज्ञान साधन संपादन करी सकेछे माटे मनुष्यदेह
म्पन्न छे, अने केवळ बीजरूप माण
जेम विचारशक्ति वधती जाय तेम ते
पहोंचे, पण ईश्वरी [illegible] णाय छे.
नी विचारशक्ति के[illegible] इं अने
विचार हता. ते वेळ [illegible] प्रमा

कल्पी तथा तेने माणस प्रमाणे इंद्रिय भोग हशे एम मानी तथा ईश्वरी शक्तिना कल्पित विभागो करी तथा तेओनां जूदां जूदां काम कल्पी तेमनी सेवापूजा करता हता अने हवडां पण लोको अज्ञानथी तथा वहेमथी एवी गौण भक्ति करे छे. पृथ्वी उपर राजा जेम अलंकार, वस्त्र, धन, अने भोजनादिथी संतोष पामे छे, अने प्रसन्न थाय छे तेम तेओ थता हशे एम धारी, अनेक प्रकारे एने शरीरे सुख अने वैभवदान करवा लाग्या, अने करे छे. अनेक देशोने विचित्र रूप आप्यां छे. पराक्रमी अने वीर पुरुषो तथा स्त्रीओने ईश्वरना अवतार किंवा अंश धारी पूजे छे. कोई यज्ञ हवन करी बलि आपे छे. उत्तम भक्तिनी पद्धतिनो विचार एक काळे माणसना मनमां आवी सकतो नथी, कारण के बुद्धि केळवाईने प्रकाशित थाय त्यारेज सत्यनुं ज्ञान प्राप्त थाय छे. बुद्धि केळवाय नहि त्यांसुधी माणसोनी विचारशक्ति मंद रहे अने अंतःकरण अंधकारमां रहे ए स्वभाविक छे. बीजी विद्याओ, जेमके यंत्रविद्या, ज्योतिर्विद्या, गणितशास्त्र, शारीरविद्या, भूस्तरविद्या इत्यादि विद्याओनो विद्वान् पुरुषो शोध करीने तेमन पूर्णतामां लाव्या छे अने लावे छे, तेज रीते लोको सृष्टिनी रचना तथा नियमो उपर वधारे विचार करवा लाग्या त्यारे अखिल ब्रह्मांडना ईश्वर एक अगोचर अने निराकार छे एवुं ज्ञान थयुं अने सृष्ट वस्तुने के कृत्रिम पदार्थोने

ॐ तत्सत्परमात्मने नमः ॥

बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ जगत्नो कर्ता अने नियंता परमेश्वर ए अप्रतिम आनंदमय अने अद्वितीय छे; ए बधा गुणोनी साथे ते न्यायी तथा परमकृपालु छे, अने तेनां सरजेलां प्राणीओनुं ते पालनपोषण करीने तेओनी प्रार्थना यथाघटित सांभळे छे, अने पोताना सद्गुणी साचा भक्तोने मोक्ष आपे छे. ए समर्थ प्रभुना गुण, महिमा, मंगलभाव, तथा स्तुति गाइ तेनी शुद्ध भक्ति तथा उपासना करवी ए मनुष्यनो मुख्य धर्म छे. उपासना करवाना घणा विधि छे, परंतु अप्रतिम ईश्वरनी अनन्य भावथी मानसिभक्ति करवी एज उत्कृष्ट भक्ति अने एज तेने प्रिय छे एम सर्व परमार्थदर्शक सर्वोत्तम पंक्तिनां शास्त्रनो सिद्धांत छे. ए सृष्टिनो कर्ता छे, तेनी भक्ति करवी अने तेने प्रसन्न राखवो ए ज्ञान माणस संपादन करी सकेछे माटे मनुष्यदेह उत्तम छे. ए ज्ञान ईश्वरदत्त छे, अने केवळ बीजरूप माणस मात्रमां रहेलुं छे. जेम जेम विचारशक्ति वधती जाय तेम तेम ए बीज वधी पूर्णताने पहोंचे, एवो ईश्वरी नियम जणाय छे. प्राचीनकाळमां माणसोनी विचारशक्ति केळवाएली नहिं अने तेमना धर्मसंबंधी काचा विचार हता. ते वेळा तेमनी समज प्रमाणे ईश्वरनां अनेक रूप

કલ્પી તથા તેને માણસ પ્રમાણે ઇંદ્રિય ભોગ હશે એમ માની તથા ઈશ્વરી શક્તિના કલ્પિત વિભાગો કરી તથા તેઓનાં જૂદાં જૂદાં કામ કલ્પી તેમની સેવાપૂજા કરતા હતા અને હવડાં પણ લોકો અજ્ઞાનથી તથા વહેમથી એવી ગૌણ ભક્તિ કરે છે. પૃથ્વી ઉપરે રાજા જેમ અલંકાર, વસ્ત્ર, ધન, અને ભોજનાદિથી સંતોષ પામે છે, અને પ્રસન્ન થાય છે તેમ તેઓ થતા હશે એમ ધારી, અનેક પ્રકારે એને શરીરે સુખ અને વૈભવદાન કરવા લાગ્યા, અને કરે છે. અનેક દેવોને વિચિત્ર રૂપ આપ્યાં છે. પરાક્રમી અને વીર પુરુષો તથા સ્ત્રીઓને ઈશ્વરના અવતાર કિંવા અંશ ધારી પૂજે છે. કોઈ યજ્ઞ હવન કરી બલિ આપે છે. ઉત્તમ ભક્તિની પદ્ધતિનો વિચાર એક કાળે માણસના મનમાં આવી સકતો નથી, કારણ કે બુદ્ધિ કેળવાઈને પ્રકાશિત થાય ત્યારેજ સત્યનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે. બુદ્ધિ કેળવાય નહિ ત્યાંસુધી માણસોની વિચારશક્તિ મંદ રહે અને અંતઃકરણ અંધકારમાં રહે એ સ્વભાવિક છે. બીજી વિદ્યાઓ, જેમકે યંત્રવિદ્યા, જ્યોતિર્વિદ્યા, ગણિતશાસ્ત્ર, શારીરવિદ્યા, ભૂસ્તરવિદ્યા ઇત્યાદિ વિદ્યાઓનો વિદ્વાન્ પુરુષો શોધ કરીને તેમાં પૂર્ણતામાં લાવ્યા છે અને લાવે છે, તેજ રીતે લોકો સૃષ્ટિની રચના તથા નિયમો ઉપર વધારે વિચાર કરવા લાગ્યા ત્યારે અખિલ બ્રહ્માંડના ઈશ્વર એક અગોચર અને નિરાકાર છે એવું જ્ઞાન થયું અને સૃષ્ટ વસ્તુને કે કૃત્રિમ પદાર્થોને

ईश्वर मानी भक्ति करवी ए गौण अथवा निची भक्ति छे, अने तेनुं मानसिक ध्यान तथा वंदन ए पराभक्ति एटले उत्तमभक्ति छे एवो सिद्धांत करीने ते विषे प्रमाण वचनो लख्यां. आ सिद्धांतो उपरथी, सृष्टिनी रचना उपरथी अने पाको विचार करवाथी श्री जगदीश्वरनी उत्तम भक्ति करवी ए मुख्य कर्तव्य धर्म छे ए नक्की जणाशे. ए विश्वपालकने भूली न जतां एवुं वारंवार चित्तमां स्मरण राखवाथी, तेनो उपकार मानवाथी अने तेनी स्तुति करवाथी उभय लोकमां कल्याण छे. ईश्वरनी स्तुति तथा प्रार्थना जे भाषा आपणे समजता होईए तेमां करवी, कारण के आपणा मननी वात आपणा परमपिता परमेश्वरने निवेदन करती वेळा आपणे शुं बोलिये छिये ते आपणे समजवुं जोईए. ते विना प्रार्थनानी आपणा मन उपर असर तथा ईश्वर साथे तल्लीनता थई सकती नथी. आपणे शुं मागिये छिए ते आपणे जाणवुं जोइए. कृपालु ईश्वरनी सर्व भक्तजनो भेगा थइने भक्ति करे ए हेतुथी प्रार्थनासमाज स्थापित थई छे अने तेना उपयोगने वास्ते प्रार्थनामाळाना चार अंक तथा गायनभाग तथा गद्य प्रार्थना रचवामां आवेली ते पुस्तको घणांखरां खपी जवाथी आ त्रीजी आवृत्ति काढवामां आवी छे, तेमां घटतो सुधारो तथा वधारो करीने तेना पंदर अंक कीधा छे. प्रार्थना करनाराओने सुगम पडवा प्रत्येक अंकमां गद्य, पद्य, गायन अने छेल्ली आरती

ए रीते अनुक्रमथी गोठवण करवामां आवी छे. कठण शब्दनो कोश आप्यो छे तथा गायननां पदना राग, ताल ने चालनी समझ गायननी अनुक्रमणिकामां आपी छे.

प्रार्थनामां ईश्वरना चरण तथा मस्तक हस्त ए मात्र अलंकार रूप लखेलां छे. वस्तुतः ईश्वर एक अप्रतिम अने अद्वितीय छे एज सिद्धांत मान्य छे.

माटे एवा परम कृपावान् मंगलमय सच्चिदानंद परमेश्वर उपर श्रद्धा राखीने तेनी भक्ति करी तेने शरण थवुं एज मनुष्य-देह धारण करवानुं फळ छे अने एथी आत्मानुं कल्याण छे.



धर्मसिद्धांतो.

१ ईश्वरएकएवास्तिसस्सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिलयकर्त्तासृष्टप-
दार्थेभ्योभिन्नोस्त्यविभक्तैश्वर्यश्चसर्वज्ञःसर्वव्यापीसर्वश-
क्तिमान्न्यायकारीकरुणामयःपरमपवित्रोस्तिसचै-
वपूज्यः ॥

२ भक्तिरेवधर्मः ॥

३ सप्रेमश्रद्धोपासनास्तुतिप्रार्थनासदाचारश्चेतिभक्तिः॥

४ भक्त्येश्वरःप्रसीदत्यात्मनऐहिकमामुष्मिकंचश्रेयोभवति

अर्थ.

१ ईश्वर एक छे, ते सृष्टिनो उत्पन्न करनार, स्थितिमां राख-
नार तथा संहार करनार छे; सृष्ट पदार्थोथी ते भिन्न
छे, एना विना बीजो कोइपण देव नथी; ते सर्वज्ञ सर्वव्या-
पी छे, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, तथा करुणामय परम-
पवित्र छे, तेज ईश्वर पूज्य छे.

२ भक्ति एज धर्म छे.

३ सप्रेम श्रद्धा उपासना स्तुतिप्रार्थना अने सदाचार ए भक्ति.

४ भक्तिवडे ईश्वर प्रसन्न थायछे अने आत्मानुं ऐहिक आमु-
ष्मिक कल्याण थाय छे.

अंक १ लो.

ललित.

जय जय प्रभु ब्रह्मचिद्घना, पतितपावना पापमोचना;
प्रणमिये अमे प्रेमभावथी, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति ॥ १ ॥
सकल विश्वमां व्यापिने रहो, जिव प्रते करोछो अनुग्रहो;
सबल सत्य छो श्रेष्ठ सर्वथी, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥२॥
ऋषि मुनी वदे वेदनी श्रुति, तदपि ना जडे तारि तो गति;
अति अगम्य छे सृष्टिनी कृति, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति ॥३॥
अवधि बुद्धिनी बांधि छे तमे, नियममां रही चालिये अमे;
मति नहीं जशे पार ते थकी, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥४॥
तुज दया थकी दुर्मती टळे, तुज दया थकी सन्मती मळे;
तुज विना कृपानाथ को नथी, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥५॥
परम प्रेमथी पोषणो करो, नियम ए दयानाथनो खरो;
विभ वरेण्य छो विश्वना पति, प्रभुपरात्परा प्रेर सन्मति. ॥६॥
क्षण प्रतिक्षणे रक्षणो करो, सकळ दुःख संकष्ट संहरो;
नव कदी करो नाथ दुर्गति, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति ॥ ७ ॥
सकल विश्वमां शान्तिकारक, प्रणत प्राणिना प्राणतारक;
नव जुवो तमे दोष दुष्कृति, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥८॥

कृपासिंधू वंदुं, प्रणत जनबंधु प्रभु तने;
रची ब्रह्मांडोने, नियम अति भारे बहु कर्या,
जिवो शुं विस्तारे, विध विध प्रकारेज पसर्या. ॥३॥
ग्रहो वर्गो सर्गो, गणित क्रमथीरे गगनमां,
तमारी सत्ताथी, निशदिन रह्याछे भ्रमणमां;
दया पूरी देखुं, सबल प्रभु पेखुं सकलथी,
जिवो संरक्षार्थे, प्रगट पथ कीधुं प्रथमथी. ॥ ४ ॥
प्रभु स्रष्टा जाणुं, फरि फरि वखाणुं विनयथी,
दया वीना तारी, मन नहि खसेरे विषयथी;
प्रभु आ संसारे सकल शुभ कर्मोज करवा,
सृजाव्या जीवोने, भव विषय मोहोथि तरवा. ॥ ५ ॥
कियां दुष्कर्मो में, क्यम करि सकुं शुद्ध मनने,
दयासिंधू वंदुं, विमल मति आपो प्रभु मने;
प्रभू घांटी मोटी, निज बलथि ना जाउं उतरी,
कृपादृष्टी पूरी, करी कर ग्रहोरे प्रभु हरि. ॥ ६ ॥
महा सिंधूमांथी, तरणबल शुं हुंज पशुने;
सदा संभाळी ल्यो, शरणगत जाणीज शिशुने;
असत्पंथे चालुं, तदपिज करोछो अनुग्रहो,
क्षमावंता देवा, अवगुण अमारा नव लहो. ॥ ७ ॥
दयावंता दाता, दिन गणि निभावो प्रभु मने,

विना नाथ नथी अन्य मुक्ति दाता, परित्राण करो मारुं पिता माता. १
त्रिविधि ताप कृपानाथ सर्व कापो, दयासिंधु दिव्य ज्ञान मने आपो;
असन्मार्ग थकी सत्पथे चडावो, सदा सन्मति सत्कार्यनी वधारो. २
तमे पूर्णब्रह्म परम उपकारी, नमी करुं हुं प्रभू प्रार्थना तमारी;
विनाति सर्व तमे सांभळी अमारी, विकट विश्व सिंधु थी तमे उतारी. ३
सेतु रूप तमे सृष्टि सकल धारो, महा मंगल गुणछे प्रभु तमारो;
सदा काल तमे सन्निधे पधारो, कृपादृष्टि करी कष्टने निवारो. ४
जहां जोउं त्यहां शक्ति सबल भासे, परम ज्योति सकल विश्वमां प्रकाशे;
सदा आनंदे स्तवन गीत गाउं, प्रेम कुसुम चरण पंकजे वधावुं. ५

शिखरिणी.

अनाद्यंता देवा, अनुपम अचिंत्यशक्ति परा,
परेशा विश्वेशा, प्रणमुं परमात्मा प्रभुवरा;
सदा पादाब्जे हुं, अति विनयभावेथी विनवुं,
विभू विश्वाधीशा, अनुग्रह तमारा अनुभवुं. ॥ १ ॥
अती पापी हुं छुं, विषय महि लाग्युं चित घणु,
कृपादृष्टी वीना, नव रहि सकुं हुं क्षणु अणु;
नियंता त्राता छो, कुशल सुखदाता दुखहरा,
विधाता धाता छो, शरण तुज आव्यो अघहरा. ॥२॥
चढो वारे मारे, अति दिन गणी सेवक मने,

કૃપાસિંધૂ વંદું, પ્રણત જનબંધુ પ્રભુ તને;
રચી બ્રહ્માંડોને, નિયમ અતિ સારે બહુ કર્યાં,
જિવો શું વિસ્તારે, વિધ વિધ પ્રકારેજ પસર્યા. ॥૩॥
ગ્રહો વર્ગો સર્ગો, ગણિત ક્રમથીરે ગગનમાં,
તમારી સત્તાથી, નિશદિન રહ્યાછે ભ્રમણમાં;
દયા પૂરી દેખું, સબલ પ્રભુ પેખું સકલથી,
જિવો સંરક્ષાર્થે, પ્રગટ પય કીધું પ્રથમથી. ॥ ૪ ॥
પ્રભુ ઇચ્છા જાણું, ફરિ ફરિ વખાણું વિનયથી,
દયા વીના તારી, મન નહિ ખસેરે વિષયથી;
પ્રભુ આ સંસારે સકલ શુભ કર્મોજ કરવા,
સૃજાવ્યા જીવોને, મન વિષય મોહોથિ તરવા. ॥ ૫ ॥
કિધાં દુષ્કર્મો મેં, ક્યમ કરિ સકું શુદ્ધ મનને,
દયાસિંધૂ વંદું, વિમલ મતિ આપો પ્રભુ મને;
પ્રભૂ ઘાંટી મોટી, નિજ બલથિ ના જાઉં ઉતરી,
કૃપાદૃષ્ટી પૂરી, કરી કર ગ્રહોરે પ્રભુ હરિ. ॥ ૬ ॥
મહા સિંધૂમાંથી, તરણબલ શું હું જ પશુને;
સદા સંભાળી લ્યો, શરણગત જાણીજ શિશુને;
અસત્પંથે ચાલું, તદપિજ કરોછો અનુગ્રહો,
ક્ષમાવંતા દેવા, અવગુણ અમારા નવ લહો. ॥ ૭ ॥
દયાવંતા દાતા, દિન ગણિ નિભાવો પ્રભુ મને,

नमी साष्टांगे हुं, विनयथि विनंती करुं तने;
अनूकंपाथी तो, विकासित करो मारि मतिने,
प्रभू पो'चाडी द्यो, परम सुख आपी सुगतिने. ॥ ८ ॥
करावो सत्कर्मो, सकल शुभ धर्मो प्रभु तमे,
शमावो जे कीधां, दुरित बहु कर्मो अहिं अमे;
सुउद्योगो आपो, दुख सकल कापो करि कृपा,
श्रमो मिथ्या जाशे, प्रभु कदि करो जो अवकृपा. ॥९॥
तमे कष्टो कापो, परमपद आपो प्रभु मने,
तमारा के'वायो, विदित बधि मारी कृति तने;
पिता माता भ्राता, परमपददाता दुखहरा,
दयानाथा धाता, सकल भयत्राता भवधरा. ॥ १० ॥
क्षमा आपी देवा, दिन प्रति दया नित्य करवी,
प्रजा केरी क्रीया, प्रभु कदि मने तो न धरवी;
तर्या भक्तो तारा, भवजळथी तारा स्मरणथी,
भमावो मां भामा, विमुख नव राखो चरणथी. ॥११॥
प्रभू पापो कापो, परम करुणा लावी चितमां,
निवारो संतापो, त्रिविधिदुखतापो जगतमां;
किधाछे में दोषो, क्षति कदि न जोशो जगपति,
सदा सन्मार्गोनी, अति विमल आपो प्रभु मति. ॥१२॥
कृपालू मायालू, बहु बहु दयालु प्रभु हरे,

प्रमाणो छे शास्त्रे, निगम बहु वाक्योथि उचरे;
दयादृष्टी देवा, दिन जन प्रते नित्य करशो,
करुं तारी सेवा, सकल भय संताप हरशो. ॥ १३ ॥
परा भक्तीथी हुं प्रणिपत करुंछुं प्रभु सदा,
स्विकारी ल्यो स्वामी, अनुग्रह विसारुं नहि कदा;
थयोछुं विश्वेशा, बहुज अपराधी तदपि हुं,
तमारे विश्वासे, सुखथि भवमां हुं वशि रहुं ॥ १४ ॥
महा देवा दाता, नमि नमि करुं नम्र विनति,
प्रभू बीजो त्राता, तुज विण अमारो अहिं नथी;
निराधाराधारा, निरुपम नियंता चिद्घना,
पुरो अर्थो सारा, करि अति कृपा भक्त जनना.॥१५॥

नाराच.

महाधिराज स्वामि सर्वना समर्थ छो तमे,
तमारी विश्वमां सहायताथकी वश्या अमे;
अनन्य भक्ति भावथी प्रसारि बेउ हाथने,
नमी नमी नमी हुं नित्य वंदुं विश्वनाथने. ॥१॥
प्रभू कृपानिधान सर्व शक्तिमान छो बहु,
सदा पदारविंदमां हुं ध्यान राखिने रहुं;
कदी महान भक्त तो न पामशे विपादने, नमी नमी० ॥

सजावनार सृष्टिकार्यथी दिसो तमे अहीं,
अती दया क्षमा कृपा प्रभुस्वभावमां रही;
स्मरुं हुं ते त्रिलोकनाथ एकरे अजातने, नमी नमी० ॥ ३॥
असंख्य चक्चकीत गोल व्योममां दिसे घणा,
ग्रहो उपग्रहो तणा गणीतमां नहीं मणा;
अपार शक्ति धारनार तारनार नाथने, नमी नमी० ॥४॥
अतर्क्य शक्ति छे प्रवेश अल्प जीव शुं करे,
प्रभु कृपाथकीज भक्तकार्य सर्व तो सरे;
नमी गयाज नास्तिको मुकी दिधो विवादने,नमी नमी०५॥
अनीति दुष्कृती तणी क्रिया थई अती घणी,
अनाथ नाथ नित्य सत्य सर्वना तमे धणी;
कृपाकटाक्षथी करो क्षमा महापराधने, नमी नमी० ॥ ६ ॥
समस्तजंतुपोषण क्रिया किधी कृपा थकी,
दयाघना दया तमारि तो जणायछे नकी;
कदीज पुत्रदोषथी न रोष थाय तातने, नमी नमी० ॥७॥
तमे दयाल छो कृपाल भक्तपालरे प्रभु,
विनंति सर्व सांभळी सहाय तो करो विभु;
प्रणाम वारवार हुं करुंछुं प्राणनाथने, नमी नमी० ॥ ८ ॥

मालिनी.

जय जय जगदीशा सृष्टिकर्ता कृपाला,

त्रिभुवनप्रतिपाला प्राणदाता दयाला;
तुजपद प्रणमीए जोडिने बेउ हाथ,
विदित विभु अमारी आपने सर्व वात. ॥१॥
नवळि प्रति अमारी मागणी सर्व कीधी,
करवि उचित केई नाथ लक्षे न लीधी;
घटित विभु हशे जे तेज स्वीकारि लेशो,
प्रणत जन जिवोने पूर्ण आशीष देशो. ॥२॥



गायन.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय छे. चोताल.

पद.

प्रभु सर्वशक्तिमान, करुणाकृपानिधान,
धारिये तमारुं ध्यान, सन्निध पधारो.
भगवंत तुं समान, नथि कोई बलवान,
संकट सेवकतणां, सघळां निवारो. प्रभु०
अनुग्रह उपकार, करो तमे वारवार,
चित्तथी तमारा प्रभु, कदि न विसारो;
किधा बहु अपराध, क्षमा करो विश्वनाथ,
विभु मात तात तमे, करुणा विस्तारो. १ प्रभु०

पद.

काफी. त्रिताल.

करुं प्रभुने हुं प्रणाम, संपूर्ण प्रेम धरीरे प्रभु, करुं प्रभुने०
अचल अगोचर त्रिभुवनव्यापक प्रभु छो अंतर्याम,
तुज यश महिमा गुण गावाने, वाणी पामे विराम,
मति नहि चाले जरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० १.
अनुग्रहथी अवगुण न जुवो करुणासागर नाम,
जीव तणा परिपालक जाणुं, राखी चित्तमां हाम,
भवथी जाउं तरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० २.
अगणित में अपराध किधा छे नव पासुं कहिं ठाम,
अति करुणा प्रभु करि मुज उपर, आपो अविचल धाम,
धीरज धारुं खरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ३.
सृष्टि तणी रचना रची पोते पृथक् रह्या निष्काम,
भक्ति थकी भगवंत पधारो, दास हुं जाणुं आम,
अति सत्ता प्रसरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ४.
सर्व काल हुं शरण तमारे अन्य नहि विश्राम,
ऐहिकामुष्मिक सुख आपी, सफल करो शुभ काम,
करुणा पूर्ण करीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ५.

पद.

खमायची जिल्लो. त्रिताल.

ते सविता परब्रह्म प्रभुनुं, नित्य निरंतर ध्यान धरुं,

भर्ग वरेण्यथी व्याप्त विभु, विश्वेश पदे हुं प्रणाम करुं,
प्रेरो प्रभु मति सद्गति आपो, ए वचनो मुखथी उचरुं. ते स.१.
सर्वज्ञ सर्वान्तरगत, सकलेश्वरने हुं सदा समरुं,
सर्व कर्मना साक्षी गणुं हुं, निंद्य कर्मथी नित्य डरुं. ते सविता.२.
सृष्ट वस्तुथी भिन्न अगोचर, एक तत्व जे अकल खरुं,
ते करुणा सागरने चरणे, शरण रही करद्वय पसरुं. ते सविता.३.
भक्ति परा भगवंत तणी, अति श्रेष्ठ गणी न कदी विसरुं,
विश्वनाथ विश्वास तमारो, धरी नीतिथी नव हुं फरुं. ते स० ४.
अति दीन अल्पज्ञ अशक्त, क्षण प्रतिक्षण अपराध करुं,
परम कृपाथी क्षमा करशो तो, भवसिंधुथी सत्य तरुं. ते सविता.५.

पद.

खमायची जिल्लो. दादरो.

मन कर्म वाणी थकी प्रभुने वंदुंरे,
परमात्मा परब्रह्म परात्पर,
प्रणमुं प्रीते प्रणतजनबंधुरे. मनकर्म० १.
विश्वोद्धारक विभु सुखकारक,
प्रभु तुज भक्तिमां सदा हुं आनंदुंरे. मनकर्म० २.
शरण तने हुं दीन जन बालक,
तमे पालक समस्त जीवजंतुरे. मनकर्म० ३.

पद.

काफी. त्रिताल.

करुं प्रभुने हुं प्रणाम, संपूर्ण प्रेम भरीरे प्रभु, करुं प्रभुने०
अचल अगोचर त्रिभुवनव्यापक प्रभु छो अंतर्याम,
तुज यश महिमा गुण गावाने, वाणी पामे विराम,
मति नहि चाले जरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० १.
अनुग्रहथी अवगुण न जुवो करुणासागर नाम,
जीव तणा परिपालक जाणुं, राखी चित्तमां हाम,
भवथी जाउं तरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० २.
अगणित में अपराध किधा छे नव पामुं कहिं ठाम,
अति करुणा प्रभु करि मुज उपर, आपो अविचल धाम,
धीरज धारुं खरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ३.
सृष्टि तणी रचना रची पोते पृथक् रह्या निष्काम,
भक्ति थकी भगवंत पमाशे, दास हुं जाणुं आम,
अति सत्ता प्रसरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ४.
सर्व काल हुं शरण तमारे अन्य नहि विश्राम,
ऐहिकामुष्मिक सुख आपी, सफल करो शुभ काम,
करुणा पूर्ण करीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ५.

पद.

खमायची जिल्लो. त्रिताल.

ने सचिना परब्रह्म प्रभुनुं, नित्य निरंतर ध्यान धरुं,

अंक २ जो.

भुजंगी.

अहो विश्वना देव सर्वेश साचा, अमो प्राणियोनी सुणो नम्र वाचा;
तमे विघ्न संकष्ट सर्वे निवारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥१॥
प्रभू पूर्ण विश्वास तारो अमारे, महासंकटेरे चढो लाख वारे;
अमारी स्थितीओ तमे लक्ष धारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. २
खरा भेद तारा न कोईज पाम्या, यथा ज्ञान तर्कों करीने विराम्या;
कृपानाथ तुं एक छे सत्य सारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ३
तमे सत्य धार्युं हशे तेज थाशे, अमारुं विचार्युं सहू व्यर्थ जाशे;
तमारा गणी सेवकोने उगारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥४
तमारा प्रभू सर्व संकल्प सत्य, तथापी कृपाधीन छे सर्व कृत्य;
अमे जाणिये शुं तमारा विचारो, दया सागरा सत्य आधार तारो.५
महा कष्टमां धैर्य पूरुं धरावो, तमारुं रुडुं ध्यान नित्ये करावो;
अमारा बधा दोषनेरे विदारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥६
महा काळनुं चक्र माथे फरे छे, जिवो देहनो गर्व मिथ्या करेछे;
क्षणध्वंसि आ घाट छे रे अमारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.॥७
अरे काळरे इष्ट के रिष्ट थाशे, जिवोने न किंचित्कदापी जणाशे;
तमारा अगम्यो गुणो छे अपारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ८

पूर्ण करो प्रभु योग्य मनोरथ,
दीनदयाळ हो कृपाळ दयासिंधुरे. सत्कर्म० ४.

आरति.

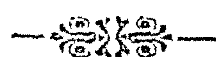
जयदेव जयदेव, जय जगदाधारा जय जगदाधारा;
अंतर्यामि अपारा (२), सर्वोत्तम सारा. जयदेव० १.
स्वायंभू विभू आप, त्रिभुवनमां व्यापो (२);
सुख संतोषो आपी (२), किल्बिष सहु कापो. जयदेव० २.
मंगळ सुंदर रूप, करुणामय तारूं (२);
प्रेम भावथी सारा (२), चितमां नित्य धारूं. जयदेव० ३.
श्रद्धा रूपी अर्घ्य, आपुं हु चरणे (२);
गंगाजळ भक्तीनां (२), अर्पी रहुं शरणे. जयदेव० ४.
एकाग्रेथी ध्यान, धारुं हुं चित्ते (२);
प्रेम पुष्प वधावुं (२), प्रभुजीपें नित्ये. जयदेव० ५.
सदाकाळ सन्निध, जाणीने देवा (२);
नानारतिथी निरखुं (२), ए उत्तम सेवा. जयदेव० ६.
निस्वार्थी विश्वेश, अति अद्भुत माया (२);
साष्टांगे नमने हुं (२), भजतुं जगराया. जयदेव० ७.
अनजाणना अपराध, अतिशय छे मारा (२);
क्षमा करो करुणाथी (२), प्रभु जगदुद्धारा. जयदेव० ८.

लोकमां तारा जेवो बीजो कोई नथी,तो ताराथी चढतो क्यांथी?

हे परम कृपालु परमात्मा ! आ वेळा तारुं चिंतन, तारी स्तुति, अने तारी प्रार्थना करुंछुं. तारा गुण गाउंछु, तुं सर्वज्ञ अने सर्वव्यापक छे, मारुं मन आ समये शा काममां लागेलुं छे तेथी तुं अजाण्यो नथी. आ समय कोई बीजा विषय उपर मारुं चित्त न लागतां केवल तारा पवित्र स्मरणमां निमग्न रहे, तारुं ध्यान धरे, तारा स्वरूपने ओळखवाने प्रयत्न करे, एवी मारी संपूर्ण इच्छा छे. बीजा कोइ जोडे सरखावी न शकाय एवा अनुपम महा प्रभु, तने हुं अभिवंदन करुंछुं. तारी स्तुति करवाने हुं अल्प जीव असमर्थ छुं. मारा विचार अने मारी वाणी तारां वखाण करवाने, तारो उपकार मानवाने छेक अशक्त छे. तारा माहात्म्यनुं वर्णन करवाने मारी भाषामां योग्य शब्दो नथी. हे अनादि अने अनंत परमेश्वर तारा कृत्योनो विचार करतां मारी अल्प बुद्धि पाछी हठे छे. आकाश भणी दृष्टि करुंछुं तो सानंदाश्चर्य पामुंछुं. सूर्य, चंद्र, ग्रहो, उपग्रहो असंख्य तारा, जोई घणुं आश्चर्य पामुंछुं. तेओ शुं हशे, शा अर्थे रचेला छे, केवां प्राणियो तेओमां वसे छे, त्यांनी लीला त शोभा केवी हशे, तेओनां महत्व अने अंतरादिनां विचार छुं, त्यारे मारी तर्कशक्ति निराश थई नीची पडेछे. नीची करुंछुं तो आ पृथ्वी चमत्कारोथी तथा अति सुंदर वस्तुओथी

भरेली छे; ते जोई मारी बुद्धि चकित थइ जाय छे, अने तुं आ जगत्‌नो कर्ता नियंता अने पालन करनार छुं एवो मने स्वाभाविक बोध थाय छे.

हे प्रभु ! हुं केवल अशक्त पामर प्राणी छुं. अज्ञान, अहंकार अने मनोविकार प्रबल थइने मने आडे रस्ते दोरे छे, अपराध करवानुं सूजाडे छे, माटे हे महाप्रकाशमान् परमेश्वर ! अति नम्रताथी तथा शुद्ध अंतःकरणथी तारी प्रार्थना करुंछुं के मारी बुद्धिने शुद्ध कर, मारा पापनुं ज्ञान मने थाय, तेनो पश्चात्ताप थाय, एवी सुमति मने आपीने, फरीथी तेवां काम न करवाने मारुं मन दृढ थाय, निरंतर तारी सेवा करुं, मारा संसारव्यवहारिक धर्म बजावुं अने तारी खरी भक्ति अने उपासना करुं एवो उत्साह तथा दृढता आपी मारा अपराध क्षमा करी मारुं, हे दयालु भगवान् ! रक्षण करो. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः



दिंडि २.

सत्य सगुण परम ब्रह्मने उपासुं,सृष्टिनियम निरखिचित्तमां उलासुं;
प्रेम भक्ति थकी ध्यान हृदय धारुं,महा मंगल प्रभु नाम हुं उचारुं. १
सूर्य चंद्र ग्रहो गगनमां विराजे,महाशक्ति थकी मेघनाद गाजे;
नियम तारा जडवर्ग सर्व पाळे,विना तुं प्रभु नहि पत्र एक हाले. २

सृष्ट वस्तु थकी भिन्न सबळ स्वामि,एक देव सत्य सर्वांतर्यामि;
तमे विश्वंभर विश्वना नियंता, तमे सर्व दुरित कर्मना निहंता. ३
दीनानाथ मने अभय दान आपो,दया दृष्टि करी कष्ट सकळ कापो;
तमे जाणो मुज अंतर्गत वात,करो रक्षण प्रभु मारुं मात तात. ४
सत्य आश्रय प्रभु एक छे तमारो, अन्य त्राता नथि नाथ कोइ मारो;
कृपासिंधु विना हाय कोण सा'य,रहो नाथ मने सर्वदा सहाय. ५

स्त्रग्धरा.

शान्ताकारा कृपाळु, प्रभुविण नहि को, अन्य आधार मारे;
आवुं द्वारे तमारे, अति दिन जन हुं, राखी विश्वास भारे;
आशा धारी तमारी, विनयथी विनवुं, विघ्न संताप कापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. १
सर्वान्तर्यामि साचा, सुख बहु करता, सर्व संताप हर्ता;
सत्ता सर्वत्र धर्ता, प्रीति अति करिने, प्राणिना प्राणभर्ता;
भक्तिभावे भजुं हुं, भवभयहर रे, नीति सन्मार्ग आपो; पापो० २
सृष्टीशोभाप्रभाथी, प्रगट बहु किधी, पूर्ण शक्ती तमारी;
वस्तू मात्रे विचारी, विभु निज बळथी, धर्म दीधोज भारी;
व्यापो संपूर्णताथी, प्रभु त्रिभुवनमां, छे तमारा प्रतापो; पापो० ३
आकाशे शोभि रे'छे, अगणित गतिथी, गोलसर्गोज सारा;
राशीचक्रे रवींदु, ग्रह उपग्रहथी, सर्व नक्षत्र तारा;
सानंदाश्चर्य पामुं, प्रभु निज कृतिनी,छे कळाओ अमापो; पापो० ४

अन्योन्याकर्षणोना, अतिदृढ जडने, मुख्य तें धर्म आप्या;
भेदो सर्वे ऋतूना, करि निश दिनने, काल प्रत्येक स्थाप्या;
भासे चातुर्य पूरुं, नहि कदि नियमो—ने तमे तो उथापो; पापो० ५
जीवो संरक्षणार्थे, वहु वहु विधिथी, वस्तु सर्वे सृजावी;
सत्ता सर्वत्र व्यापी, प्रभु निज कृतिनो, हेतु दीधो बतावी;
एवा कारुण्यमूर्ती, शुभगुणयुतना, हुं करुं नित्य जापो; पापो० ६
सर्वे स्थाने बिराजो, विभु सुखकर हे, विश्वमांगल्यकारी;
श्रद्धासद्भक्तिभावे, प्रणमि प्रभु करुं, शुद्ध अर्चा तमारी;
लज्जा राखो अमारी, मति विमल करो, हे प्रभू मायबापो; पापो० ७
विद्यासद्बोधज्ञाना-मृतफलरसनां, नाथ पानो न कीधां;
कीधां कार्यो न रुडां, दिन बलहिनने, द्रव्य दानो न दीधां;
मानी आज्ञा न तारी, करि अवगणना, ते क्षमा नाथ आपो; पापो ० ८
विश्वाधीशा महेशा, नहि कदि मनमां, लावशो भक्तदोषो;
पूरो वाञ्छा अमारी, जगपति जगमां, आपि संपूर्ण तोषो;
सर्वे तारी दयाथी, भवपति टळशे, दुष्ट संस्कार शापो; पापो० ९
विघ्नापत्ती विदारो, त्रिभुवनपति हे, प्रार्थना लक्ष धारो;
दृष्टी मारी सुधारो, विपति दुख समे, सन्निधे रे पधारो;
पाळो पूरी कृपाथी, प्रभु हरि हरशो, सर्व संसार तापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. १०

—◦—

उपेंद्रवज्रा.

नमुं नमुं अद्भुत कर्मकर्ता, नमुं नमुं सृष्टि समस्त भर्ता;
नमुं नमुं सर्व शरण्य नाथ, अनादि विश्वेश विभू अज्ञात. १
अचिंत्य अव्यक्त परात्परेश, समस्तसाक्षी अति श्रेष्ठ ईश;
अनाद्यनंता विभु निर्विकार, गुणो तमारा प्रभु छे अपार. २
अतर्क्य आनंदमयस्वरुप, अखंड छो एक तमे अनूप;
अपार सत्ता सघळे दिसे छे, जिवो तमारा बलथी जिवेछे. ३
अनंत अंतर्गत वृत्ति जाणो, श्रुती तथा शास्त्र विषे प्रमाणो;
विचित्र लीला अति शक्ति तारी, कदी न पामे गतितो अमारी. ४
तमे अविद्या थकि पार गाजो, सदा जिवोनी समिपे विराजो;
अदृश्य छे रूप प्रभू तमारुं, जुवो तथापि सहु कृत्य मारुं. ५
नहीं तमे छो सुर दैत्य रूपे, नहीं पुरूषे नाहि नारिरूपे;
स्वतंत्र सर्वादि विकारहीन, नथी थता नाथ उपाधिलीन. ६
तर्या नथी कोइ तमारि माया, अतर्क्य वेदश्रुतिमां गवाया;
समान वृत्ती धरिने रहोछो, जिवो प्रते नित्य कृपा करोछो. ७
अपाद छो तोय गती करोछो, करो नथी तोय करे ग्रहोछो;
अचक्षु छो तोय तमे जुओछो, अकर्ण छो तोय तमे सुणोछो. ८
तमे स्वइच्छावलसुक्रियानी, धरो प्रभू शक्ति प्रपूर्णतानी;
स्वयंभु सर्वादि स्वयंप्रकाश, करो तमे पाप सहू विनाश. ९

क्रिया जिवोनी तमने विदीत, नहीं अमारे वदवी विहीत;
समस्तसाक्षी प्रभु तुं परेश, पिता तने शुं कहुं हुं विशेष. १०
कृपानिधे हे करूणेश्वरा हे, दयानिधे हे परमेश्वरा हे;
नमी नमीने करिये प्रणाम, करो अमारा परिपूर्ण काम. ११

भुजंगी.

दयासिंधु देवा विनंती अमारी, दयाथी दिले नाथ लेशो विचारी;
खरुं हीत कल्याण जीवो तणुं जे, जगाधीश जाणो तमे पूर्ण रीते. १
शिशु लाडिने मागणी सर्व मागे, तथापि पिता जे घटे तेज आपे;
कृपालु तमे सर्वथी श्रेष्ठ सारा, तमे पूरशो योग्य अर्थो अमारा. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

तमे सर्वथी महान, आपो रूडुं नीतिज्ञान,
आश्रय आधार सत्य, राखिये तमारो;
प्रभु सत्वगुणमय, करिये अति विनय,
अल्पज्ञ जीवोनी स्थिति, मनमां विचारो. तमे०
अमे तो अशक्त प्राणी, वधु शुं वदिये वाणी,

क्षमा विना नाथ नथी, निर्वाह अमारो;
पाप कर्म परहरो, विघ्न सर्व दूर करो,
मंद छे अमारी मति, प्रभु ते सुधारो. तमे०

पद.

काफी त्रिताल.

प्रभु अपराध क्षमा करो मारो,
निंदित कर्मो जे में कीधां, ते प्रभु सर्व विसारो, प्रभु० १
शरण रही प्रभु चरणे वंदुं, भवजल पार उतारो. प्रभु० २
दास तणुं रक्षण करवानो, छे प्रभु धर्म तमारो. प्रभु० ३
कृपाघना कृपादृष्टि करीने, मति प्रभु मारी सुधारो. प्रभु० ४
करद्वय जोडी विनति करुंछुं, संकट सर्व निवारो. प्रभु० ५

पद.

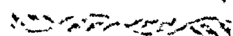
खमाच जिल्लो, एक ताल.

दीननो दयाल छोडी, कोने शरण जाउं; दीननो०
मात तात जाणी प्रभु, चरण मते थाउं;
पामिने प्रसाद पूर्ण, कृतकृतार्थ थाउं. दीननो० १
नीतिभक्तिरूपी पुण्यतीर्थमां हुं न्हाउं;
परम इष्ट ब्रह्मनी, हुं स्तुति गुण गाउं. दीननो० २
प्रभु कृपानिधाननी हुं, पूर्ण कृपा चाहुं;
संकट समय नाथ, पल्लव हुं साहुं. दीननो० ३

नमी नमी परात्पर हुं, शरण तारे आवुं;
प्रेमपुष्प अंजलि, प्रभुपदे वधावुं. दीनने० ४

आरति.

जयदेव जयदेव, जयमंगलदाता जयमंगलदाता;
विश्व तणा विभुधाता(२), भक्तजनत्राता. जयदेव० ॥१॥
करुणासिंधु कृपाल, कृतियो नव जोशो(२);
अल्पमती जीवोना(२), अतिशय छे दोषो. जयदेव० ॥२॥
सच्चिद्घन आनंद, त्रिभुवनना स्वामी(२);
सर्वज्ञांतर्यामी(२), सचराचरगामी. जयदेव० ॥३॥
संकटसमये नाथ, प्रभु आवो वारे(२);
भय सर्वे संहारो(२), शरण अम तारे. जयदेव० ॥४॥
अंतर्भावथि नाथ, करुं तारी सेवा(२);
दुरित कृतीओ मारी(२), क्षमा करो देवा. जयदेव० ॥५॥
अभिवंदन भगवंत, करुं निशदिन तमने(२);
कृपा करीने आपो(२), प्रभुसन्मति अमने. जयदेव० ॥६॥
सदाचार ए मुख्य, छे भक्ति तारी(२);
सदा तमारे चरणे(२), वृत्ति रहो मारी. जयदेव० ॥७॥
जगदीश्वर भगवान, तापत्रय हरजो(२);
मनवांछित प्रभु मारां(२), सकल पूर्ण करजो. जयदेव० ॥८॥



અંક ૩ જો.

——○——

લલિત,

જગતનાથરે, નમ્ર થૈ અમે, વિનયભાવથી, વંદિયે તને;
શ્રવણ આ કરો, સ્વલ્પ પ્રાર્થના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૧
વિષય ભોગમાં, રાખિછે રતિ, નવ કદી અમે, ભક્તિ તો કિધી;
શરણ આવીને, માગિયે ક્ષમા, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૨
સબલ શક્તિ છે, તાહરી પ્રભુ, કદી કળી શકા-તી નથી વિભુ;
સકલ કર્મના, સાક્ષિ ચિદ્ઘના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૩
ગ્રહગણો તણા, ગોલ જે દિસે, અગણ શક્તિ છે, સર્વને વિષે;
પ્રભુ ચમત્કૃતી-માં નથી મણા, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૪
જગતસૃષ્ટિમાં, ચાતુરી અતિ, નિયમપૂર્વકે, છે બધી કૃતિ;
જિવ પ્રતે કિધી, છે બહૂ દયા, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૫
મનુષને દિધી, શ્રેષ્ઠ સર્વથી, સત અસત્યના, જ્ઞાનની મતિ;
દુર કરો પ્રભૂ, દુષ્ટ વાસના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૬
સકલ પ્રાણિના, માત તાતરે, વિદિત છે તને, સર્વ વાતરે;
તદપિ સાંભળો, દીન યાચના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૭
શમદમાદિના, નીમ ના લિધા, જન હિતાર્થરે, કાર્ય ના કિધાં;

निज सुखार्थमां, राखि भावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ८
अनुग्रहो सदा, सर्वथा करो, विनति दासनी, लक्षमां धरो;
नव जुओ तमे, दोष दीनना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ९
विपति कालमां, धैर्य आपशो, प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो;
तुज दया विना, सर्व छे वृथा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १०
पतित पावना, प्राणना पति, परम प्रेमथी, प्रेर सन्मति;
सगुण ब्रह्मने, नित्य वंदना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ११
जगहितार्थनां, कार्य जो थशे, प्रभु प्रसन्न तो, ते थकी थशे;
नव तने गमे, ढोंग गर्वना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १२
विकट जाल छे, विश्वमां घणी, तुज विना नथी, अन्य रे धणी;
सघळि टाळशो, रे विटंबना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १३
दिनदयाळु रे, दास तारशो, परम भक्तनां कार्य सारशो;
दुरित कापशो, सर्व जनमनां, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १४
चपल छे घणा, धर्म चित्तना, विकल वेग छे, इंद्रियो तणा;
वश नहीं थशे, रे दयाविना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १५
जगतमां रही, नीति पाळिये, सुकृतमां सदा, काल काढिये;
अति वरिष्ठ छे, ए उपासना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १६
प्रभु तने परा-भक्ति तो गमे, तुज पदे रती, राखिये अमे;
सकल व्यर्थ छे, बाह्य साधना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १७
नियम ताहरा, नित्य मानिये, प्रभु प्रसाद तो, पूर्ण पामिये;

नरकनी नहीं, थाय यातना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १८
तुज कृपाथकी, बोलिये अमे, तुज कृपाथकी, चालिये अमे;
तुज कृपाथकी, थाय कामना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १९
नवळि वाणिये, ले कहुं अमे, प्रभु स्विकारि ल्यो, सर्व ते तमे;
सतत राखशो प्रीतिभावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २०
समिप आवियां, प्राणि पामरो, शरण राखिने, रक्षणो करो;
दुरित दुर्गुणो, छे अती घणा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २१
कर प्रसारिने, वंदिये अमे, करगरी कही-ए खरुं तने;
प्रभु शरण्य छो, सर्व जीवना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २२
दिन प्रते दया-दृष्टि राखशो, दुरित कर्मने, कापि नांखशो;
प्रभु अमारि छे, एज याञ्चना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २३



हे परमदयाळु परमेश्वर! आ संसारयात्रामां अमारां कर्तव्य कर्म करवामां अमने घणी तरेहनी अडचणो नडे छे. अमारुं मन भ्रमित थइ आडे मार्गे घसडाइ जाय छे. तारी सहायता विना ए दूर थाय तेम नथी, माटे आ अमारी अल्प प्रार्थना श्रवण करी अमारुं मन निर्मल कर.

पहारना बोलो अने देखावथी तुं कदी छेतरातो नथी. अंतःकरणमां जे जे खोटा विचारो थायछे ते तुं अंतर्यामी जाणे छे, अने खोटां कर्म कर्यां होय तेज प्रमाणे तेमने तुं गणे छे.

निज सुखार्थमां, राखि भावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ८
अनुग्रहो सदा, सर्वथा करो, विनति दासनी, लक्षमां धरो;
नव जुओ तमे, दोष दीनना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ९
विपति कालमां, धैर्य आपशो, प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो;
तुज दया विना, सर्व छे वृथा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १०
पतित पावना, आपजो मति, परम प्रेमथी, प्रेर सन्मति;
सगुण ब्रह्मने, नित्य वंदना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ११
जगहितार्थनां, कार्य जो थशे, प्रभु प्रसन्न तो, ते थकी थशे;
नव तने गमे, ढोंग गर्वना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १२
विकट लाल छे, विश्वमां घणी, तुज विना नथी, अन्य रे धणी;
सघळि टाळशो, रे विडंबना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १३
दिनदयाळ रे, दास तारशो, परम भक्तनां कार्य सारशो;
दुरित कापशो, सर्व जे मनां, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १४
चपल छे घणा, धर्म चित्तना, विकल वेग छे, इंद्रियो तणा;
वश नहीं थशे, रे दयाविना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १५
जगतमां रही, नीति पाळिये, सुकृतमां सदा, काल काढिये;
अति नरिष्ठ छे, ए उपासना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १६
प्रभु तने परा-भक्ति तो गमे, तुज पदे रती, राखिये अमे;
सकल व्यर्थ छे, बाह्य साधना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १७
नियम नाहरा, नित्य पाळिये, प्रभु प्रसाद तो, पूर्ण पामिये;

નરકની નહીં, થાય યાતના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૧૮
તુજ કૃપાથકી, બોલિયે અમે, તુજ કૃપાથકી, ચાલિયે અમે;
તુજ કૃપાથકી, થાય કામના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૧૯
નવળિ વાણિયે, જે કહ્યું અમે, પ્રભુ સ્વિકારિ લ્યો, સર્વ તે તમે;
સતત રાખશો પ્રીતિભાવના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૨૦
સમિપ આવિયાં, પ્રાણિ પામરો, શરણ રાખિને, રક્ષણો કરો;
દુરિત દુર્ગુણો, છે અતી ઘણા, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૨૧
કર પ્રસારિને, વંદિયે અમે, કરગરી કહી-એ રહું તને;
પ્રભુ શરણ્ય છો, સર્વ જીવના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૨૨
દિન પ્રતે દયા-દૃષ્ટિ રાખશો, દુરિત કર્મને, કાપિ નાંખશો;
પ્રભુ અમારિ છે, એજ વાઞ્છના, પ્રભુ કૃપાનિધે, રે દયાઘના. ૨૩



હે પરમદયાળુ પરમેશ્વર ! આ સંસારયાત્રામાં અમારાં કર્તવ્ય કર્મ કરવામાં અમને ઘણી તરેહની અડચણો નડે છે. અમારું મન ભ્રમિત થઇ આડે માર્ગે ઘસડાઇ જાય છે. તારી સહાયતા વિના એ દૂર થાય તેમ નથી, માટે આ અમારી અલ્પ પ્રાર્થના શ્રવણ કરી અમારું મન નિર્મલ કર.

વહારના બોલો અને દેખાયથી તું કદી છેતરાતો નથી. અંતઃકરણમાં જે જે ખોટા વિચારો થાયછે તે તું અંતર્યામી જાણે છે, અને ખોટાં કર્મ કર્યાં હોય તેજ પ્રમાણે તેમને તું ગણે છે.

निज सुखार्थमां, राखि भावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ८
अनुग्रहो सदा, सर्वथा करो, विनति दासनी, लक्षमां धरो;
नव जुओ तमे, दोष दीनना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ९
विपति काळमां, धैर्य आपशो, प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो;
तुज दया विना, सर्व छे वृथा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १०
पतित पावना, प्राणना पति, परम प्रेमथी, प्रेर सन्मति;
सगुण ब्रह्मने, नित्य वंदना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ११
जगहितार्थनां, कार्य जो थशे, प्रभु प्रसन्न तो, ते थकी थशे;
नव तने गमे, ढोंग गर्वना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १२
विकट जाल छे, विश्वमां घणी, तुज विना नथी, अन्य रे धणी;
सघळि टाळशो, रे विटंबना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १३
दिनदयाळ रे, दास तारशो, परम भक्तनां कार्य सारशो;
दुरित कापशो, सर्व जनमनां, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १४
चपल छे घणा, धर्म चित्तना, विकल वेग छे, इंद्रियो तणा;
वश नहीं थशे, रे दयाविना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १५
जगतमां रही, नीति पाळिये, सुकृतमां सदा, काल काढिये;
अति वरिष्ठ छे, ए उपासना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १६
प्रभु तने परा-भक्ति तो गमे, तुज पदे रती, राखिये अमे;
सकल व्यर्थ छे, बाह्य साधना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १७
नियम ताहरा, नित्य मानिये, प्रभु प्रसाद तो, पूर्ण पामिये;

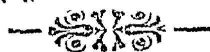
जणाया विना रहेतां नथी. ते वखते तारुं तेजोमय स्वरूप अने तारा उपकार आपोआप देखाई आवे छे. तारा नियमो अने इच्छानी छाप अमारा अंतःकरणमां एवी तो वागेछे, अने तेनी असर एटली तो थाय छे के, तेथी उलटुं चालवानो धिक्कार आव्या विना रहेतो नथी; पण अमे आ संसारनी मायानां काम करीए छीए त्यारे, अमारा अधम स्वभावने लीधे, अमारा मनोविकारने लीधे, ए असर ओछी थइ जायछे. लोभ, मोह, काम, प्रबल थई विवेकबुद्धिने दावी नांखे छे, अमारां ज्ञानचक्षु फुटी जायछे; अमे अंध थइ मनोविकार दोरी जाय ते रस्ते चढीए छीए, अने घणी जाळोमां फसाई पडिये छीए. आवी वखते, हे जग-त्राता परमेश्वर! तारी मदद वगर अमे बहु अथडाई पडीए छीए. मनो विकारने नरम पाडी विवेक बुद्धिने प्रबल करवाने तारा विना अमारे कोईनो आश्रय नथी. माटे हे कृपालु सर्व शक्तिमान् परमेश्वर! खरा अंतःकरणथी अने एक निष्ठाथी अमे तारी प्रार्थना करीए छीए के तुं अमने खरे रस्ते चढाव; स्वार्थ, लोभ, काम, वगेरे अनीतिथी अमारा अंतःकरणने दूर राख; द्वेष, अभिमान, लोभ, वगेरेने लीधे अमने अने अमारा जातिभाईयोने पोतानो खरो धर्म बजाववामां जे हरकतो पडेछे ते तुं दूर कर; निरंतर तारी इच्छा अने तारा नियमो प्रमाणे चालवाने अमने मदद कर; अमारां पाप अने संकट दूर कर;

दीन शब्दोथी तारी प्रार्थना करी क्षमा मागीए छीए, अने नीति तथा सदाचरणमां रहेवानुं कहीए छीए, परंतु मनमां कोइने दगो देवाना, कोइनो विश्वासघात करवाना, कोइनी हिंसा करवाना, कोइनो माल छीनवी लेवाना, के बीजा कोइ पाप कर्मना विचार चालता होय; तो सघळी प्रार्थना निष्फल जाय, अने तारी वमणी शिक्षाने पात्र थइए, ए निश्चय छे. अंतःकरण शुद्ध थया वगर आवा व्हारना बोलथी तुं न्यायी प्रभु अमारां पापनी कदी क्षमा करनार नथी. माटे हे करुणासिंधु अमे एकाग्रचित्तथी अने खरा दिलथी तारी प्रार्थना करीए छीए, के अमारुं अंतःकरण प्रकाशमान् कर, अने अमने खरो रस्तो देखाड. एकाग्रचित्तथी अने खरा दिलथी तारी प्रार्थना करीए, अने पाप कर्म मनमां पण न आणीए, तोज आमारी मुक्ति छे. थएला कुकृत्यने वास्ते पश्चात्ताप करी माफी माग्या पछी वारंवार अमे एवांज कृत्य करवामां प्रवृत्त रहीए तोपछी तारी क्षमानी आशा राखीए ए फोगट छे. माटे हे सर्व शक्तिमान् परमेश्वर! वारंवार पाप कर्म करतां अटकवानी अमने प्रेरणाकर, अने पाप कर्मना विचार पण मनमां न आवे एवी मति आप.

ज्यारे अमारुं मन तारा विचारमां तल्लीन थई जाएछे, त्यारे आ सृष्टिना दरेक चमत्कारमां तारी अथाग शक्ति अने डहापण

जाणो अंतःस्थ वार्ता, वभु प्रभु तमने, शुं करुं हुं विलापो;
विश्वासे हुं रहुं छुं, भवपति मुजने, सर्वदा शान्ति आपो;
आराधु एक चित्ते, प्रभु मुज हृदये, भक्ति श्रद्धा वधारो; वंदुं. २
कृत्यो कूडां करुंछुं, अविहित अवळे, मार्ग हुं संचरुं छुं;
तोए विश्वास राखी, प्रभु शुभ पदनुं, ध्यान चित्ते धरुंछुं;
जाणी मारी दयारे, त्वरित प्रभु करो, नाश सर्वे विकारो; वंदुं. ३
दोषो मारा घणा छे, अगणित दुरितो, रे बहु क्रूर शूणो;
मागुं ते शी क्षमारे, नवलि कृति तणो, एक खूणो न ऊणो;
प्रीतिभावे निभावो, प्रति दिन प्रभुना, मानुंछुं उपकारो; वंदुं. ४
तारो तारो प्रभु हे, कर ग्रहि अमने, विश्वसिंधुथि तारो;
बीजो एके न आरो, तुजविण विभुरे, विघ्न सर्वे विदारो;
साचो विश्वास तारो, दिन जन मुजने, चित्तथी ना विसारो; वंदु. ५
भूलुं संसारमायाथकि भवपति हुं, भ्रान्तिमां पूर्ण डूलुं;
साचा मानी प्रपंचो, अतिशय मदथी, मूर्ख हुं खालि फूलुं;
साष्टांगे पाय लागी, प्रणिपत करुंछुं, वृत्ति मारी सुधारो; वंदुं. ६
शी शी शोभा वखाणुं, विभु तुज कृतिनी, शक्ति छेरे अपार;
मोटा मोटा महन्तो, अति श्रम करिने, थाकि पाम्या न पार;
अज्ञानी प्राणि हुं ते, तुज गुण महिमा-ना करुं शुं विचारो; वंदु. ७
अंतर्यामी अनादी, त्रिभुवनपतिने, श्रेष्ठ संपूज्य जाणुं;
एकान्ते एकचित्ते, अप्रतिम प्रभुनी, शुद्ध भक्ति वखाणुं;

अने तारी इच्छाविरुद्ध होय एवी अमारी सघळी मनकामनाओ, अने कृत्यनो समूळगो नाश कर. तथास्तु.



हिंडि ३.

जेनि शक्ति सकळ विश्व विषे व्यापी, नियम जेनो नव को सके उथापी;
महान्तऽपि मुनि सहु स्तुति करी विराम्या, पार तेनो परिपूर्ण कोन पाम्या १
जेनि इच्छा थकी जगत तंत्र चाले, दया दृष्टिकरी सृष्टि सकल पाळे;
सदा तेनुं शुभ स्तवन भजन गाउं, परमप्रेम थकी चरण शरण जाउं. २
जेनी सत्ता थकि सकल कार्य थाय, कळा जेनी नहि को थकी कळाय;
जेनि प्रीति प्राणि मात्रपर जणाय, तेनि करुणा थकि पाप सकल जाय. ३
पूण्य राशि परम देव निर्विकार, नित्य निर्मळ निःसंग निराकार;
दया भावतणो नाथ नथी पार, चरण पंकजे हुं वंदुं वार वार. ४
मने तमविण प्रभु अन्य कोण पाळे, पाप ताप कष्ट अन्य कोण टाळे;
सुणी नाथ तमे दासना विलाप, छेदि नांखो प्रभु षड्रिपु संताप. ५

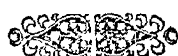


स्त्रग्धरा.

विश्वाधारा अपारा, अति विनय थकी, वंदुं पादारविंदे;
प्रेरो सद्धर्म नित्ते, नहि कदि फसुं हुं, वासना दुष्ट फंदे;
संसाराब्धिप्रवाहे, प्रभु कर धरिने, धर्म नौकाथि तारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथी तमने, कष्ट सर्वे निवारो. १

जेणे अनेक रचना रचि छे महान;
ते एक ब्रह्म अविकार अनादि देव,
पामी सदा शरण तेनि करुं हुं सेव. ३
जेनो महान महिमा नहि कोइ पाम्या,
तर्को करी ऋषि मुनी मनथी विराम्या;
ते एक नित्य अज ईश्वर लोकपाल,
बुद्धिप्रकाशक प्रभू नमुं सर्व काल. ४
छो नित्य मुक्त अति शुद्ध विशुद्ध ईश,
सर्वेथि पार परिपूर्ण प्रभु अधीश;
जीवो तणी कृति तमे सघळी निहाळो.
सत्ये रही पृथक सृष्टि समस्त पाळो. ५
आ मृत्युलोक महि छो प्रभु सत्य त्राता,
स्वर्गापवर्गसुखसन्मतिशान्तिदाता;
भक्तो प्रते प्रभु करो करुणा कृपाओ,
माङ्गल्य कार्य करवा अति शीघ्र थाओ. ६
विश्वेश भक्त जनना भवपाश कापो,
सामीप्यमुक्तिपदनो प्रभु लाभ आपो;
अंतःस्थ वृत्ति जिवनी तमने विदित,
पादारविंद प्रणमी धरुं ध्यान नित्य. ७
हे दीनवत्सल दयानिधि दीनबंधु,

श्रद्धाथी प्रार्थना जे, करुं प्रभु तमने, लक्षमां सर्व धारो; वंदुं. ८
प्रातर्मध्याह्न संध्या, अति शुभ समये, स्वामिने पाय लागुं;
वाञ्छा पूरो अमारी, करद्वय पसरी, नित्य भत्ये हुं मागुं;
मागुं पापक्षमा रे, क्षण प्रतिक्षण हुं, दुःख मारां विदारो; वंदुं. ९
आपो चारे[1] पदार्थो, प्रभु करि करुणा, पुत्र संतान पाळो;
पाळो सर्वे प्रजाने, सहु दीन जनना, दुःख दारिद्र्य टाळो;
धारुं आधार तारो, विनति करुं प्रभु, वाणी मारी स्विकारो; वंदुं. १०

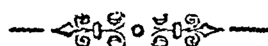


वसंततिलका.

जेने न जाणि सकशे मन इंद्रि धर्म,
जेने न पामि शकशे गुण देहकर्म;
एवा परात्पर प्रभु अति शक्तिमान,
पादारविंद नमि नित्य धरुं हुं ध्यान. १
जे पूर्ण ईश्वर प्रभू निजशक्तियोगे,
उत्पन्न विश्व करि ते थकि छे वियोगे;
जीवो तणी गति कृति चितमां धरे छे,
भक्तोनुं रक्षण कृपा थकि ते करे छे. २
जेना बले अखिल विश्व विराजमान,

१ धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार.

नहि नहि नहि कोई, नाथ वेली अमारो,
कर ग्रहि अमने आ, विश्वसिंधूथी तारो. २



गायन.

भैरव तथा सर्व राग.

पद.

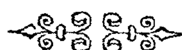
प्रभु छो अति दयाल, दीनजनप्रतिपाल,
शरणे तमारे अमे, भवसिंधु तारो;
करो सर्व रूडां काज, सेवकनी राखो लाज,
अवगुण अपराध, लक्षमां न धारो. प्रभु०
भक्तनो समाज आज, मळीने महाधिराज,
विनति करिये प्रभु, ते तमे स्वीकारो;
कृपा करी कर ग्रहो, अवगुण नव लहो,
चित्तना शमावी क्लेश, शान्तिने वधारो. प्रभु० १

पद.

बिहाग.

भवपति संकट सर्व हरो.
अपराधो अतिशय में कीधा, अनुग्रह पूर्ण करो. भवपति० १
अनन्य भावथी राखुं तमारो, आश्रय एक खरो. भवपति० २

कारुण्यमूर्ति तमने स्मरि नित्य वंदुं;
वंदी करुं स्मरण हुं उपकार तारा,
त्राता तमे भव विषे प्रभु सत्य मारा. ८
कोट्यावधि प्रतिदिने अपराध थाय,
मागुं क्षमा प्रभु रहो अमने सहाय;
आधार आश्रय कृपानिधि सत्य तारो,
संसारसिंधुभयथी प्रभु नाथ तारो. ९
एकाग्र चित्त थकि ध्यान धरुं तमारुं,
कल्याण मंगल करो सघळुं अमारुं;
साष्टांग नाथ तमने करिये प्रणाम,
पूरा करो प्रभु तमे शुभ सर्व काम. १०



मालिनी.

परम प्रभु तमारी, छे कलाओ अपार,
यश गुण महिमाना, कोइ पाम्या न पार;
स्तवन करि अमे आ, प्रार्थनाओ उचारी,
विहित विभु हशे जे, तेज लेशो स्विकारी.
शरण राह तमारे, वंदिये वारवार,
प्रभु अति करुणाना, मानिये उपकार;

नहि नहि नहि कोई, नाथ वेली अमारो,
कर ग्रहि अमने आ, विश्वसिंधूथी तारो. २

गायन.

भैरव तथा सर्व राग.

पद.

प्रभु छो अति दयाल, दीनजनप्रतिपाल,
शरणे तमारे अमे, भवसिंधु तारो;
करो सर्व रूडां काज, सेवकनी राखो लाज,
अवगुण अपराध, लक्षमां न धारो. प्रभु०
भक्तनो समाज आज, मळीने महाधिराज,
विनति करिये प्रभु, ते तमे स्वीकारो;
कृपा करी कर ग्रहो, अवगुण नव लहो,
चित्तना शमावी क्लेश, शान्तिने वधारो. प्रभु० १

पद.

बिहाग.

भवपति संकट सर्व हरो.
अपराधो अतिशय में कीधा, अनुग्रह पूर्ण करो. भवपति० १
अनन्य भावथी राखुं तमारो, आश्रय एक खरो. भवपति० २

कर जोडी हुं विनति करुं छुं, प्रभु ते चित्त धरो. भवपति० ३
करुणादृष्टिथी मुज हृदये, प्रेमल भक्ति भरो. भवपति० ४

पद.

बिहाग, ताल, दीपचंदी.

शरणागतने निभावो, प्रभु सर्व दोष शमावो;
कृतियो न लक्षमां लावो, प्रभु सर्व दोष शमावो.
विनय थकी विनति अमे करिये, सन्मति नित्य बतावो. प्रभु सर्व० १
जगदीश्वर जगवंद्य दयाला, दुःख संकटथी बचावो. प्रभु सर्व० २
दुष्ट विकारो तणी जालोमां, विभु नव अमने फसावो. प्रभु सर्व० ३
सदा सदाचरणमां अमारी, वृत्ति विशेष रखावो. प्रभु सर्व० ४
अवलंबन आधार तमारो, सद्धर्म कर्म करावो. प्रभु सर्व० ५
प्रतिपालन प्रभु नित्य करो छो, ते उपकार स्मरावो. प्रभु सर्व० ६
कृपाघना कर ग्रहीने अमारां, किल्बिष सर्व हठावो. प्रभु सर्व० ७
भक्ति थकी भगवंत अमारुं, चित्त कदी न डगावो. प्रभु सर्व० ८
क्षमा करो अपराध अमारा, उत्तम मार्गे चढावो. प्रभु सर्व० ९

आरति.

जयदेव जयदेव जय करुणासिंधु, जय करुणासिंधु;
करजोडी प्रभु तारे (२), चरणे नित्य वंदुं. जय देव० ॥१॥
तत् सत् ब्रह्म महेश, मुक्तितणा दाता(२);

व्यापि रहो सत्तार्थी(२), विभु सविता धाता. जय देव० ॥२॥
प्रात समय परमेश, प्रभुपदने वंदुं(२);
सत्कर्मो करवानो(२), विधि हुं आरंभु. जय देव० ॥३॥
सायंकाल महेश, सकल क्रिया मारी(२);
तुज चरणे आर्पीने(२), मागुं कृपा तारी. जय देव० ॥४॥
सर्वात्मा सर्वेश, सुखशांति आपो(२);
कृपा करी करुणानिधि(२), कष्ट सकल कापो. जय देव० ॥५॥
कीधा अति उपकार, वळि नित्ये करशो(२);
दोष दयानिधि मारा(२), चितमां नव धरशो. जय देव० ॥६॥
अवलंबन आधार, सत्य प्रभु तारो(२);
शरणागत सेवकने(२), भव थकि उद्धारो. जय देव० ॥७॥
अभिवंदन करि नाथ, ध्यान चिते धरिये(२);
प्रेमतणी पुष्पांजलि(२), चरणार्पण करिये. जय देव० ॥८॥

अंक ४ थो.

भुजंगी.

अहो त्रिभ्वना देव सर्वज्ञ सत्य, किधुं छे तमे आ बधुं सृष्टिकृत्य;
त्रिलोके तमारा प्रकाशे प्रतापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. १

अतीशे तमारुं प्रभू छे महत्त्व, सृज्यां छे महाशक्तिथी सर्व तत्व;
भूमी व्योम वायू अने तेज आपो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. २
तमारी स्तुती वेद शास्त्रे वखाणी, विरामी मुनीओ तणी वृत्तिवाणी;
जगाधीश तारा गुणो छे अमापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ३
पराभक्तिथी प्रार्थना वंदनाओ, कृपाथी स्विकारी तमे हाथ साहो;
करो नाथ मारां क्षमा सर्व पापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ४
अमे मंदबुद्धी अती अल्प प्राणी, कृतीओ नथी तुं थकीरे अजाणी;
विना तुं सुणे को अमारा विलापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ५
कृपानाथ दोषो न जोशो कदापि, अमे पाप कर्मो करीए तथापि;
अमारां बधां दुःख दारिद्र्य कापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ६
महाकष्टमां धैर्य धाता धरावो, सदा सर्वदा कार्य रूडां करावो;
निवारो त्रिवीधी तणा सर्व तापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ७
तमे छो प्रभू अन्नदाता अमारा, तमे छो प्रभू सर्वथी श्रेष्ठ सारा;
तमे छो अमारा प्रभू मायबापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ८
सदा वंदना आपनेछे अमारी, तमे प्रेमथी ल्यो विनंति स्विकारी;
सदा दासने सद्गती नीति आपो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ९



हे जगदीश्वर ! तारुं स्वरूप माराथी कळी सकातुं नथी. तुं महाशक्तिमान्, परमपवित्र, अने दयावान् छुं. आ वेला हुं तने नमस्कार करी शांत मनथी तारा उपकारनुं स्मरण मनमां

राखी तारी प्रार्थना करुं छुं. हुं केवल रंक, अशक्त, पापी प्राणी छुं, संसारी प्रपंच, तथा विकारोना पाशमां गुंथायलो छुं; तारी शुद्ध उपासना माराथी थई सकती नथी. सवार थतुं, सांज पडी, ए रीते घटमाल चाली जायछे, माराथी तने सारुं लागे एवुं कांइ कार्य थतु नथी, माटे हे विश्वोद्धारक, विश्वपालक पिता ! तारा आगळ केवळ लज्जायमान थई तने साष्टांग दंडवत् वंदन करीने कहुछुं के, तुं मारा अपराध उपर विचार नहि करतां मारुं नित्य पालन पोषण तथा रक्षण करेछे, ए तारो मारा उपर घणो उपकार तथा प्रीतिभाव छे. मारां पातक जे क्षमा करवा जेवां हशे ते क्षमा करीश, ए तारा दयालु स्वभावनो मने पूरो विश्वास छे. जे पाप में जाणी जोइने कीधां हशे ते तुं क्षमा करवानो नथी एवो मने भय लागेछे. पण हे कृपालु प्रभु ! तुं मारा शरीरनी तथा मननी नबळाइ जाणे छे; ए नबळाइने लीधे थयेला दोष तुं क्षमा करीश, अने ते फरीथी न थाय एवी मने बुद्धि आपीश.

मने खरेखरो विश्वास छे के, तारी खरी भक्ति तथा शुद्ध उपासना उपर मारो लक्ष रहेशे, अने नित्य तारी प्रार्थना हुं करीश तो माराथी कुकर्मथी दूर रहेवाशे; कारण के, तारी भक्ति तथा उपासनामांज ए फल रहेलुं छे. माटे हे दीनदयाल

परमेश्वर ! तने महा समर्थ, अने सर्व प्राणीनो तारनार समजी-ने, खरा प्रेमथी तारे चरणे मारुं मस्तक नमावी प्रार्थना करुं छुं, के दुष्ट नठारां कर्मोथी मारुं मन खशेडी तारी भक्ति तथा उपासना करुं, अने सदाचरणथी चालुं, एवी मने तुं सदा चेत-वणी आपी मारुं रक्षण कर. मारुं कर्तव्य कर्म करवामां गमे तेवी विपत्ति के दुःख पडे तो ते सहन करवानो मने शक्ति, उत्साह, अने धैर्य आपजे.

हे परम कृपालु ईश्वर ! तुं सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, तथा सर्वनो नियंता छुं. तारा प्रकाशथी आ सर्व जगत् प्रका-शमान छे. तारुं रूप हुं मारां चक्षुवडे देखी सकतो नथी; पण आ सृष्टिनी सुंदर रचना, तथा आकाशमां ग्रह, ताराओनी शोभा तथा तेना नियमो जोवाथी मारा मनमां दृढ निश्चय थाय छे के तुं आ जगतनो कर्ता छुं, तारां सरजेलां प्राणीओ उपर करुणा करवी ए तारो स्वभाविक गुण छे. तें मने विवे-कबुद्धि आपीछे ते वडे विचार करुं छुं तो मने एज प्रेरणा थाय छे के, तें आ संसारमां मने तारी भक्ति तथा मारा स्वजाति मनुष्य प्राणियो उपर प्रीति राखवाने उत्पन्न कर्यो छे, अने ए माटे मारुं मुख्य काम करवामां हुं आलस्य करीश तो हुं तारो खरो सेवक गणाइश नहि, तथा तारी प्रीतिने पात्र थइश

नहि. तारी प्रीति मेळववाने माटे मारे तारी इच्छाने अवश्य आधीन रहेवुं जोइये, ने तेम न रहुं तो मने आ लोकमां तथा परलोकमां दुःख थाय तेमां तारो वांक काढवानो नथी. मारुं कर्म मारे भोगववुंज जोइये. आ विचार मारा मनमां दृढ थवाने तारी सहायतानी जरूर छे, माटे हे करुणामय प्रभु ! तने वारंवार प्रणाम करीने कहुंछुं के कृपादृष्टि करीने मने एवी सुबुद्धि आप के हुं कोइ उपर वैरभाव राखुं नहि, बीजानी अदेखाइ करुं नहि, कोइनुं द्रव्य लेई लउं नहि, कोइनो घात करुं नहि, मारा मनुष्य भाईओ उपर समान भाव राखी तेओने सुखी करवामां तन मन अने धनथी श्रम करुं, अने सदाकाळ नीतिना नियम पाळुं. आ मारी विनति हे परमकृपाळु पिता ! तुं स्वीकारजे. शांतिः शांतिः शांतिः



दिंडि ४.

गाउं आनंदे शुभ तमारुं नाम, तमे सरज्युं आ सकल विश्व धाम;
नहिं पामे प्रभुनी दया विराम. करुं तमने शतवार हुं प्रणाम. १
अकळ कळना नव को थकी कळाय, माप प्रभुनुं नव को थकी मपाय;
महाराज तमे विश्वमां विराजो, अतुल शक्ति थकी सृष्टि विषे गाजो. २
बेउ हाथ जोडि पाय तने लागुं, क्षमा पाप कर्मनी हुं सदा मागुं;

दोष कोश दयादृष्टिथी शमावो, कृपावारि तमे *अविरत वरसावो. ३
तमे सच्चिद्‌घन स्वामि छो समर्थ, पुरो सर्व रुडा भक्तना मनोर्थ;
ध्यान मंगल सुजहृदय विषे धारुं, करो नाथ परित्राण सदा मारुं. ४
विनय भाव थकी वंदुं विश्वपाल, प्रणमि अर्पुं परम प्रेम पुष्प माल;
नम्र विनति मारी सर्व मानी लेशो, जगाधीश शुभाशीष सदा देशो. ५

ललित.

सकल विश्वना, नाथरे तमे, शरण आविने, वंदिये अमे;
मनुष अल्प ते, शुं करे स्तुति, गहन तारि छे, रे प्रभु गति. १
नियम तें प्रभु, जे किधा हशे, तदनुसार तो, ते क्रिया थशे;
नहि कदी फरे, एकरे रती, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. २
जिव जनो घणा, यतनने करे, तदपि आदर्युं, तारुं ना फरे;
अकल छे प्रभु, तारि तो कृति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ३
नमि नमि अमे, विश्वनाथने, विनविये सदा, साततातने;
प्रभु कला कळा-ती नकी नथी, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ४
क्षणज मात्रमां, शुं थशे अहिं, दिन असे जिवो, जाणिये नहि;
अति तमारि छे, रे चमत्कृति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ५
प्रभु मनोरथो, धारिये घणा, नहि पुरा थशे, रे कृपाविना;
अनुग्रहो करो, राखिने प्रिति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ६

---

* निरंतर.

નિયમ નાથ છે, સત્ય તાહરો, જનમ જે થયો, જાય તે ખરો;
સબલ સત્ય છો, સર્વના પતિ, ગહન તારિ છે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૭
અવસરે તમે, આવિ સન્નિધે, શુભ સહાય તો, રો' દયાનિધે;
પતિતપાવના, પ્રેર સન્મતિ, ગહન તારિ છે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૮
વિકટ પંથ છે, વિશ્વમાં ઘણો, સકલ આશરો, છે દયા તણો;
પ્રભુપદે સદા, રાખિયે રતિ, ગહન તારિ છે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૯
વિષયભોગમાં, લિપ્ત ના થવું, સતત શુદ્ધ સન્-માર્ગમાં જવું;
દુર કરો દયા-નાથ દુર્મતિ, ગહન તારિ છે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૧૦
પ્રભુ તને ગમે, તેજ થાયછે, જિવતણા શ્રમો, વ્યર્થ જાય છે;
દિન પ્રતે કરો, રે દયા અતિ, ગહન તારિછે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૧૧
દૃઢજનો કદી, ધૈર્ય ના મુકે, જનહિતાર્થનાં, કાર્ય ના ચુકે;
તુજ કૃપા થકી, થાય ના ક્ષતિ,ગહન તારિછે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૧૨
નિયમ તાહરા, જે વિધે હશે, સુખ દુખો ક્રમે, પ્રાપ્ત તો થશે;
વિપતિ સંકટે, દ્યો તમે ધૃતિ, ગહન તારિ છે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૧૩
ધન જુવાનીનો, વ્યર્થ ગર્વ છે તુજ કૃપા વિષે, અર્થ સર્વ છે;
શરણ રાખજો, આપિ સદ્ગતિ, ગહન તારિ છે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૧૪
પ્રણત પ્રાણિયો, પામશે અમે, હૃદયમાં સદા, ચિંતિયે તને,
પ્રભુ સુણો તમે, નમ્ર વીનતિ, ગહન તારિ છે, રે પ્રભૂ ગતિ. ૧૫

वसंततिलका.

हे ब्रह्म ईश जगदीश जगन्निवास,
पादारविंद नमि नाथ तने हु दास;
नित्ये निरंतर करुं स्तुति प्रार्थनाओ,
हे विश्वनाथ प्रभु नित्य प्रसन्न थाओ. १
तारा अपार महिमा नहि कोइ पामे,
वाणी सहीत मन योग सहू वि रमे;
तारा अभेद्य पदमां नहि कल्पनाओ, हे विश्वनाथ० २
तारी कृपा थकि वदे विभु मूक वाणी,
तारी कृपाथि गिरि पगु चढेज प्राणी;
तारी कृपाथि जगमां सघळी लिलाओ, हे विश्वनाथ० ३
मारां कुकर्म सघळां तमने विदीत,
विसार नाथ करवो नहि ए घटीत;
कारुण्यभावथि करो करुणा कृपाओ, हे विश्वनाथ० ४
लज्जा रहीज सघळी प्रभु हाथ तारे,
मारो निभाव करवो नहि नाथ भारे;
तारा प्रसादबळथी भयना अभावो, हे विश्वनाथ० ५
तुं नित्य सत्य ईश्वर सृष्टिपाळ,
बुद्धिप्रकाशक तने नमुं सर्व काल;
टाळो कृपा करि बधी दुरवासनाओ, हे विश्वनाथ० ६

जे जे अहीं बहु सुखो प्रभु प्राप्त थाय,
ते सत्य तारि सघळी करुणा जणाय;
सद्भक्तनी पुरि करो प्रभु वाञ्छनाओ, हे विश्वनाथ० ७
संसारमां सकल मंगल क्षेमदाता,
तारा विना नहि अहीं प्रभु अन्य त्राता;
भक्तो तणी दुर करो दुख आपदाओ, हे विश्वनाथ० ८
सृष्टिस्थितिप्रलयकारक लोकनाथ,
अल्पज्ञ प्राणि जननो ग्रहि नाथ हाथ;
प्रेमे करी प्रभु करो परिपालनाओ, हे विश्वनाथ० ९
विद्या विवेक मति संमति सर्व आपो,
संभाळ मारी करि संकट सर्व कापो;
द्यो धर्मकर्म करवा शुभ सूचनाओ, हे विश्वनाथ० १०
माता पिता प्रभुवरा अति दीन बाल,
एकाग्र चित्त थकि ध्यान धरुं त्रिकाल;
नित्ये प्रणाम करिने करुं याचनाओ, हे विश्वनाथ० ११
आधीन छुं प्रभु मने भयथी उगारो,
संकष्ट दुःख समये समिपे पधारो;
मागुं विनंति करि पाप तणी क्षमाओ, हे विश्वनाथ० १२
संपूर्ण प्रेम करिने उपकार कीधो,
आ मृत्युलोक महि मानवि देह दीधो;

राखो सदाचरणमां चितभावनाओ, हे विश्वनाथ० १३

हे भक्तवत्सल दयानिधि दीनदोषो,
क्रोधायमान थई ईश कदी न जोशो;
हुं दीन दास शरणागत निभावो, हे विश्वनाथ० १४

तारुं सदा स्मरण ध्यान करु हुं दास,
द्वारे उभो नव करो मुजने निराश;
पूरी करो प्रभु तमे मनकामनाओ, हे विश्वनाथ० १५

कर्तव्य कर्म जगमां रहि नाथ थाय,
सद्धर्म नीति नियमो सघळा पळाय;
ए शुद्ध तारि अति उत्तम अर्चनाओ, हे विश्वनाथ० १६

विश्वेश वंद्य विभु आश्रय सत्य मारो,
संसारसागर थकी प्रभु नाथ तारो;
साष्टांग नित्य तमने करुं वंदनाओ, हे विश्वनाथ० १७

शिखरिणी,

मनोर्थो माग्याछे, शुभ स्तुति तमारी करि अमे,
हशे जे जे रूडा, सफल करशो ते प्रभु तमे. २



गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.

मंगल छे नाम तारुं, मंगल छे धाम तारुं,
मंगल छे काम तारुं, त्रिभुवन नाथ तुं;
तुज पद छे वरद, कृतकर्मफलप्रद,
अव्यक्त अखंड एक, अकल अबाध तुं. मंगल छे०
एवो तुं प्रभु महान, सघळे विराजमान,
जाणी ले बधी अमारी, अंतरनी वात तुं;
अवगुण छे अगाध, गणती न थाय नाथ,
तरवुं छे तारे हाथ, प्रभु मात तात तुं. मंगल छे० १

पद.

काफी.

शरण तने भगवान्, प्रणमुं पाय पडीरे प्रभु; शरण०
वृथा गयो भवजन्म अमारो, नव राख्युं निज भान;
दास सदा जाणीने तारो, तारो भवथी निदान,
करि करुणाज वडीरे प्रभु, शरण तने० १

सगुण स्वरूपे गुप्त रह्याछो, अन्य नथी तुं समान;
नव जाण्युं महा ऋषि मुनियोए, तारुं निश्चल स्थान,
विरम्या नेति वदिरे प्रभु, शरण तने० २
किंचित् नथी हुं योग्य परंतु, मागुं छुं वरदान;
कर्तुमकर्तुम् अन्यथा कर्तुम्, मानीने बलवान्,
आवुं तुज द्वारे चढीरे प्रभु, शरण तने० ३
शरणागतनी लज्जा राखो, विश्वाधीश महान्;
मनवाञ्छितफल निश्चय आपो, हे प्रभु कृपानिधान,
अवसर आव्यो अडीरे प्रभु, शरण तने० ४
परमातमा परब्रह्म प्रभुनुं, गाउं शुभ गुणगान;
भक्ति परार्थी करुं हुं तमारा, ज्ञानामृतनुं पान,
सफली एज घडीरे प्रभु, शरण तने० ५

पद.

काफी.

तुज विण अन्य नहि प्रभु त्राता.
विनय थकी हुं विनति करुं छुं, विश्व तणा विभु धाता. तुज०१
सर्व ऋषि मुनि शुकसनकादिक, तुज महिमागुण गाता. तुज०२
दीनदयाळ तुज करुणा विण, कोण करे सुख शाता. तुज०३
आश्रय एक तमारो धारुं, सुख दुखना प्रभु ज्ञाता. तुज०४
साष्टांगे हुं वंदुं विभुने, परपदमंगलदाता. तुज०५

पद.

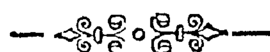
खमायची जिल्लो. दादरो.

अवगुण दोषो दयानिधि नव लहोरे;
धर्मनियम उल्लंघुं तथापि, प्रेमे करो परम अनुग्रहोरे. अवगुण० १
शरणागत आधीन तमारे, दास जाणी अमारो कर ग्रहोरे. अ० २
भक्त जन प्रभु परम कृपाथी, नव पामे संकट दुःसहोरे. अ० ३
हे भगवंत दीन जन उपर, दयादृष्टि तमारी नित्य रहोरे. अ० ४

आरति.

जयदेव जयदेव, जय जगदाधीशा जय जगदाधीशा;
प्रकृतिपरा परमेशा(२), प्रणमुं प्रभु ईशा. जयदेव० ॥१॥
साक्षि तमे सर्वत्र, सत्ता थकि व्यापो(२);
कृपाकरी सेवकने(२), मति निर्मळ आपो. जयदेव० ॥२॥
नमि नमि नमि नमि नाथ, पाय तने लागुं(२);
प्रभु आपो पुरुषार्थो(२), ए शुभ वर मागुं. जयदेव० ॥३॥
मुज अपराध अगाध, नितमां नव धरशो(२);
कृपाघना करुणा करि(२), पाप क्षमा करशो. जयदेव० ॥४॥
प्रभु छो परम कृपाळ, कार्य सफळ करशो(२);
संरक्षण करि मारां(२), कष्ट सकळ हरशो. जयदेव० ॥५॥

परमेश्वर अस्तित्व, सत्य करी मानुं(२);
श्रद्धा भक्ति उपासन(२), शुभ अर्चन जाणुं. जयदेव० ॥६॥
पराभक्ति प्रभु ध्यान, हृदय विषे धारी(२);
अभिवंदनपूर्वक हुं(२), करुं अर्चा तारी. जयदेव० ॥७॥
ए उत्तम उपचार, अर्पुं तुज चरणे(२);
अंतर्यागथि अर्चन(२), करि रहुं प्रभु शरणे. जयदेव० ॥८॥



अंक ६ मो.



ललित.

प्रभु परात्परा, पूर्णकामदा, प्रणमुं हुं तने, प्रेमथी सदा;
विनति जे करुं, चित्तमां धरो, प्रणत प्राणिनां, पापने हरो. १
परम ब्रह्मनुं, ध्यान हुं धरुं, परम भक्तिथी, प्रार्थना करुं;
बहु बलिष्ठछे, शक्ति ताहरी, नव कळी सके, वृत्ति माहरी. २
अखिल विश्वना, नाथ नित्य छो, सगुण रूपथीं, पूर्ण सत्य छो;
अकल छे कला, सृष्टिसर्गनी, नहि तहीं गती, जीव वर्गनी. ३
दुरित कर्म तो, में कियां बहु, तदपि आपने आश्रये रहुं;
अवगुणो तणा, दोष ना लहो, करुणसागरा, ए अनुग्रहो. ४

भवनिमग्न हुं, भ्रान्तिमां भमुं, विषयमोहना, छंदमां रमुं;
अति दया करी, हाथ झालशो, त्रिविधदुःख सं-ताप टाळशो. ५
दिनदयाल हे, हे कृपाघना, कर प्रसारिने, याचुं याचना;
प्रभु सहायता, संकटे करो, तुज कृपातणो, आशरो खरो. ६
शरण छुं प्रभू, प्रार्थना करूं, विनय भावथी, वाक्य उच्चरुं;
दुरित कर्मथी, नित्य हुं डरूं, विहित धर्ममां, सत्य संचरूं. ७
विषय वासना-मां हुं ना फसुं, सुजन संगती-मां जई वसुं;
विमल ए मती, मागुं हुं विभु, परम प्रेमथी, प्रेरशो प्रभु. ८
नमि नमी कहुं, नित्य नाथने, प्रभु उगारि ल्यो, भक्त साथने;
सकल जीवना, दुःखहारक, प्रभु विना नहीं, अन्य तारक. ९
उभय हस्त हुं, जोडिने उभो, अभय दान द्यो, रे मने विभो;
प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो, समिपमुक्तिनो, लाभ आपशो. १०
विनति सांभळो, विश्वना धणी, विभुस्वभावमां, छे दया घणी;
सदय चित्त जो, राखशो सदा, नहि कदी प्रभु, पामुं आपदा. ११
विदित आपने, सर्व मर्मरे, प्रभु क्षमा करो, दुष्ट कर्मरे;
सकल कर्मना, साक्षि चिद्घना, पुरि करो प्रभू, भक्तकामना. १२

हे विश्वेश्वर! विश्वव्यापक! हुं आ वेला तने प्रेमपूर्वक प्रणाम करी मारा चितमां तारुं ध्यान धरुंछुं; तें मारा उपर दया तथा उपकारो कीधा छे तेनुं स्मरण करुंछुं. तुं सर्वज्ञ छुं तुं स-

वेनो पिता छुं, हुं तारो नम्र, दीन, अने अशक्त बालक अनेक दोषोथी भरेलो छुं. छोकरांना दोष उपर मातपिता लक्ष आपतां नथी अने तेनुं कल्याण तथा सुख चाहे छे; ए न्यायथी तुं तारा सरजावेला जीवोनुं पालन करेछे. हे करूणामय प्रभु! बे हाथ जोडीने तने हुं नमस्कार करी मागुंछुं के हुं तने कदि भूली जाउं नहि एवी बुद्धि मने आपजे, अने सदा सारे मार्गे चढावजे. तें मने विवेकबुद्धि आपी छे, पण मारुं अशक्तपणुं केटलुं छे ते तुं जाणे छे; तारी कृपा तथा सहायता विना माराथी कांइ पण सत्कार्य थइ सकवानुं नथी. माटे तुं वारंवार सारां काम करवानी मने प्रेरणा करजे. तुं न्यायी छे तेनी साथे दयालु छे, तेथी मारा नाना अपराधोनी क्षमा करीश एवो मने विश्वास छे. तारा विना हुं कोने शरणे जाउं? तारा विना हुं कोनी पासे माफ मागुं? तुं मने पाळनार तथा तारनार छुं, माटे हे भक्तवत्सल भगवान्! मारी दीन वाणी सांभळी हुं आ जगतमां रहुं त्यां सुधी तारा ध्यान, भजन तथा रूडां काममां मन रहे एवो मने रस्तो बतावी मारुं संरक्षण करीने हे विश्वनाथ! मारो उद्धार करजे.

छेल्ले तने साष्टांग नमस्कार करी कहुंछुं के मने अनीति तथा दुराचारथी सदा दूर राखजे.

—꧁꧂—

ठिंडि ५.

परम प्रेम थकी प्रभु पदे हुं वंदुं, पराभक्ति विषे नित्य हुं आनंदुं;
दीन तारक दिननाथ दीनबंधु, सदा दर्शन द्यो देव दयासिंधु. १
दिसे दृश्य वस्तु सर्व नाशवान, तमे सत्य शुद्ध पूर्ण शक्तिमान;
सदाकाल तमे शरण मने राखो, नीतियुक्त भक्तिपंथ मने दाखो. २
मात तात तमे भ्रात तमे मारा, तमे सत्य एक सर्व थकी सारा;
प्रभु इच्छा थकि सर्व कार्य थाय, कृपा वीण मनुप यत्न व्यर्थ जाय. ३
जगत सूत्र सर्व हाथ छे तमारे, नहीं नाथ कदी भक्तने विसारे;
अल्प दोप जीवना नही विचारे, पाप ताप दयादृष्टिथी निवारे. ४
प्रणमि प्रेमभक्तिथी करुं प्रणाम, तमे पूर्ण करो सर्व योग्य काम;
सत्य धर्म ज्ञान नाथ मने आपो, वरद हस्त मूज शीष तमे थापो. ५



वसंततिलका.

हे विश्ववंद्य जगदीश्वर दीननाथ,
शक्ती तमारि सघळी सबली अगाध,
व्यापी रही जगतना जिव तारवाने;
भक्तोनुं ज्ञान बहु मान वधारवाने. १
एवा महान बळवान महेश्वराने,
विज्ञानवान भगवान भवेश्वराने;

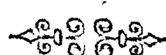
पाये पडी नमि नमी स्तुति हुं करुंछुं,
प्रीत्यर्थ पूर्ण परब्रह्म पदे नमुंछुं. २
जीवो सृज्या जगतमां प्रभु हेतथी तें,
भूल्या भमे भव विषे निज कर्मथी ते;
तेमां हुं दोष करि पेट भरी रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ३
संभाळ लीधि अति तें करुणा कृपाथी,
पृथ्वी विषे वशि रहुं प्रभुनी दयाथी;
दोषो अनेक वळि दुष्कृतियो करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ४
विश्वेश संकट सहस्र अनंत काप्यां,
संहारि सर्व भयने सुख नित्य आप्यां;
मिथ्या प्रपंच मद मोह विषे पडुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ५
माया महान मदथी नथि नीज भान,
अज्ञान कापि मति शुद्ध करो निदान;
बीजो न आश्रय धरुं अति दीन हुं छुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ६
तारा अनुग्रह थकी वदुंछुं हुं वाणी,
तारा अनुग्रह थकी गति पाद पाणि;

तारा अनुग्रह थकी जगमां वसुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ७
जो ना करो प्रभु कृपा क्षणमात्र एक,
कार्यो न थाय मुजथी तृणमात्र छेक;
थाओ सहाय शरणागत थै रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ८
हे विश्वपालक विभू अज तुं समर्थ,
तारी दयाथि सरशे सघळाज अर्थ;
प्रेमे करी परम इष्ट तने भजुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ९
आ सद्य काल वळि सर्व थते ज काले
धारुं सदा स्मरण तारुं समस्त काले;
तारो अनुग्रह दया कदि ना भुलुं हुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १०
तारा अनुग्रह वडे वाडि देह धारुं,
कर्तव्यधर्म वळि ज्ञान रुडुं अमारुं;
आपो सुनीति तमने विनती करुंछुं,
तारो तमे मने प्रभु चरणे नमुंछुं. ११
सद्धर्मकर्म करतां चित तो चळेछे,
अज्ञानथी विषयभोग विषे मळेछे;

आपो प्रभू सुमति दुर्गतिथी डरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १२
हे पूज्यपाद परमेश्वर हीतकारी,
धारो चिते धरि दया विनती अमारी;
राखो मने हृदयमां स्मरणे चहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १३
पापो किधां प्रभु अमे अगण्यां अपार,
लोभी थई न किधुं कर्म कदुं लगार;
सर्वे विदीत तुजने भवमां भमुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १४
जाणो समस्त अपराध अगाध मारो,
आपो क्षमा घटित धर्म खरो तमारो;
साष्टांग पाय नमि नाथ तने कहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १५
कामादियुक्त मनमां विचरे विकार,
ते शुद्ध स्वच्छ थइने सुधरे विचार;
मागुं हुं भक्ति परब्रह्म तने स्मरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १६
हे विश्वदेव करुं सेव सदा तमारी,
द्यो धर्मकर्म करवा मति निर्विकारी;

राखो समीप प्रभु प्रार्थन हुं करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १७
स्वामी समर्थ जिव सर्व उगारवाने,
तो शो प्रयास निजदासज तारवाने;
माटे महेश परमेश पदे पडुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १८
अत्यंत लाभ जगमां जगदीश थाय,
तोए न तृप्ति कदि सर्वथकी थमाय;
धारो दया प्रभु हुं द्वार उभो रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १९
जे जे भलुं भव विषे भवनाथ देखुं,
ते ते विषे परम प्रेरक तुंज प्रेखुं;
चिद्रूप व्याप्त परिपूर्ण मने धरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. २०
संसारपंथ चरतां चितमां हुं धारुं,
तारुं स्वरूप सुखरूप अनूप सारुं;
थाओ सहाय प्रभु ए विनती करुंछुं,
तारो प्रभू शरण हुं चरणे नमुंछुं. २१
संबंधि होय जगमां वळि मित्र मारा,
तेने मने सुख हजो सुफळोज सारां;

सर्वेनुं मंगल सदा शुभ चिंतवुंछुं,
तारो प्रभू शरण छं चरणे नमुंछुं. २२
भावे थकी भवपतीपदने पुजे जे,
चित्ते चिदात्म धरि ध्यान प्रभू भजे जे;
पूरे मनोर्थ प्रभु सत्य करी कहुंछुं,
तारो मने शरण छुं चरणे नमुंछुं. २३
सौभाग्य तेनुं शिवरूप सदैव धारे,
दुर्भाग्य तेनुं चितथी प्रभुने विसारे;
विश्वेश मंगलपदे प्रणम्येथि जाय,
दोपो अशेष वळि निर्मल चित्त थाय. २४
आलस्यवृत्ति वळि निर्दयताविकार,
चित्ते रह्या बहुज दुर्गुणना विचार;
माटे कृपाथि मन शुद्ध करो महेश,
पाये पडुं प्रभु तने वदुं शुं विशेष. २५



भुजंगी.

जगन्नाथ हे देव हे स्वामि साचा, नमुं हाथ जोडी वदुं नम्र वाचा;
दया लावि चित्ते दयादान आपो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. १

महा मोहना पाशमां हुं पड्योछुं, महाकालने मूख आवी अड्योछुं;
महापापना पुंज छे रे अमापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. २
प्रभूपादमां राखिये पूर्ण भाव, करो प्राणदाता अमारो निभाव;
तमारी कृपाथी टळे सर्व पापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ३
तमे कष्ट कोट्यावधीनांज काप्यां,पुरो प्रेम आणी कृपादान आप्यां;
तमारी कृपाथी वधेछे प्रतापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ४
अरे मोटि आशा चिते तारि राखुं,बहू दीनथै दीन वाणी हुं भाखुं;
कदी ना जुवो में किधां सर्व पापो,प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ५
तमे विश्वकर्त्ता तमे विश्वभर्त्ता, दयालु प्रभू दुःखिना दुःखहर्ता;
तमे शक्त संहारवा सर्व शापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ६
मने रंकने रक्षणो सर्व दाता,महासिंधुमां छो तमे सत्य त्राता;
उगारो सदा सद्गती आप आपो,प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ७
सदा सर्वदा ओथ आखी तमारी, महा कष्टमां मूकशो ना विसारी;
विना तुं न जाणे अमारा विलापो,प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ८
जुवो जो तमे कर्म मारांज सामुं, अती पापि हुं केम रे प्रेम पामुं;
किधा में नथी धर्म सत्कर्म जापो,प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ९
प्रभूरे प्रभूरे प्रभूरे प्रभूरे, नमीने नमीने नमीने कहुंरे;
नथी अन्य त्राता क्षमा आप आपो,प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. १०
अति प्रेमना भावथी चिंतवुंछुं, अती नम्र थै नम्र वाक्यो वदुंछुं;
नथी आशरो आशरो एक सत्य, प्रभू हुं नमुं हु नमुं नित्य नित्य. ११

अतीदीन जीवोनि संभाळ लीधी, अति प्रेम आणी कृपादृष्टि कीधी;
मने तारवाने क्षमावंत थाओ, दयादृष्टिथी दीननो हाथ साहो. १२



अनुष्टुप्.

कृपालु छो जगन्नाथ, जीवना प्रतिपालक;
शरणे राखशो स्वामी, जाणीने दीन बालक. १
इच्छा आशा अमारी जे, हती ते आपने कही;
केइ तेमां हशे योग्य, ते अमे जाणिये नहि. २
मनोर्थो जे हशे सारा, ते तमे नाथ आपशो;
कृपादृष्टि करी नाथ, किल्विषो सर्व कापशो. ३
सत्य आधार छे नाथ, अमारे आपनो खरो;
सुतवात्सल्यभावेथी, कृपासिंधु कृपा करो. ४

गायन

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

जगदीश छो अनुप, करुणामयस्वरूप,
श्रवण करो अमारी, विनति कृपा करी;
सात्विकगुण प्रधान, धारो छो दयानिधान,
भक्तपर छे तमारि, दृष्टि तो दयाभरी. जगदीश०

भासे जे वधी विराट, प्रभु छे तमारो ठाट,
सघळो ए सत्य घाट, राख्यो सत्ताथी धरी;
तमे छो प्रभु वरिष्ठ, सत्ता छे अति बलिष्ठ,
अमारां वधां अरिष्ट, लेजो संहरी हरि. जगदीश० १

पद.

विहाग त्रिताल.

कृपानिधि पूर्ण मनकाम करो.
अति दुर्गम दुस्तर भवपंथ, भक्तने नथी अघरो. कृपानिधि० १
प्रभुचिंतन शुभपदवंदनथी, मंद सुज मति सुधरो. कृपानिधि० २
सदयहृदय करुणामयमूर्ति, चित्तमां नित्य ठरो. कृपानिधि० ३
दीनवत्सल दीनबंधु दयाल, दुर्मति सर्व हरो. कृपानिधि० ४

पद.

खमायची जिल्लो. त्रिताल, पंजाबी.

स्तवन शुभ तारुं करुं रे, प्रभु अल्पमति अतिदीन. स्तवन शुभ०
प्रभु तारी प्रभूताई, त्रिभुवनमां गवाई,
सदा रहुं हुं तने आधीन, स्तवन शुभ तारुं करुंरे. १

पद.

सोरठ जिल्लो. त्रिताल.

नाथ तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे;
जगन्नाथ जगतात प्रभु, तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे. नाथ तारे०

सत्य सबल सर्वांतर्यामी, नित्य निरंतर प्रभु निष्कामी;
करुणामय मंगलमूर्ति सदा, तारुं स्मरण हृदय धरुंरे. नाथ तारे० ३

आरति

जयदेव जयदेव जय मंगलकारी जय मंगलकारी;
अति करुणा विस्तारी(२), प्रभु छो उपकारी. जयदेव० १
षड्गुणयुत भगवन्, भक्ति सदा आपो(२);
करुणा करि सेवकनां(२), भय संकट कापो. जयदेव० २
शुभ मंगल गुण गाय, भक्त जनो तारा(२);
अविचल शुभ पद आपो(२), विभु विश्वोद्धारा. जयदेव० ३
कोट्यावधि अपराध, प्रभु निश दिन देखो(२);
दया करी दिनदोषो(२), चितमां नव लेखो. जयदेव० ४
सकल विश्वमां व्याप्त, प्रभु सत्ता भासे(२);
सुंदर नियमो निरखी(२), चित नित्य उल्लासे. जयदेव० ५
प्रेम पुष्पनी माल, प्रभुने शुभ चरणे(२);
अर्पण करि दृढ श्रद्धा(२), थकि रहिये शरणे. जयदेव० ६
दुराचारथी दूर, प्रभु राखो अमने(२);
दिव्य पिता प्रभु करिये(२), विनति अमे तमने. जयदेव० ७
मळि मंडळि महाराज, अभिनंदन करिये(२);
सदा पराभक्ति करी(२), स्मरण हृदय धरिये. जयदेव० ८

अंक ६ ठो.

भुजंगी.

परब्रह्म विश्वेश व्यापी परेश, परात्मा प्रभू सर्वसाक्षी महेश;
कळातीनथी शक्ति तारी अगाध, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १
तमारा थकी सृष्टि विस्तार पामी, तमे पूर्ण रूपे रह्याछो विरामी;
जगत्तंत्र सर्वे तमारेज हाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. २
नियंता तमे नाथ सर्वत्र भासो, सहु स्थानमां पूर्णताथी प्रकाशो;
अखंडीत आनंदरूपी अबाध, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ३
किधा सृष्टिना वर्ग आश्चर्यकारी, नथी चालती त्यां मति तो अमारी;
अमारूं करो रक्षणो दीन रात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ४
खगोळे ग्रहो मंडलो सूर्य चंद्र, विराजी रह्युंछे रुडुं राशियंत्र;
रच्योछे तमे सर्व ए सत्य घाट, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ५
तमारुं अधिष्ठान छे शुद्ध सत्य, थयुंछे तमारा थकी सृष्टिकृत्य;
तमे छो स्वयंभू अनादी अजात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ६
त्रिलोके तमारा प्रकाशे प्रतापो, सदा सर्वदा चित्तने शान्ति आपो;
विभू विश्वव्यापी विदारो विषाद, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ७
तमे शुद्धचैतन्यरूपे विराजो, सदा काल सर्वत्र सत्ताथि गाजो;
तमे सर्व जाणो प्रभू गुप्त वात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ८

अमारे खरो आशरो छे तमारो, कृपानाथ नित्ये करो उपकारो;
प्रभू सर्वना छो तमे मात तात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ९
सुणो प्रेमथी सर्वदा प्रार्थनाओ, करो पूर्ण भक्तोतणी कामनाओ;
प्रभूपादपद्मे सदा जोडि हाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १०
अमारी स्विकारो सदा वंदनाओ, कृपाथी करो सर्व पापक्षमाओ;
सदा सन्मति प्रेरशो प्राणनाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ११
करे जे पराभक्तिथी प्रार्थनाओ, पुरी थाय तेनी सहू वाञ्छनाओ;
न पामे प्रभूधामथी ते निपात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १२
अमे नम्र थै वंदिये वारवार, विनंती अमारी करो अंगिकार;
अमे मानिये प्रेमथी धन्यवाद, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १३



"यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति" तमनाद्यनंतमेकं परमेश्वरं प्रणतोस्मि.

जे थकी आ सृष्टि उत्पन्न थईछे, जेणे करीने जीवछे, अंते जेनी पासे जायछे, अने जेने पामेछे एवा अनादि अनंत एक परमेश्वरने हुं प्रणाम करुंछुं.

हे प्रभु ! तमे आ वेला मारी पासे विराजमान छो, हुं अति नम्रभावथी तमारा समीप आवी प्रार्थना करुंछुं ते कृपा करीने श्रवण करो. तमे निरंजन निराकार सर्वव्यापी सर्वनियंता सर्व कर्मना साक्षी छो. तमे मारुं रक्षण करो, मने पापथी वेगळो रा-

ખીને મારું મન પવિત્ર કરો, મારા મનને શાન્તિ આપો. મનો-
વિકાર એવા તો પ્રબલ છે કે મારી નબળાઇને લીધે હું તેને નિઃ
શેષ કાઢી સકતો નથી; તેમજ આસપાસના મોહ, લાલચ, અને
વિષયો એટલા બધા છે કે મારા પોતાના શ્રમથી તેઓને હું દૂર
કરી સકતો નથી. માટે હે જગદીશ્વર ! હું તમારે શરણ છું; ત-
મારે આધીન છું; હું અલ્પજ્ઞ અને અશક્ત છું તે તમે જાણોછો,
માટે નીતિમાર્ગે ચઢવામાં તમે મારા સહાય થાઓ; અસત્યતા, ક્રૂ-
રતા, અંતરનાં તથા બહારનાં પાપકર્મથી દૂર રાખી મને સન્માર્ગે
બતાવો, અને સન્મતિ આપો. હે ભક્તવત્સલ ભગવાન્ ! મારી
સદ્ગતિ કરો. હું તમને પૂજ્ય માનીને તમારી ભક્તિ કરું, સર્વે
મનુષ્ય જાતિ ઉપર પ્રીતિ રાખું, મારા વેરીઓને પણ ક્ષમા કરું,
અને કર્તવ્ય ધર્મ બજાવું, એવી મને પ્રેરણા કરો; મારા અંતઃક-
રણમાં પવિત્રતા, દયા, દૃઢતા, અને શ્રદ્ધાનું સ્થાપન કરો, ત-
મારી સાચી ભક્તિ તથા શુદ્ધ ઉપાસના કરું અને સત્ય નિર્દોષ
ધર્મ પાળું એવી મને સદ્બુદ્ધિ આપો. તથાસ્તુ.



દિંડિ. ૬

સૃષ્ટિ નિયમ નિરખિ ચિત્તમાં ઉલાસું, પ્રેમ ભાવથકી પ્રભુ તને ઉપાસું;
મને હૃદય થકી કદિ નહી વિસારો, કરો સર્વ કાલ નાથ ઉપકારો. ૧

तमे सत्य शुद्ध एक देव साचा, स्तवन गावा नहि चालि सके वाचा;
उभय हाथ जोडि प्रणमुं पूज्यपाद, सदाकाल मागुंछुं प्रभु प्रसाद. २
अल्प प्राणी हुं करुंछुं अती दोषो, नही नाथ ते कदापि तमे जोशो;
पिता मात तणो सत्य ए स्वभाव, नही लावे निज पुत्रपर अभाव. ३
तमे मंगलमय देव दयाधारी, सकल विश्व विषे शक्ति छे तमारी;
तमे सत्य शुद्ध नित्य निर्विकारी, परीपूर्ण करो वांछना अमारी. ४
निरखुं नित्य नाथ हुं तमारुं नूर, रहुं दुष्ट विषयवासनाथि दूर;
एज आश रुडी राखुं हुं तमारी, विनति विश्वनाथ ल्योतमे स्विकारी. ५

वसंततिलका.

हे देव ईश जगदीश जगन्निवास,
धारुं न आश्रय बिजो करुं तारि आश;
आधार सत्य हरिनो चितमां धरुंछुं,
पाळो तमे प्रभु मने शरणे रहुंछुं. १
विश्वेश सर्व शुभ कर्म कदी न जाण्यां,
कृत्यो महान मनमां हरि में न आण्यां;
भक्ति तमारि करवा सुमति चहुंछुं, पाळो तमे० २
अत्युग्र पाप करवा मति मारि थाय,
ते ना जुवो प्रभु दयाथि रहो सहाय;
हुं भक्तपाल भवतारकने भजुंछुं, पाळो तमे० ३

तारी कृपा जगधरा कदि जो न थाय,
मिथ्या प्रयास सघळा श्रम व्यर्थ जाय;
आधारहीन अतिदीन मलीन हुं छुं, पाळो तमे० ४
साक्षी तमे सकल कर्म विकर्म ईश,
पाळी निभाव करशो त्यम हुं नमीश;
शिक्षा भयोथि चितमां अति हुं डरूंछुं, पाळो तमे० ५
देहाकृती गति दिसे अति शुद्ध सारी,
अंतःस्थ वृत्ति चितनी अति दुर्विकारी;
एवो थई हुं प्रभु सन्निध संचरूंछुं, पाळो तमे० ६
हे भक्तवत्सल विभू भयथी उगारो,
पूरी कृपाज करि हाथ ग्रहो अमारो;
चित्ते धरी फरिफरी प्रभु वीनवुंछुं, पाळो तमे० ७
अत्यंत पाप वळि दोष थया विशेष,
ते सर्व टाळि मति शुद्ध करो महेश;
संसारसागर थकी तरवा जपुंछुं, पाळो तमे० ८
जाणुं समस्त जगलोक सहायकारी,
तोए वृथा भ्रमित छे चितवृत्ति मारी;
गावा पुरा प्रभुगुणो असमर्थ हुं छुं, पाळो तमे० ९



गीति.

ज्यां नव भासे दिनमणि, निशमणि ग्रहगण हुताश नव भासे;
भासे ब्रह्म सदा त्यां, ते थकि त्रिभुवन प्रदीप्त अति भासे. १
जे थकि उद्भव जगनो, जेणे करिने प्रकाशने पामे;
जेमां जई विरामे, जे तणि करुणा दिसे सहू ठामे. २
जय जय जय जगदात्मा, जगदीश्वर जन्मरहित प्रभु जे छे;
प्राणी जीवदयाओ, अतिशय संभाळ तेनि ते लेछे. ३
ते परब्रह्म परात्मा, पदपंकज हुं प्रणाम करि मागुं;
मागुं पापक्षमा रे, निशदिन प्रभुभक्तिमां हुं अनुरागुं. ४
त्रिभुवनपति हुं तारो, भवसागरथी कृपा करी तारो;
शान्ति सदैव वधारो, प्रार्थन स्तव मारुं लक्षमां धारो. ५
अपराधी हुं थयोछुं, तुज विण नथि को शरण्य प्रभु मारे;
आव्यो छुं तुज द्वारे, आश्रय छे तुज कृपातणो भारे. ६
भवपति भवसागरथी, तरवा नथि नाथ शक्ति तो मारी;
अल्पमती अविचारी, नव करि सकुं हुं स्तुति पुरी तारी. ७
गगने ग्रहगणरचना, रचिछे सुंदर अती चमत्कारी,
निश्चल नियमो बांधी, अतिशय सत्ता तमेज विस्तारी. ८
सर्वेश्वर सर्वात्मा सच्चिद्घन स्वामि सन्मतीदाता;
धाता त्रिभुवनत्राता, सर्वांतर्यामि विश्वपितुमाता. ९

नमुं नमुं नमुं नमुं निसे, निर्मल मनथी नमुं तने देवा;
दिव्य पिता प्रभु तारी, इच्छा अनुसारि सदा करुं सेवा. १०
अवलंबन छे तारुं, नव तरछोडो मने दयाधीश;
बालकशिशुनी कृतिथी, कादि नव चितमां चढावशो रीस. ११
प्रभुअस्तित्वप्रमाणो, जगरचनामां अति प्रबल भासे;
सुंदर नियमो निरखी, निश दिन मनवृत्ति मारि उल्लासे. १२
प्रभुता एज तमारी, दोषो देखी न रोष चित धारो;
अति करुणा विस्तारो, सेवक जनने कदी न वीसारो. १३
अर्भक हुं प्रभु तारो, यद्वा तद्वा वदुं हुं जे वाणी,
मानि कृपानिधि लेशो, सुतवात्सल्यस्वभाव चित आणी. १४
सप्रेमांतःकरणे, परमेश्वरने पदे हुं अभिवंदुं;
शुभमंगलफलदाता, तुज शरणे रहि सदा हुं आनंदुं. १५
अपराधि हुं अपराधी, अतिशय तारो थयोछुं अपराधी;
वळग्यो बहु उपाधी, उत्तम भक्ती तमारि नव साधी. १६
उत्तम गती अमारी, निश्चय उत्तम कृती थकी थाय;
कोट्यावधि मुज दोषो, प्रभु तुज करुणाकटाक्ष थकि जाय. १७
पतितोद्धारक प्रभु छो, पावन करशो तमे मने नाथ;
भय नथि किंचित तमने, वर मागुंछुं प्रसारिने हाथ. १८

मालिनी.

कर चरण वडे जे, में कियां कर्म खोटां,

श्रवण नयन चित्ते, जे किधां पाप मोटां;
अतिशय करुणाथी, द्यो क्षमा नाथ हुंने,
जय जय करुणाब्धे, हुं नमुं नित्य तुंने. १

उपेंद्रवज्रा.

शरीर वाणी मनथीज पापो, प्रभू किधां में अगण्यां अमापो;
क्षमा करीने चितमां शमावो, दया करीने दिनने निभावो, १

उपजाति.

तमे प्रभू सर्व पिताज माता, तमे सखा बंधु तमेज धाता,
विद्यामतीसद्गतिशांतिदाता, तमे प्रभु प्राणि समस्त त्राता. १

शार्दुलविक्रीडित.

साष्टांगे नमिने प्रणाम करिये सर्वेश सच्चिद्घना,
अंतर्यामि विदीत सर्व तमने जीवो तणी कामना;
दोषो छे अगणीत शी गति थशे अंते अमारी प्रभु,
राखीए करुणा दया तुज तणी आशा अमे तो बहु. १
माग्या छे प्रभु प्रार्थना स्तुति करी अर्थे अतीशे अमे,
ते मध्ये परिपूर्ण अर्थ करशो जे योग्य जाणो तमे;
त्राता छो प्रभु आप सर्व जिवना शर्णे सदा राखशो,
लोकोनां उपयोगि कार्य करवा रूडी मती दाखशो. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

प्रणमुं सदा परेश, पराभक्तिथी विशेष,
विमल अमारी मति, करशो दया करी;
सच्चिद्घन तमे, अति अल्प जीव अमे,
प्रभुपदमां अमारी, श्रद्धा छे खरेखरी. प्रणमुं०
तमे छो स्वयंप्रकाश, सघळे तमारो वास,
कृपा थाय तो जवाय, भवसिंधुथी तरी;
अखंड अंतर्याम, पूर्ण करो मनकाम,
करिये अमे प्रणाम, तमने फरी फरी. प्रणमुं०

पद.

काफी. त्रिताल.

करुणा करो रे कृपाल, मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु करुणा०
अद्भुत शक्तिथी सरजाव्युं, भूमिमंडल विशाल;
गगन महीं ग्रहनक्षत्रोनी, शोभी रही मणिमाल,
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० १
जीव संरक्षण अर्थे कीधां, अन्नौषधी रसाल;
ए रचनाना पूर्ण भेदनो, नव लागे कदि भाळ,

माशुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० २

अनुग्रह पूर्ण करी प्रभु ल्यो छो, सेवकजन संभाळ;

प्रेम थकी प्रभुपदपंकजे, वंदी वदुं हुं बाल,

माशुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० ३

पतितपावन परमपवित्र, भक्ततणा प्रतिपाल;

शांतसौम्यसात्विकगणरूपे, दर्शन द्यो हे दयाल,

माशुं हुं पापक्षमारे प्रभु. करुणा करो० ४

पद.

खमायची जिल्लो. त्रिताल.

एक अखंड अनंत अगोचर, ईश अद्वितिय उपासुं रे;

अति अद्भुत जगनी रचनाने, निरखी निरखी उल्लासुं रे,

सत्य शुद्ध सचराचरव्यापक, ब्रह्मपदे हुं विलासुं रे.

एक अखंड० १

विषयवासना तुच्छ गणीने, चिद्घनने अध्यासुं रे;

रटन भजन प्रभुयशगुणकीर्तन, निश दिन हु अभ्यासुंरे.

एक अखंड० २

में अपराध अगाध कीधाछे, अतिशय मने विमासुं रे;

क्षमा करो करुणासिंधु प्रभु, ए वचने विश्वासु रे.

एक अखंड० ३

पराभक्तिथी प्रभु सेवुं तो, नरक थकी नव त्रासुं रे;
परात्परा परलोक विषे प्रभु, चरण समीप निवासुं रे.
एक अखंड० ४

पद.

खमायची जिल्लो. दादरो.

प्रभुपदपंकजे सदा हुं पाय लागुंरे,
निर्मल मनथी स्मरण करीने;
पराभक्तिमां हुं वृत्ति अनुरागुंरे. प्रभुपद० १
आ भवमां प्रभु परमकृपानी,
नौकाविना कदीं हुं नव तागुंरे. प्रभुपद० २
शरणागत दीन दास तमारो,
अपराध तणी क्षमा हुं मागुंरे. प्रभुपद० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जय भगवन् देवा, जय भगवन् देवा;
भक्तिपराथि तमारी(२), करुं निश दिन सेवा. जयदेव० ॥१॥
प्रभुनो पार अपार, ऋषिमुनि नव पाम्या(२);
स्तुति गुण गाइ तमारी(२), मन थकि विश्राम्या.जयदेव०॥२॥
सर्व स्थले प्रभुवास, सत्य करी जाणुं(२);

ए अति उत्तम विधिनुं(२), आवाहन मानुं. जयदेव० ॥३॥
प्रेमपात्र परिपूर्ण, भरुं श्रद्धा जलथी(२);
पाद्य अर्घ्य अर्चन विधि(२), करुं निर्मल मनथी. जयदेव०॥४॥
परमेश्वर प्रणिधान, धरि नित्ये मनमां(२);
गंध पुष्प भक्तिनां(२), अर्पुं प्रभपद्मां. जयदेव० ॥५॥
मंगलमय महाराज, मंगल पद आपो(२);
कृपा करी मुज शीर्षे(२), हस्त वरद स्थापो. जयदेव० ॥६॥
परमात्मानुं ध्यान, हृदय विषे धारुं(२);
अति उपकार तमारा(२), कदि नव वीसारुं. जयदेव० ॥७॥
दर्शन द्यो महाराज, दिनवत्सल दाता(२);
विनय थकी विनवुंछुं(२), विश्वपितामाता. जयदेव० ॥८॥



अंक ७ मो.

ललित.

परम ब्रह्मरे, प्राणतारक, प्रगत भक्तना, पापहारक;
चरणपंकजे, वंदिने सदा, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. १
प्रभु अतर्क्य छो, तर्क शुं थशे, मति मनुष्यनी, तो भमी जशे;
नव करी सके, कोई कल्पना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. २

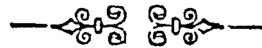
विदित छे तने, कृत्य तो वधं, विनति शुं करुं, नाथने वधु;
तुज पदे धरी, शुद्ध भावना, प्रभु हु मागुंछुं, पापनी क्षमा. ३
गणतरी नथी, दुष्कृती तणी, तदपि नाथनी, छे दया घणी;
नमि नमी करुं, नित्य वंदना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ४
विधिनिषेधना, नीम तें किधा, नहि कदापि में, लक्षमां लिधा,
सुमति सूचवो, सत्य चिद्घना, प्रभु हु मागुंछुं, पापनी क्षमा. ५
प्रभु कृपा करी, रक्षणो करो, दिनजनस्थिती, लक्षमां धरो;
नथि शरण्य को, नाथ तुं विना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ६
परम देव हे, हे दयाघना, अनुग्रहो करोछो तमे सदा;
पुरि करो तमे, भक्तकामना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ७
अति मलीनता, छे मती विषे, शम कृती थकी, शुद्ध तो थशे;
प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा ८
मुज विराम छे, आपनो घणा, दुर करो दयानाथ दुर्गणो;
शुभ मनोरथो, धारुं हु घणा, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ९
प्रभु प्रणाम साष्टांग हं करुं, हृदयमां रहुं, ध्यान हुं धरुं;
भवपति सुणो स्वल्प प्रार्थना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. १०



हे परब्रह्म परमात्मा परमेश्वर! तमे सत्य छो, पवित्र छो, ज्ञानमय छो, तमारो पार हुं पामर जीव पामी सकतो नथी. आ संसारमां सत्कर्म करवा तमे मने जन्म आप्यो छे, एम तमे

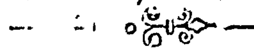
आपेली विवेकबुद्धिवडे विचार करवाथी मने बोध थाय छे, पण हे मातपिता ! हुं तमारी इच्छा प्रमाणे चाल्यो नथी. मारां पाछलां कृत्यनो विचार मारा मनमां करूंछुं, त्यारे मारा चित्तने अति क्लेश, खेद अने दुःख थायछे; मारी शी गति थशे ए विषे विचार करूंछुं तो हुं केवल भ्रमित तथा भयभीत थाउंछुं; घणी वेला तमने भूली जइने दुष्ट नठारां कर्मो में कर्यां छे; परोपकार, दया, क्षमा, तथा मारा भाइ मनुष्यजनने सुख थाय एवां कांइ पण पुण्यनां काम करवां जोइये तेवां में कर्यां नथी. उलटो तेओनो द्रोह करीने, तेमना उपर समानभाव राखवाने बदले तेओने तुच्छ गण्या छे; तेओनुं द्रव्य लेवामां तथा तेओने दुःखी करवामां अनेक प्रकारना प्रपंच, कपट तथा छलभेद कर्या छे. मारां कुकर्म आ वेला संभारुं छुं तो मारा शरीरनां रोम उभां थाय छे, मने कंपारो छूटे छे. एटलोज मात्र विश्वास छे के, तमे पतितपावन, प भक्तपाल अने क्षमावंत छो. ए विश्वासथी मारा मनने कांइक शान्ति थइ आशा थाय छे के, हुं मारां पापकर्मनो खरेखरो पश्चात्ताप करीने, हवेथी पाप नहि करुं एवी सत्य प्रतिज्ञा करीश तो, तमे मारां पापकर्मनी क्षमा आपशो. माटे हे परात्पर प्रभु ! तमने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करीने विनति करुंछुं के, तमे मारां पाछलां पातकोनी क्षमा आपी मारुं मन शुद्ध करो, मने सन्मार्ग बतावो, अने सदाकाल

तमारी साची भक्ति तथा उपासना करुं अने तमारा उपकारोनुं स्मरण राखी तमारी इच्छा प्रमाणे चालुं, लोकहितार्थनां काम करुं, अने मारा आत्मानुं कल्याण थाय अने परलोकमां अक्षय सुख भोगवुं एवो हे करुणासिंधु प्रभु ! मने आशीर्वाद देजो. शांतिः शांतिः शांतिः ॥



छंद. ७

पतित पावन परब्रह्म परमदेव,प्रेम भाव राखि करुं तमारि सेव;
सत्य धर्म बीज हृदय विषे थापो,चित्त शान्ति सर्वकाल मने आपो.१
विश्वसिंधु विषे विषय जाल भारे,विना नाथ कोण ते थकी उगारे;
दास जाणि तमे नाथ जुवो सामुं, कृपा थाय तोज मुक्तिधाम पामुं. २
करुं स्मरण सदा काल हुं तमारुं,परित्राण करो प्राणनाथ मारुं;
क्रिया मारी नहि लक्ष विषे लेशो,दयासागर सद्बुद्धि मने देशो. ३
चरणपंकजे हुं प्रणमि लागुं पाय,प्रेमदृष्टि थकी कष्ट सकल जाय;
करो नित्य तमे भक्तने सहाय, हरो सर्व तेमना तमे अपाय. ४
किधा पातक अपराध अमे भारे,कृपानाथ विना कोण ते निवारे;
उभय हाथ जोडि मागुं माय बाप, करो नाथ तमे सर्व क्षमा पाप.५



शिखरिणी.

परात्मा हे ब्रह्मन्, भवजलधिउद्धारक प्रभु,

षडैश्वर्ये व्यापो, सकलदुखसंहारक विभु;
नमी साष्टांगे हुं, प्रणिपत करुंछुं प्रभुत्रग,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. १
विना तारा कोई, विपतिभयत्राता अहिं नथी,
सदा साधुं जोई, अचल सुख आपो जगपति;
पिता माता तारा, अनुग्रह दयामां नथि मणा, क्षमा पापो० २
जगदंबा देवा, त्रिभुवन महीं शक्ति प्रसरी,
तमारा भक्तोने, कदि नव जशो नाथ विसरी;
न जोशोरे दोषो, अवगुण अमारा अति घणा, क्षमा पापो. ३
कला तारी देवा, कदि नव कलाशे जिव थकी,
पराभक्ति सेवा, दिन निश करुं शुद्ध मनथी;
जगत्कर्ता मानुं, निरखि सघळी विश्वरचना, क्षमा पापो. ४
स्वयंभू छो स्वामी, नव कदि रहे गुप्त तमथी,
तने अंतर्यामी, विनति करियेरे विनयथी;
करो सन्मार्गोमां, प्रकृत मनवृत्ती प्रभु [illegible], क्षमा पापो. ५
प्रभाते मध्याह्ने, वळि प्रभु दिनांतेज नमने;
सदा हुं एकांते, नमन करुंछु निश्चल मने;
कृपासिंधू तारा, चरणथि न राखो दुर [illegible], क्षमा पापो. ६
सहु प्राणी तारां पृथिवि महि विस्तारथि रह्यां,
तथापि ते मध्ये, मनुज जनने तें करि दया;

दिधी छे सद्बुद्धी, सतत सतमार्गे विचरवा, क्षमा पापो. ७
निषिद्धाचारोमां, नवळुं मन मारुं नित भमे,
सदा सद्धर्मोमां, अति त्वरित वाळो चित तमे;
कुपुत्रो तो थाशे, नहि कुपित थाशे कदि पिता, क्षमा पापो. ८
क्रिया मारी खोटी, नव कदि चिते नाथ धरशो,
चुको कीधी मोटी, गणतरि करीने न गणशो;
निभावी ल्यो देवा, दिन गणि तमे एज प्रभुता, क्षमा पापो. ९
नथी शक्ती मारी, स्तुति गुण तमारा उचरवा,
अती हुं अज्ञानी, तदपिज करोछो बहु दया;
नथी किंचित् देवा, श्रम पतितउद्धार करवा, क्षमा पापो. १०
जगाधीशा तारो, अति प्रबल आधार अमने,
तमे ना वीसारो, चित थकि कदी भक्तजनने;
कृपादृष्टी राखी, भवभय निवारो विभुवरा, क्षमा पापो. ११
विनंती स्वीकारो, निजशरण राखी भवपति,
सदा सद्विद्यानी, अति विमळ आपो प्रभु मति;
प्रभू अंते मुक्ती, समिप पदनी द्यो अविचला, क्षमा पापो. १२
शुभाशीर्वादो द्यो, कुशलसुखक्षेमार्थ अमने,
तथास्तू बोलीए, मति वचन उच्चारि तमने;
पुरो वाञ्छा मारी, सदय चित राखी प्रभु सदा, क्षमा पापो. १३



मालिनी.

प्रभुपद बहु मोटुं, शुद्ध चैतन्य तत्व,
सकल सबल व्याप्युं, नित्य तेनुं महत्त्व;
अजर अमर पोते, छो चिदानंद सर्व,
ऋषिमुनिजन सर्वे, छोडि दीधोज गर्व. १
अति गहन प्रभावे, विश्व विस्तार कीधो,
मनुष सरस जाणी, बुद्धिसंस्कार दीधो;
नमि नमि नमि नित्ये, भक्ति सन्मार्ग मागुं,
विनययुत थईने, नाथ हुं पाय लागुं. २
नहि नहि कदि जाणे, जीव तारा विचार,
नहि नहि कदि पामे, पार तारो अपार;
अकल सकल तारी, छे कलाओ अगाध,
शुभ गुणयुत वंदुं, सर्व लोकाधिनाथ. ३
करद्वय प्रसरीने, भक्तिमार्गे करीने,
अति विनय धरीने, प्रार्थना उच्चरीने;
हरख मन भरीने, हेतथी आदरीने,
नमुं नमुं नमुं नित्ये, ऊपकारो स्मरीने. ४
प्रभुपद प्रणमीने, याचना हुं करुंछुं,
स्मरण शुभ तमारुं, चित्तमां हुं धरुंछुं;

नवलि सघलि वाणी, ल्यो कृपाथी स्विकारी,
नहि नहि मति चाले, ए थकी पार मारी. ५
त्रिभुवन विभु व्यापी, विश्वंद्या विधाता,
सकलकुशलदाता, सर्वना सत्य त्राता;
अतिशय सुखकारी, भक्ति आपो तमारी,
सतत शुभगणोमां, वृत्ति राखो अमारी. ६
प्रभुपरमकृपाथी, मूक वाणी वदेछे,
प्रभुपरमकृपाथी, पंगु गीरे चढेछे;
प्रभुपरमकृपाथी, सर्व कल्याण थाय,
प्रभुपरमकृपाथी, मोक्षमार्गे जवाय. ७
त्रिभुवनपति तुंने, वंदिये वारवार,
निश दिन प्रभु तारा, मानिये ऊपकार;
शरण नथिज वीजुं, सत्य आधार तारो,
कर ग्रहि अमने आ, विश्वसिंधूथि तारो. ८

उपेंद्रवज्रा.

तमे अमारा प्रभु माततात, विदीत छे सर्व अमारि वात;
क्षमा करी किल्विप सर्व कापो, दयानिधे सन्मति नित्य आपो. १
सुणी तमे प्रेम थकी अमारी, विनंति लेशो चितमां विचारी;
जणाय जे मागणि नाथ सारी, दयाथि लेशो प्रभु ते स्विकारी. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

भगवंत ब्रह्म प्रभु, परिपूर्ण व्याप्त विभु,
सबळ तमारि शक्ति, त्रिभुवनमां जणाय;
अविचिंत्य इष्ट एक, किधी तें सृष्टि अनेक,
अकल अत्यद्भूत, तारि न कला कलाय. भगवंत०
प्रभु छो अनाथनाथ, अमे जोडी बेउ हाथ,
विनवीए विश्वनाथ, करुणा करो सदाय;
विश्वंभर विश्वपाल, दीनवत्सल दयाल,
जाणिने तमारां बाल, करो सर्वदा सहाय. भगवंत० १

पद.

खमायची जिलो. त्रिताल.

परमात्मा परिपूर्ण प्रभु परमेश्वरने हुं प्रणाम करुं,
महच्छक्तिथी जग सरजाव्युं, भूमि जल फल पाषाण तरु;
ए अद्भुत कृति गहन गतिने, मंदमति हुं शुं विस्तरुं. १
परमात्मा०
जे बलथी आ विश्व प्रकाशे, जे थकि भासे सत्य खरुं;
ते विश्वंभर व्याप्त विभुनुं, ध्यान निरंतर चित्त धरुं. २
परमात्मा०

प्रेमथकी परब्रह्म तमारी, इच्छाओने अनुसरुं;
दया कृपा उपकार प्रभुना, चित्तथकी न कदी विसरुं. ३
परमात्मा०
साष्टांगे प्रभुचरण नमीने, विनति करी हुं कर पसरुं;
आ संसारविषे विश्वेश्वर, सत्कर्मोमां सदा हुं सरुं. ४
परमात्मा०
शरण रही परमेश तमारा, भक्तिपथे हुं सदा विचरुं;
विनयथकी जगवंद्य तमारुं, मंगल नाम मुखे उचरुं. ५
परमात्मा०

पद.

खमायची जिल्लो. त्रिताल.

विनति करुं कर जोडी, त्रिभुवनत्रातारे, विनति करुं करजोडी;
प्रभुमहिमागुणस्तुति गावाने,मंद अल्प मति मारी थोडी. विनति० १
करग्रहीने करुणानिधिप्रभुजने,कदि नव देशो प्रभु छोडी. विनति० २
पतितपावन गुण शुभ धारो,माटे प्रभु द्वार आवुं दोडी. विनति० ३
षड्रिपुयोनां अति दृढ बंधन,तत्क्षण नांखो तमे तोडी. विनति० ४

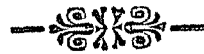
पद.

सोरठ. त्रिताल.

जगदीश्वरने हुं वंदुं, प्रभु भव तारोरे, जगदीश्वरने हुं वंदुं;
शरणागतनुं रक्षण करशो, हे करुणाना सिंधु. जग० १
सप्रेमांतःकरणथकी हुं, नमुं प्रभु चरणारविंदु. जग० २

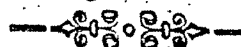
अवगुण उपर लक्ष न देशो, दीनवत्सल दीनबंधु. जग० ३

पराभक्तिनी लेह मने लागी, प्रभुपदमां आनंदु. जग० ४



आरति.

जयदेव जयदेव जय विश्वाधारा, जय विश्वाधारा;
विश्वंभर अविकारा(२), विभु अपरंपारा; जयदेव० १
सकल विश्वना नाथ, सत्य तमे भासो(२);
सर्वे स्थलमां प्रभुनो(२), छे निश्चय वासो. जयदेव० २
अंतर्ध्यान विधान, अति प्रिय छे तमने(२);
अविहित निंद्य कृतिथी(२) दुर राखो अमने. जयदेव० ३
सद्विद्या सज्ज्ञान, सत्संगो आपो(२);
अंतर्यामि अमारां(२), दुष्कर्मो कापो. जयदेव० ४
करिये कोटि प्रणाम, परमेश्वर चरणे(२);
कृपाकरी अमने प्रभु(२), राखो निज शरणे. जयदेव० ५
प्रभु उपकार अपार, स्मरण सदा करिये(२);
जनहितकारि क्रिया करि(२), भवसागर तरिये. जयदेव० ६
प्रेमभक्तिथी ध्यान, धरि प्रभु आराधे(२);
भवबाधाओ तेने(२), निश्चय नव बाधे. जयदेव० ७
भक्ततणी संभाळ, प्रभु निशदिन लेशो(२);
भव थकि पार उतारी(२), मुक्ति समिप देशो. जयदेव० ८



अंक ८ मो.



भुजंगी.

कृपासागरा सर्व आनंददाता, प्रभु प्राणिना छो तमे सत्य त्राता;
स्तुती गूण गावा नियंता तमारी, नथी चालती कांइ शक्ती अमारी. १
कृपानाथ कीधा बहू ऊपकारो, कई वीधिये वालिये पाड तारो;
सदा सर्वदा क्षेम आरोग्य आपो, अमारां महा संकटो दुःख कापो. २
जगत्तंत्र छे सर्व आधीन तारे, भरूंसो खरो ताहरो छे अमारे;
तमारी दयाथी रुडां कार्य थाय, महाविघ्न ने व्याधियो सर्व जाय. ३
तमे मात ने तात छो रे अमारा, अमे बालको पास आव्यां तमारां;
अतीशे किधाछे अमे नाथ दोषो, कृपादृष्टि राखी प्रभु ते न जोशो. ४
सदा ऊपकारो किधा ने करो छो, विनंती तमे सर्व लक्षे धरोछो;
तमारा विना को नथी रे समर्थ, तमारी कृपाथी थशे पूर्ण अर्थ. ५
अती निंद्य कर्मो प्रभू नित्य थाय, तमे जो गणो तो गती केम थाय;
तमे सर्व वस्तूथकी सत्य सारा, करो सर्व दोषो क्षमा नाथ मारा. ६
पराभक्तिथी वंदिये वारवार, प्रभु प्रार्थनाओ करो अंगिकार;
तमारुं किधूं ते न कोईथि थाय, प्रभू सर्व काले रहो छो सहाय. ७
नमस्कार स्वीकारि लेशो अमारा, स्मरीए सदा ऊपकारो तमारा;
विनंती अमारी तमे मानि लेशो, कृपादृष्टिथी आशिषो पूर्ण देशो. ८



हे परमपवित्र परमात्मा परमकृपालु परमेश्वर! हुं आ संसारना मोहपाशमां पडेलो छुं तेमांथी मुक्त करनार तुं समर्थ छे; मारे साचो आश्रय मात्र तारो छे. तुं मारुं रक्षण करनार भयथी बचावनार छे, ए मने मोटो आधार आशा तथा विश्राम छे. कुटिलता क्रूरताथी भरेलो अने पापिष्ठ छुं ते तारा विना कोने शरण जाउं? तारी दयानी छाया विना हुं क्यां जईने विश्राम पामुं? हे दयासिंधु प्रभु! हुं तारो छुं, तारी आगळ मारा मनना बधा उभरा कहाडीने अभिवंदन पूर्वक प्रार्थना करुंछुं के मारां पापकर्मोने बाळी नांखी मारुं मन पवित्र कर. सघळी दुर्वासना, सघळा पापसंकल्पो तथा सघळा दुर्विकारो मारा मनमांथी जडमूळथी काढी नांख. हे कारुण्यमूर्ति प्रभु! हुं मारा मनमां विचार करुंछुं तो तारी साथे मारे गंभीर, पवित्र, अने दीर्घ संबंध केटलो बधो छे, अने ते संबंध भूली जईने में केटलां बधां दुष्ट अने घोर कर्म कर्यां छे; मारो अधर्म, अनाचार केटलो छे! जो तारो दयाल स्वभाव न होत तो हुं कदी पण क्षमाने पात्र थात नहि. तारी शुभ प्रेरणा पाळवाने बंधायलो छतां घणी वेळा ते उल्लंघी छे; तारा उपकारो भूली जइने कृतघ्नी थयोछुं; तें मने सारे मार्गे जवानी तथा भयथी बचवानी सूचना आप्या छतां तेना उपर में लक्ष आप्यो नथी; तारी मारा उपर प्रीति छतां में तारा उपर प्रीतिभाव राख्यो नथी; मारी प्रीति संसारनां क्षणिक सुखो

साथे अमर्यादे वळगी रही छे; आ बधो विचार करुंछुं तो तारा आगळ हुं एक शब्द पण उच्चार करवाने योग्य नथी. मारां दुरित कर्मथी लज्जा पामी धूजतो धूजतो तारी पासे ऊभो रह्यो छुं; अपराधी छुं; तुं मारुं रक्षण कर, मारो उद्धार कर; हुं पापकर्मनो खरेखरो पश्चात्ताप करीने क्षमा मागुंछुं, ते कृपा करी मारी आ प्रार्थना स्वीकारीने मने सद्विचार तथा सुमति आप; अपवित्र विचारथी मने वेगळो राख; खोटा संगथी मने छोडाव; धार्मिकपणाना खोटा ढोंग तथा दंभथी मने दूर राख; मिथ्याभिमान तथा गर्व तथा प्रपंचथी मुक्त कर. जे क्रियाथी तारा उपरनी मारी प्रीति घटे एवी क्रियाथी मारुं मन निवृत्त कर. मारामां जे भूल खोड होय ते कहाडी नांखी नीति तथा सदाचारमां मारुं मन प्रवृत्त थाय एवी योजना कर; मारा मनमां खोटी वासना तथा खोटा संकल्प उत्पन्न थाय ते वेळा तारुं स्मरण करीने ते विचारोने मनमांथी कहाडी नांखवानी मने शक्ति आप; अध्यात्मिक सुख मळवानो हुं यत्न करुं तेमां तुं सहाय रहे. हे परात्पर भगवन्!

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेःस्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै परात्परायेति समर्पयामि ॥१॥

काया, वाणी, मन, इंद्रिय, बुद्धिवडे, आत्मावडे तथा प्रकृतिना स्वभाववडे जे जे कार्य करुंछुं ते हे परमेश्वर! हुं तने अर्पण करुंछुं.

दयालु पिता ! सर्व रीते हुं तारो छुं; तुं मारुं सर्व काल रक्षण कर.

त्वमेव माताच पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥ १ ॥

तुं मारो मातपिता छे, तुं मारो बंधु तथा तुं मारो मित्र छे, मारी विद्या तथा द्रव्य तुं छे; हे देव ! तुं मारुं सर्वस्व छे.

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षम्यतां परमेश्वर ॥ १ ॥

हुं अहर्निश सहस्रावधि अपराध करुं छुं; मने तारो दास जाणीने हे परमेश्वर ! मारा अपराध क्षमा कर. शांतिः शांतिः शांतिः



ढिंढि ८.

सकल विश्वविषे छो विराजमान, सर्व प्राणि प्रते छे दया समान;
सदाकाल करुं भक्ति सुधापान, गाउं निर्मल प्रभु मंगल गुणगान, १
तमे पूज्य देव परम उपकारी, सुणो नाथ नम्र विनति सर्व मारी;
करो पाप कर्मनी कृपार्थि क्षान्ति, हृदयताप हरी आपि परम शान्ति २
भक्तवत्सल भगवंत भक्ति तारी, जाणुं सर्व वस्तुथी हुं श्रेष्ठ सारी;
सदा ध्यान रहुं हृदयविषे धारुं, कृपानाथ तने कदि नहीं विसारुं. ३

दुःखसमय सदा धैर्य तमे देशो, मने सर्वदा सहाय तमे रे'शो;
परमप्रेमभक्तिभावथी उपासुं, सदाकाल चरणसमिप हुं निवासुं. ४
कृपासागर शुभ नाम तमे धारो, कदी भक्तने तमे नहीं विसारो;
दयानाथ दया जो तमारि थाय, परम मोक्षपदे सहजमां जवाय. ५



ललित.

जगतवंद्यरे वंदिये तने, प्रणत प्राणियो पामरो अमे;
प्रणिपतो प्रभू लक्ष्यमां धरो, करुणसागरा रे कृपा करो. १
सकल सिद्धिना छो महोदधि, नव स्तुती थशे रे यथाविधि;
अनुग्रहो दया पूर्ण विस्तरो, करुणसागरा रे कृपा करो. २
अणचिंत्यां तमे कार्य तो करो, विपत्ति संकटो भक्तनां हरो;
प्रभुप्रताप तो छे खरेखरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ३
मुक जनो वदे वाणी शुद्धरे, गिरि उलघशे पंगु वृद्ध रे;
प्रभु कृपा तणो सत्य आशरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ४
अनुग्रहो क्रिया ने करो सदा, सघळि टाळशो दुःख आपदा;
अति दया करीने ग्रहो करो, करुणसागरा रे कृपा करो. ५
नव गण्यो अमे धर्मनो विधि, दुरित दुष्कृती रे बहु किधी;
प्रभु वतावशो पंथ पाधरो, करुण सागरा रे कृपा करो. ६
पुत कुपूत तो थाय यद्यपि, नत्र पिता करे त्याग तो कदी;
नियम न्याय ए राखशो खरो, करुण सागरा रे कृपा करो. ७

प्रभु समर्थ छो प्राणना पति, प्रणत भक्तने द्यो रुडी मति;
पतितपावना पाप संहरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ८
परमब्रह्म रे प्रार्थना सुणो, अवगणो कदी नाथ ना गणो;
प्रभु शुभाशिषो नित्य उच्चरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ९
प्रभु कृपासुधादृष्टियो करो, मुज चित्ते सदा सद्‌गुणो भरो;
घटित कामना भक्तनी पुरो, करुणसागरा रे कृपा करो. १०

शालिनी.

विश्वाधीशा विश्वनंचा विधाता, सत्यानंता सच्चिदानंद कंदा;
श्रद्धाभक्ती ध्यान योगे हुं वंदुं, तारो मारे आशरो दीनबंधु. १
देवा तारुं छे अधिष्ठान सत्य, सरज्युं छे तें सृष्टिनुं सर्व कृत्य;
दीसे लीला सर्व आनंदकारी, विश्वव्यापी पूर्ण शक्ति तमारी. २
शीशी शोभा सृष्टि केरी वखाणुं, सत्ता तारी सर्व ठामे हुं जाणुं;
जीवो सर्वे देहधारी विकारी, तेओथी शुं थाय स्तूति तमारी. ३
दोषो देखी उपकारो करोछो, प्राणीओने अन्नपानो भरोछो;
एवा स्वामी छो प्रभू रे कृपाल, संभाळोछो भक्तने सर्वकाल. ४
देवा तारी जो कृपादृष्टि थाशे, सत्कर्मोना शुद्ध मार्गे जवाशे;
आपो नित्ये दासने बुद्धि रूडी, कापो मारी वासना सर्व कूडी. ५
जाणो मारी गुप्त वातो सहू रे, लज्जा सर्वे हाथ तारे प्रभू रे;
उगारी ल्यो संकटोथी दयाल, जाणी हुंने दास अल्पज्ञवाल. ६

आव्यो तारे द्वार हुं दीनदास, काढो देवा ना मने तो निराश;
वारेवारे छे प्रभूने प्रणाम, पुरो भक्तोना तमे सर्व काम. ७
आपो आपो चित्तने शान्ति आपो, कापो प्राणीनां कष्ट कापो;
धारो धारो प्रार्थना लक्ष धारो,तारो तारो विश्वसिंधूथी तारो.८
कामक्रोधादीक बंधो न छूटे, नित्ये खोटा चित्त संकल्प ऊठे;
आ संसारे सत् क्रिया जो न थाय,निश्चे मुक्ती धाममां ना जवाय.९
अज्ञानी छुं सत्यमार्गे चढावो, दोषो मारा नाथ सर्वे शमावो;
मोहाब्धीथी पार हुंने जवानी,आपो देवा सत्य नौका कृपानी.१०
साष्टांगे हुं वंदिने वारवार, मानुं तारा सर्वदा उपकार;
कृत्यो मारां नाथ लक्षे न लेशो,सद्विद्या सज्ज्ञाननो बोधदेशो.११
नीती नीयोनो सदा भंग थाय, लोए तारी भीति पूरी जणाय;
प्रेरो स्वामी सन्मतीओ सदाय,जेथी निश्चे मोक्षमार्गे जवाय. १२
सर्वात्माने शुं कहुं रे वधार, सर्वे दोरी हाथ छे नाथ तारे;
प्राणीने छे सत्य आधार तारो, तेनां सर्वे कष्टोने निवारो.१३
थाशे क्रीया तुं प्रभू जेम धारे, संकल्पो छे सत्य तारा वधारे;
तारुं धार्युं सर्वदा सिद्ध थाय,मिथ्या यत्नो जीवना सर्व जाय.१४
लज्जा राखो दास हु छुं तमारो,व्याधी कष्टो सर्व मारां निवारो;
वंदुं नित्ये नाथ बे हाथ जोडी,कामादीना नांखशो पाश तोडी.१५
सत्कर्मोथी चित्तनी शुद्धि थाय, भक्तिद्वारे मोक्षधामे जवाय;
ढोंगो वेशो वासना सर्व टाली,अंतःशुद्धी छे तने नाथ व्हाली.१६

नीती मार्गे चालतां कष्ट थाय, तोए ते सन्मार्गने ना मुकाय;
इच्छा तारी मानि आधीन रे'वुं, माथे आवे कष्ट ते सर्व से'वुं. १७
एवी बुद्धी प्रेरशो प्राणनाथ, वाञ्छा पूरो दासनी मात तात,
अंते देवा तुं विना को नथी रे, त्राता मारो हे दयाना निधीरे. १८
रूडां कार्यो लोकनां जो न थाय, मिथ्या फेरो जन्मनो सर्व जाय;
आ विज्ञप्ती स्वल्प मारी स्विकारो, सत्कर्मोना सूचवो सद्विचारो. १९
आपत्काले धीरता नाथ आपो, भक्ती सेवामां प्रभू वृत्ति थापो;
द्रव्यादीनो लाभ संपूर्ण थाय, त्यारे पूरी तो परीक्षा जणाय. २०
विश्वस्वामी जो हशोरे सहाय, वृत्ती मारी गर्वथी ना भमाय;
सन्मित्रो आ सृष्टिमां जे अमारा, तेओने द्यो सद्गुणो बोध सारा. २१
शत्रुओनी दुर्मतीने सुधारो, सर्वे स्थाने शांतियोने वधारो;
जीवोनुं जे वस्तुथी थाय हीत, अंतर्यामी आपने छे विदीत. २२
सर्वे प्राणीनी स्थिती हाथ तारे, तारो चित्ते सत्य विश्वास धारे;
सृष्टिस्रष्टा सत्य छो ते प्रमाणुं, सर्वे कर्मोना प्रभू साक्षि जाणुं. २३
मानी लेशो प्रार्थना नम्र मारी, आशा राखं नाथ पूरी तमारी;
आ संसारे चित्तनी शांति पामुं, अंते तारा क्षेमधामे विरामुं. २४



ललित.

प्रभुपदे अमे पाय लागिये, दुरित कृत्यनी माफि मागिये;
पतित पावना प्रेम लावशो, अनिति दुष्कृतीथी बचावशो. १

शुभ गुणो सदा नाथ आपशो, मनमलीनता कापि नांखशो;
सुणि तमे प्रभू नम्र वीनति, शरण राखशो रे दयानिधि. २
प्रभु मनोरथो मागिये अमे, घटित जे हशे पूरशो तमे;
नव विसारशो दासने कदा, सुनिति सन्मती दाखशो सदा. ३

—⁂—

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

जय जगवंद्य जय, जय भगवंत जय,
जय परब्रह्म जय, जगदीश धन्य छो;
अखंड अव्यक्त शुद्ध, चिद्घन नित्य मुक्त,
असंग अचिंत्य सत्य अतर्क्य अनन्य छो. जय जगवंद्य०
प्रणमीए वारवार, मानी बहु उपकार,
कृपाथी करो उद्धार, वरिष्ठ वरेण्य छो;
शक्ति छे अति प्रबल, मति करो निर्मल,
आपो पद अविचल, सकलशरण्य छो. जय जगवंद्य० १

पद.

झिंझो. ताल एकी.

जय जय जगवंद्य दयासिंधु उपकारी.
मंगलमयमूर्त्ति महामंगलशुभकारी.

मंगलप्रद पूर्ण प्रभू मंगलगुणधारी. जय जय जगवंद्य० १
सृष्टिमां दिसे तमारी सर्व शक्ति भारी,
भक्तनी विनति विश्वनाथल्यो स्वीकारी. जय जय जगवंद्य० २
पापकर्म सर्व कृपानाथ द्यो विसारी,
शरण राखिने दयालद्यो मति सुधारी. जय जय जगवंद्य० ३
प्रणमि अमे पाप क्षमा मागिये तमारी,
आत्म उन्नति करो कृपाघना अमारी. जय जय जगवंद्य० ४

पद.

काफी; ताल दीपचंदी.

विनति प्रभु सांभळो मारी, दया धारी, विनति०
करजोडि हुं प्रणाम करुंछुं, मागुं क्षमाओ तमारी;
आ भवमां सुख सन्मति आपो, अंते मुको न विसारी,
प्रभू बहु छो उपकारी. विनति० १
दया करी मानुष देह दीधो, मेगे मति शुद्ध सारी;
कर्तव्य कर्म करावो विश्वमां, रहो सहाये अमारी,
प्रार्थना चित्तमां धारी. विनति० २
क्षणे क्षणे उपकार करोछो, संकट सर्व निवारी;
प्रत्युपकार केई पेरे वाळुं, अल्प हुं जीव भिकारी,
प्रभु तारी सत्ता भारी. विनति० ३

षड्गुणयुतभगवंत तमे छो, भक्ततणा भयहारी;
भक्तिथकी निश्चय हुं पामुं, प्रभुपद मंगलकारी,
लज्जा तमे राखो मारी.   विनति० ४
चित्त करुं चरणार्पण नित्ये, प्रभु शुभ नाम उच्चारी;
आ स्वल्प वाक्यथी विनति किधी ने, ते तमे लेशो स्वीकारी,
ज्ञाति मारी सर्वे विचारी.   विनति० ५



आरति.

जयदेव जयदेव जय जय जगत्राता जय जय जगत्राता
सात्विक शुभ गुण धाता (२) दिनवत्सल दाता   जयदेव०
स्थिरचरव्याप्त महेश मंगलशुभकारी (२)
भवपति भक्त जनोना (२) भय संकटहारी   जयदेव० २
दृष्टस्तुवत्नाथ, नथि मतिमा तारी(२);
चिन्मय मंगल अविचल(२), अनुपम अविकारी.   जयदेव० ३
शिर साष्टांग प्रणाम करिये प्रभु तमने(२);
भवथकि पार उतारो(२), करुणा करिं अमने.   जयदेव० ४
पतितोद्धारक नाथ पापक्षमा करशो(२);
अल्प जिवोना दोषो(२), नव लक्षे धरशो.   जयदेव० ५

सर्वोत्तम सर्वेश, सर्वांतर्यामी(२),
सत्य सदाशिव स्वामी(२), निर्मल निष्कामी. जयदेव० ६
अंतर्ध्यानथि नाथ, आराधन करिये(२);
तुज करूणादृष्टि थकी(२), भवसागर तरिये. जयदेव० ७
प्रभु द्यो आशीर्वाद सद्‌गुण आचरिये(२);
अति उपकार तमारा(२), नित्य अमे स्मरिये. जयदेव० ८



अंक ९ मो.

ललित.

प्रभु परात्परा प्राणना पति, प्रणमिने करुं नम्र वीनति;
सबल सत्य छो सन्मतिप्रदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. १
अति अशक्त छुं भक्ति शुं करुं, मन मलीनताथी बहु भर्युं;
विभु विचारशो दासदीनता, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. २
विकट घांटि छे विश्वनाथरे, तुज विना ग्रहे, कोण हाथरे;
नव पडे मने दुःख आपदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ३
जिव करे सदा कर्म निंद्यरे, नव जुवो तमे विश्ववंद्यरे;
विभु तमारि छे ए वरिष्ठता, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ४

दिनजनस्थिती लक्ष धारशो, भव थकी मने नाथ तारशो;
जिव समस्तने भक्तिमुक्तिदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ५
विनति हुं करुं-छुं यथामति, कुशलता करो रे कृपानिधि;
मुज वतावशो सन्मती सदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ६
हृदयमां मने नाथ राखशो, नियम नीतिना नित्य दाखशो;
दुर करी वधी चित्तनी व्यथा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ७
चरणपंकजे पाय लागुंछुं, दुरित कर्मनी क्षांति मागुंछुं;
पतितपावना पूर्णकामदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ८
परम प्रेमथी प्रार्थना करुं, हृदयमां दया सिंधुने स्मरुं;
नव विसारशो दासने कदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ९
प्रभु तने महा पूज्य जाणुंछुं, तुज अनुग्रहो नित्य मानुंछुं;
नमुं नमुं नमुं छुं सहस्रधा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. १०

हे विश्वेश्वर विश्वव्यापी शान्तरूप, सर्वनो प्रकाश करनार, सत्तावान्, स्वतंत्र, सकल सुखना आपनार, सर्वना साक्षी, सत्य, पूर्ण, अजन्म, अमर, परब्रह्म परमेश्वर ! हुं तने प्रेमथी प्रणाम करी मागुंछुं के, आ संसारमां मारो वधो काळ तारी सारी भक्ति तथा सेवामां काढुं एवी मने सुमति आप. तारा उपर प्रीति रखाव. ताराथी विमुख थवाय, तारा उपरनी प्रीति उठी जाय एवी कांइ पण वस्तु आ संसारमां मने आ-

पीश नहि. मने सर्व वाते तारो पोतानो करी राख, के हुं निरंतर तारुंज अवलंबन राखीने रहुं. सुखमां तथा दुःखमां, सारी अथवा दुर्बल अवस्थामां, नीरोगी अथवा रोगी होउं ते समयमां, तथा मारां गृहकृत्य तथा लौकिक व्यवहारनां काममां, ए सघळा प्रसंगमां तने सन्निध जाणीने तथा तारे आश्रये रहीने तने प्रिय लागे एवी वर्तणुक करुं, गमे ते ठेकाणे होउं, तथा गमे तेवो प्रसंग मारे माथे आवी पडे, परंतु हुं तने न छोडतां तारे निर्माण करेले नीतिने रस्ते चालुं अने तारा विना कोईनुं अवलंबन करुं नहि. तुं चिदात्मरूप, सृष्ट वस्तुथी भिन्न, तथा सर्वांतर्यामी एक अनादि अनंत ईश्वर छे, एम मने तारी प्रेरणाथी समजायुं छे, माटे जे अधम भक्ति तथा नीची उपासनाथी तारा उपरना पूज्यभावमां अवरोध थाय, जेथी तारो महिमा घटे, तथा तारा उपरनी मारी प्रीति ओछी थाय, जेथी मारा मनोविकार तृप्त करवानी वासना वधे, तथा संसारना तुच्छ विषयो भोगववानी वृत्ति थाय, एवी उतरती जातिनां अर्चन विधानो हुं कदी करुं नहि, अने सदाकाल तारी सर्वोत्कृष्ट शुद्ध प्रेमभक्ति उपर लक्ष रहे एवो तुं मने उपदेश तथा प्रेरणा करतो रहेजे. हुं तने भूली न जाउं अने सदा एज स्मरण राखुं के आ संसारमां रहेवानो मारो मुख्य हेतु तारी कृपा तथा तारो प्रेम संपादन करवानो छे. लोक व्यवहारना काममां

पण मारो खरो लक्ष तारा उपर राखीने व्यवहार चलावुं; मारा मनमां एवा स्वार्थ लोभ के लालच उत्पन्न थाय के तेना उपर आसक्त थइने तने भूली जाउं, तो एवी वासनाओनो मारा मनमांथी समूल नाश करजे. सांसारिक भोग तथा सुख उपर अति आसक्ति न राखतां यथाघटित प्रीति राखीने तारा उपर पूर्ण अने साचो प्रेमभाव तथा दृढविश्वास रहे अने तारा सहवास विना बीजी कांइ पण इच्छा न थाय एवी मारी वृत्ति कर. हे दयालु पिता ! हुं तने नम्रतापूर्वक विनंति करुंछुं के आ संसारमां रहुं त्यां सुधी हुं तारी पराभक्तिमां तत्पर रहीने मरण समये तारा उपर लक्ष राखीने, शांत तथा आनंदमय चित्तथी मारो आत्मा तने अर्पण करुं एवी वृत्ति राखवामां तुं मने सामर्थ्य आप.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

दिंडि ९ मी.

नमन करिने हुं वंदु विश्वनाथ, नम्र भावथकी जोडुं उभय हाथ;
दीन दास जाणिने मने निभावो, हृदय ताप शान्ति वारिथी शमावो. १
वृथा नाथ गयो सर्व मनुष जन्म, नथी कांइ किधुं पुण्य कर्म धर्म;
अंतकाले मुज सुगति केम थाशे, केम अमृत धाममां प्रभू जवाशे. २
दीनबंधु दयासिंधु छो कृपाळ, मने उत्तम गति आपशो दयाळ;

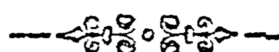
अहोनिशि हुं प्रभु भजन स्तवन गाउं, परम लाभ पामिने कृतार्थ थाउं. ३
धर्म पालन बल धैर्य मने देशो, सुमति आपि क्षमावंत तमे रेशो;
विना भक्ति नही मुक्ति कदी थाय, सदा सद्गतिनो सुचवशो उपाय. ४
तने छोडि अन्य शरण क्यां हुं जाउं, प्रेमभाव सहित प्रभु समीप आवुं;
भक्ति ज्ञानरूपि तीर्थमां हुं नाहुं, थई पावन प्रभु स्तवन भजन गाउं. ५

—<<>>—

वसंततिलका.

हे विश्वनाथ विभु सत्य समर्थ देव,
सर्वत्र व्यापि करुं नित्य तमारी सेव;
सर्वे स्थले वशि रह्या प्रभु आत्माराम,
साष्टांग नाथ तमने करु हुं प्रणाम. १
सर्वेश तारि करुणाथकि कार्य थाय,
निःशेष दुष्कृति जिवो तणि सर्व जाय;
देखुं दयानिधि दया सघळेज ठाम, साष्टांग नाथ० २
पादारविंद प्रभुना नमुं जोडि हाथ,
कृत्यो महान करवा मति मागुं नाथ;
राखुं निरंतर चिते प्रभु तारि हाम, साष्टांग नाथ० ३
जोता नथी जिवतणा अपराध पापो,
वातसल्यभावथकि पोषण सर्व आपो;

માટે તમારું કરુણાનિધિ સત્ય નામ, સાષ્ટાંગ નાથ૦ ૪
આસ્તિક્યભાવથિ નમું તમને ત્રિકાળ,
તારો ત્રિલોકપતિ મન્ન થકી કૃપાળ;
પામું પરાત્પરપદે પ્રભુ હું વિરામ, સાષ્ટાંગ નાથ૦ ૫
અજ્ઞાનપાશ કરુણાકરિં કાપિ નાંખો,
નિત્યે પ્રભુ તવ પદે મનવૃત્તિ રાખો;
ભક્તોનું પાળન કરો પ્રભુ સર્વધામ, સાષ્ટાંગ નાથ૦ ૬
સંસારમાં સકળ મંગળ કાર્ય થાય,
સંકષ્ટ વિઘ્ન ભય દુઃખ સમસ્ત જાય;
અંતે મળે સમિપમુક્તિ તણું જ ધામ, સાષ્ટાંગ નાથ૦ ૭
વિશ્વેશ છો સકળ વિશ્વ તણા વિધાતા,
ત્રાતા તમે સકળમંગળ શાન્તિદાતા;
સત્યે તમારિ કરુણાથકિ થાય કામ, સાષ્ટાંગ નાથ૦ ૮



માલિની.

શિર ચરણ નમાવી નિત્ય પાયે હું લાગું,
પ્રભુ શરણ હું આવી હેત લાવીજ માગું;
મુજ મતિજ સુધારો સિંધુ સંસાર તારો,
સુખ સકળ વધારો વિશ્વનાથા હું તારો. ૧

स्मरण शुभ तमारुं सर्व काले हुं धारुं,
उभय कर पसारु प्रेम पूरो वधारुं;
अनुग्रह न विसारुं नित्यमत्ये उचारुं,
करग्रहि करजोरे पूर्ण कल्याण मारुं. २

बहु बहु कथनो ते शुं करुं विश्वनाथ,
हृदयगत अमारी जाणि ल्यो सर्ववात;
प्रभु परम दयालु तुं पिता तुंज मात,
शुभ चरण तमारे जोडी ऊभो हुं हाथ. ३

विनययुत थईने याचना हुं करुं छुं,
चरण शिरधरीने चित्तथी वीनवुं छुं;
प्रभु परम कृपाथी भक्ति आपो तमारी,
शुभ गुण सनमार्गे वृत्ति राखो अमारी. ४

उपेन्द्रवज्रा.

महाधिराजा सुणि याचनाने, पूरी करोरे प्रभु वांछनाने;
करुं नमस्कार हुं वार वार, प्रभु उतारो भवसिंधु पार. १
प्रसन्न नित्ये प्रभु नाथ रेजो, दया करीने मति शुद्ध देजो;
विना प्रभुतुं नथि कोइ त्राता, पिता तमे पूर्ण सुखोज दाता. २

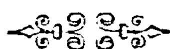
भुजंगी.

महाराज आनंददाता दयाल, दयादृष्टि छे आपनी सर्व काल;
क्षमा नाथ सर्वे करो पापकर्म, सदा आपशो नीतिना शुद्ध धर्म. १
सदा उपकारो तमारा जणाय, अमो जीवने नित्य संतोष थाय;
भरुंसो तमारो खरो छे अमारे, तमारा विना भक्तने कोण तारे. २
मनोर्थो अमे मागिये प्रार्थनामां, तमे नाथ जाणो क्रिया योग्य तेमां;
कृपानाथ छो सर्व वाते समर्थ, करो पूर्ण स्वामी रुडा सर्व अर्थ. ३



इन्द्रवज्रा.

परेश्वराहे परमेश्वराहे, भवेश्वराहे महदीश्वराहे;
दयाकृपाकारक ईश्वराहे, नमुं नमुं हुं अखिलेश्वराहे. १
जगत्पितारे सुणजो विलापो, सहाय थै संकट सर्व कापो;
क्षमा क्षमा नाथे क्षमाज पापो, कृपा कृपानाथ कृपाज आपो. २



गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

तत् सत् ब्रह्मपद, प्रणमुं हुं नित्य प्रत,
पूर्ण करो अर्थ सत्, करुणा करी कृपाल;

अखिल ब्रह्मांड विषे, प्रभुता तमारी दिसे,
वर्णन न पूर्ण थशे, अल्पमति हुं हुं बाल. तत्सत्०
अपराध छे अगाध, मुक्ति केम थाशे नाथ,
क्षमा मागुं मात तात, दीनजन प्रतिपाल;
चित्त शान्ति आपो आप, सुणी दासनो विलाप;
उपकार छे अमाप, स्मरु ते हुं सर्व काल. तत्सत्० ६

पद.

काफी ताल दीपचंदी.

अपराध क्षमा करो मारो, हुं दास तमारो. अपराध०
अनंत कोटि ब्रह्मांड रचीने, सत्ता थकी विस्तारो;
सर्व स्थले करुणाओ देखुं, मानुं बहु उपकारो,
निराधारना आधारो. अपराध० १
सद्धर्मनीतिए विचरवा, आप्यो मनुष देह सारो;
दयाघना दयादृष्टि करीने, ज्ञान विवेक वधारो;
कदी चित्तथी न विसारो. अपराध० २
हुं अपराध अगाध करुंछुं, संकल्प दुष्ट विचारो;
निग्रहशक्ति कृपा करी आपो, मंद मतिने सुधारो;
प्रबल छे मनना विकारो. अपराध० ३
श्रवण करी विनति प्रभु मारी, आशीर्वचन उच्चारो;

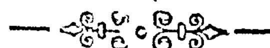
દીનદયાલ કૃપા કરી મારાં, કિલ્બિષ સર્વ નિવારો;
પ્રભુ વિના એક ન આરો. અપરાધ૦ ૪
સ્વયંભૂ જગકર્ત્તા તમે છો, જડ તુલ્ય નથી આકારો;
વેદશાસ્ત્ર પુરાણો પ્રમાણે, સત્ય કહે સૂત્રકારો,
પ્રભુ સૃષ્ટ વસ્તુથી ન્યારો. અપરાધ૦ ૫
અવગુણ સામું કદી નવ જુવો, દુઃખ દારિદ્ર્ય વિદારો;
સંકટ સમયે સહાય રહીને, સન્નિધ આવી પધારો;
લજ્જા પ્રભુ મારી વધારો. અપરાધ૦ ૬
તર્ક કરી ઋષિ મુનિયો વિરામ્યા, પામ્યા તમારા ન પારો;
અલ્પ જીવ હું સ્તુતિ શું ગાઉં, ભવસિંધુથી ઉતારો;
સફલ કરી જન્મ અમારો. અપરાધ૦ ૭
હે ઈશ્વર જગદીશ્વર સ્વામી, શક્તિ સબલ બહુ ધારો;
શરણ થઈ ચરણે હું વંદું, દીન જાણી ઉદ્ધારો,
એજ છે ધર્મ તમારો. અપરાધ૦ ૮

પદ.

કાફી જિલો. તાલ દીપચંદી.

નિયંતા નાથરે તને નમિ નમિ કરિયે પ્રણામ.
પ્રભુતા તારી ત્રિભુવનમાં વ્યાપી,
વિભુ તારો અમને સત્ય વિરામ. નિયંતા નાથરે૦ ૧
વિશ્વ તણો ઉદ્ભવ જે થકી છે,

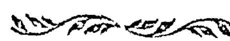
जेमां सर्व वस्तु पामे परिणाम. नियंता नाथरे० २
जीवप्रतिपालन नित्य करो छो,
प्रभुसच्चिद्घन अंतर्याम. नियंता नाथरे० ३
ए शुभ गुण उत्तम महिमानी,
स्तुति करे, ऋग् यजु अथर्व साम. नियंता नाथरे० ४
दुरित कृति नव लक्षमां लेशो,
धारो तमे करुणासागर नाम. नियंता नाथरे० ५
शरणागत सेवक जन तारा,
तारी खरी चित्तमां राखिये हाम. नियंता नाथरे० ६
श्रवण करी प्रणिपत अमारी,
प्रभु परिपूर्ण करो शुभ काम. नियंता नाथरे० ७
क्षमा करी अपराध अमारा,
आपो प्रभु सन्निध मंगल धाम. नियंता नाथरे० ८



आरति.

जयदेव जयदेव जय जय जगराया जय जय जगराया;
अति अद्भुत अकलित छे(१), प्रभु तारी माया; जयदेव० १
सकल वस्तुना नाथ, छो सत्ये स्रष्टा(२);
जिव तणि सर्व कृतीना(३), छो निश्चय द्रष्टा. जयदेव० २
मुज जिवतर छे नाथ, हाथ वधुं तारे(४);

सहू इंद्रियोना गुणोने जुवो छो, अधिष्ठाननुं ज्ञान बुद्धिथी द्यो छो;
तमे एक अध्यक्ष छो विश्वनाथ, अती नम्र भावे नमुं जोडी हाथ. ३
सुषुप्ती समे इंद्रियो लीन थाय, तमे ते प्रसंगे रहो छो सहाय;
सहू ठाम ठामे कृपा देखुं तारी, पुरा गूण गावा नथी शक्ति मारी. ४
जगत्सृष्टिमां सर्व सत्ता तमारी, कृती सर्व देखुं हुं आश्चर्यकारी;
अमे पामरो प्राणियो दुर्विकारी, स्तुती शुं करे मंद बुद्धी अमारी. ५
रवींदुग्रहोना तमे छोज कर्त्ता, महत्तत्वने आप पोतेज धर्त्ता;
अती आदरे मानवी तारि शिक्षा, नहीं मानशे पामशे दंड दीक्षा. ७
श्रुती शास्त्रथी कोइ पाम्या न पार, महीमा तमारो प्रभू छे अपार;
मती मंद शुं गूण गाउं तमारा, करो हे कृपाळु क्षमा दोष मारा. ७
गुरु छो प्रभू छो तमे स्वामि मारा, स्मरुं हूं सदा उपकारो तमारा;
तमे सर्व विद्या सुबुद्धि प्रदाता, तमे छो प्रभू सर्वना सत्य त्राता. ८
अति स्वल्प आ प्रार्थना छे अमारी, कृपाथी तमे नाथ लेशो स्विकारी;
प्रभु प्रेमथि भक्तिनुं ज्ञान आपो, दया दृष्टिथी दासनुं दुःख कापो. ९



हे षडैश्वर्यगुणसंपन्न भगवान्[1] ! हुं सानंदांतःकरणथी तारी

---

१ भगवान् एवुं परमेश्वरने विशेषण आप्युंछे. "भग" एटले गुण, षट् (छ)गुण ईश्वरमां रहेला छे माटे "षडैश्वर्य गुणसंपन्न" एवुं विशेषण भगवाननुं छे. छ गुणना नाम ॥ [१]ऐश्वर्यस्य समग्रस्य [२]धर्मस्य [३]यशसः [४]श्रियः। [५]वैराग्यस्याथ [६]मोक्षस्य षण्णां भगइतीरणा; ए छ गुण भगवान् शब्दनी व्याख्या विष्णुसहस्र

स्तुति करुंछुं; तारी अपार दयाना गुणानुवाद गाउंछु. तुं मारुं प्रतिपालन करनार तथा सकल सुखनो आपनार छुं. तुं मने सन्मार्ग बतावनार, भयसंकटथी बचावनार, तथा परलोकमां मारा आत्मानुं कल्याण करनार छुं. तारी सत्ताथी सूर्य प्रकाश पामेछे, तारी सत्ताथी चंद्रमा शीतलताथी प्राणियोनां शरीर तथा मनने शान्ति आपेछे; तारा नियम प्रमाणे असंख्य तारा तथा ग्रहगणो आकाशमां प्रकाशी रह्याछे. आ भूमंडल जोतां पृथ्वी अति सुंदर वनस्पति, औषधि, अन्न फूलफलादि सुखकारक वस्तुओथी भरपूर छे; ए सर्व तें अमारा सुखने माटे सरजावेलां छे; तुं महा समर्थ प्रभु आ भूगोल तथा बीजां अनेक ब्रह्मांडो धारण करी रह्योछे; तुं मने अन्न वस्त्र आपी मारुं पालनपोषण करेछे, सुख भोगववाने अनेक प्रकारना पदार्थो आपेछे. प्रत्येक श्वास लेती वेळा तारा अनुग्रह तथा दयानो मने अनुभव थाय छे; ज्यां ज्यां दृष्टि करुंछुं त्यां त्यां तारी दया देखायछे; प्रतिक्षणे तारुं सारापणुं तथा दयालुपणुं जोइ सानंदाश्चर्य पामुंछुं.

जगत्नी रचना तथा तेनी नियमपूर्वक योजना तारा उपकारनुं स्मरण करावे छे तथा उत्साहपूर्वक तारी स्तुति करावे

नामना भाष्यमां श्रीमत् शंकराचार्ये करी छे. अथवा बीजी भग शब्दनी व्याख्या पुराणमां करी छे ते ए छे के, [१]उत्पत्तिं [२]प्रलयंचैव [३]भूतानामा [४]गतिंगतिं [५]वेत्तिविद्या [६]मविद्यां च स वाच्यो भगवानिति ॥

छे. हे विश्वंभर विश्वनाथ! तुं सर्व चैतन्योनुं चैतन्य छे; तुं मारुं संरक्षण करे छे; मारुं सर्व उपजीवन तारे हाथ छे. हुं क्षुधातुर थाउंछुं त्यारे तुं मने अन्नपान आपीने विश्रांति आपेछे, विपत्ति तथा दुःख मारे माथे पडेछे त्यारे मारां नेत्रमां आंसु भरेलां जोइ जेम पिता पुत्रस्नेहथी पोतानां बालकोनुं आश्वासन करेछे ते प्रमाणे तुं मारां नेत्रनां आंसु तारा दयालु हाथथी लोहीने मारा मननुं समाधान करे छे; ज्यारे कोई वेला निराश थाउं छुं त्यारे तुं मने आशा तथा धैर्य आपे छे; आ संसारना लोक स्वार्थ अथवा द्वेषथी मारो त्याग करे छे त्यारे तुं मारी पासे आवीने मने सहाय थई मारा चित्तने आनंद आपे छे. मारी वृत्ति पापकर्म करवानी थाय छे त्यारे तुं मारा मनने चेतावे छे के आ कुकर्म न करवुं. आ तारी केटली बधी दया छे! एनो हुं विचार करुंछुं तो तारा उपकार कही बतावबानी मारामां कांई पण शक्ति नथी. हुं क्या शब्दोथी ए उपकार कही बतावुं? हुं तने भूली जाउंछुं अने तने बोल्लो नथी तोपण तुं मारी संभाल लेवानुं भूली जतो नथी. हुं दोष भरेलो छुं, तथापि तुं तारी कृपाछाया नीचे मने राखे छे; अने जेमां मारुं सारुं तथा कल्याण थाय तेम तुं करे छे; हे दयाल! तारी दयानुं कोण वर्णन करी सके? तारी मारा उपर अपार दया तथा अपरिमेय

સુતનાત્સલ્યતા છે. તારા ઉપકારસ્મરણપૂર્વક હું તને સાષ્ટાંગ પ્રણામ કરૂંછું.

હે દયાસાગર જગદીશ્વર ! આ ભૂગોળના સર્વ દેશમાં લોકોને તારા શુદ્ધ, સત્ય અને કરૂણામય સ્વરૂપનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય; પાખંડી, ઢોંગી, ખોટા, અને નાસ્તિક પંથોના સત્ય નાશ પામે; અને સત્ય ધર્મના સૂર્યનો ઉદય થઈને સર્વ કુટુંબ, સર્વ દેશીજન, તારી શુદ્ધ ઉપાસના કરી તારા મંગળનામોચ્ચારણ પૂર્વક તારી પ્રાર્થના કરે અને તારો પ્રતાપ, તારો મહિમા, જગત્‌માં વિસ્તાર પામે એવું કરો. હે ભગવન્ ! તવ જયોસ્તુ જયોસ્તુ જયોસ્તુ

તારો જય હો જય હો જય હો.



હિંડિ. ૧૦

અદ્વિતીય પરમ બ્રહ્મ તમે સત્ય, તમે કીધું સકળ સૃષ્ટિતણું કૃત્ય;
રચી રચના સહુ સૃષ્ટિ વિષે સારી, દિસે સર્વ ઘટિત યોજના તમારી. ૧
જોઉં દેહતણો યંત્ર જો વિચારી, સર્વ યુક્તિ દિસે પરમ ઉપકારી;
જીવ દેહતણો ધર્મ પૃથક સત્ય, દેહ નાશવંત જીવ સદા નિત્ય. ૨
દેહ સાથ જીવ જો વિનાશ થાય, સૃજનહાર તણો હેતુ વ્યર્થ જાય;
ન્યાયકારિ દેવ ન્યાય કરે સત્ય, જીવ પામે ફળ જેવું કરે કૃત્ય. ૩
તીર્થસ્નાન થકી પાતક નહિં જાય, નહીં શ્રાદ્ધથકી પિતર તૃપ્ત થાય;

मुक्ति पामवानुं ए नथी विधान, ब्रह्मप्राप्ति नहीं थाय विना ज्ञान.४
ज्ञान सत्य प्रभु ध्यान थकी थाय, परा भक्ति एज मुक्तिनो उपाय;
चित्त शुद्धि विना व्यर्थ बाह्य कर्म, नीतियुक्त पराभक्ति एज धर्म.५
जगत सत्य जीव कर्म विधिस्थान, जेवुं कृत्य तेवुं पामवुं निदान;
पुण्य प्राणि पुण्य धाममां विरामे,सर्व पापि जीव सत्य पतन पामे. ६
देह जीवतणो योग भंग थाय, सगां मित्र कोइ संग नहीं जाय;
सर्व स्नेहि जनो मागशे विदाय, थशे धर्म एक मात्र तो सहाय. ७
नथी मारुं आ विश्व चिरस्थान,थशे भावि काळ जीवने निदान;
मरण वेळा प्रभुतुंज सत्य त्राता, नथी नाथ कोइ अन्य मुक्ति दाता८
कदी नाथ जुवो मारि क्रिया सामुं, भक्तिहीन दीन मुक्ति केम पामुं;
राखुं पतिज आपनी हुं नाथ भारे, भक्त वत्सल प्रभु भवथकी उतारे. ९
करुं भक्ति सदा शुद्ध चित्त भावे, दया पूर्ण वसे नाथने स्वभावे;
महाकष्टसमय नाथ तमे धाओ,प्रेम पात्र राखी हाथ तमे साओ. १०

दोहरा.

सत्ताथी जे व्याप्त छे, जेथी थाय प्रकाश;
स्थूल वस्तुथी पार जे, परब्रह्म अविनाश. १
एवा श्रेष्ठ महेशने, प्रणमुं वारंवार;
दीन दास जाणी सदा, कृपा करो विस्तार. २

उपजाति.

जगत्‌बंधु जे बळथी प्रकाशे, जेना प्रतापे स्थितिमांज भासे;

प्रभुनुं प्रभुत्व जाणी प्रेमभक्तिभाव आणी,
अमे सर्व अल्प प्राणी प्रणमिए लागी पाय. मंगल समय० १

पद.

सोरठ. त्रिताल.

प्रभुता तमारी छे मोटी, प्रभु परमात्मारे प्रभुता०
जगरचना अति गहन कीधीछे, क्षति नथी किंचित् खोटी. प्रभुता० १
जड चैतन्य विषे प्रभु भासे, अद्भुत तारी हथोटी. प्रभुता० २
आ संसारे जन्म आपीने, जुओ अमारी कसोटी. प्रभुता० ३
कृपाघना करुणा करशो तो, नव लागे दुःख सोटी. प्रभुता० ४
तुज पदपंकजमध्य अमारी, वृत्ति निरंतर च्होंटी. प्रभुता० ५
करद्वय जोडी प्रभु तुज चरणे, करिये प्रणामो कोटी. प्रभुता० ६

पद.

सोरठ त्रिताल.

परब्रह्म प्रणाम करुं तमने त्रिविधि परिताप शमावो सदा. पर०
सद्गुणथी भरपूर प्रभु सर्वेश्वर सम सुबुद्धिप्रदा,
अवगुण दोष असंख्य करुं करुणाविण नाथ गति न कदा. परब्रह्म १

पद

सोरठ. पंजाबी.

तारोरे दयाल मने दीन गणी तारोरे;
शरण आवीने हुं, करुंछुं पोकारोरे दयाल०

दूर त्वरित करो दुर्मति प्रभु, बालक छुं अज्ञानरे,
बालक बालक बालकरे, क्षण क्षण क्षण मानुं प्रभु उपकारोरे;

आरति. दयाल. १

जयदेव जयदेव जयजयजयकारी जयजयजयकारी
जगदुत्पादक पालक (२) शक्ती सकल धारी जयदेव० १
दृढतर छे विश्वास प्रभुपदमां अमने (२)
आशय भक्त जनोनो (२) सर्व विदित तमने जयदेव० २
मंगलकारि महेश मंगलगुण आपो (२)
आज्ञांकित सेवकनां (२) संहरशो पापो जयदेव० ३
जगतारक जगनाथ जगदीश्वर दाता (२)
संकट दुख भयहारक (२) सर्वजनत्राता जयदेव० ४
सगुणरूप साक्षात् साष्टांगे नमिये (२)
वाक्कायामनथी प्रभु (२) भक्ति विषे रमिये जयदेव० ५
प्राणपति परमेश प्रणिपतने सुणशो (२)
अनुग्रहथकी अमारा (२) अवगुण नव गणशो जयदेव० ६
पूर्ण कृपाथकि नाथ निर्मल मन करशो (२)
प्रेमल भक्ति तमारी (२) हृदय विशे भरशो जयदेव० ७
अति अद्भूत अचिंत्य छे प्रभुनी शक्ति (२)
आ लोके सुख आपो (२) परलोके मुक्ति जयदेव० ८

अंक ११ मो.



ललित.

प्रणमुं हुं परब्रह्म देवने सुमति आपशो सर्वदा मने;
प्रभु धरो षडैश्वर्य लक्षणो, भवपति प्रभु, प्रार्थना सुणो. १
परम ब्रह्मनुं, गान गाउंछुं, अति कृतार्थ हुं नाथ थाउंछुं;
दिन तणां करो नित्य पोषणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. २
अनुग्रहो करोछो तमे सदा, नव वळी सके पाड तो कदा;
प्रभु करो सदा भक्तरक्षणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. ३
अनितिदुष्कृती में किधी अति, शरण छुं मने द्यो रुडी मति;
दुर करो दयानाथ दुर्गुणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. ४
भ्रमित छुं प्रभु भ्रांतिसागरे, तुजविना नहीं हाथ को धरे;
सबल सेतु छे तुं दया तणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. ५
प्रभुप्रसादथी पूर्णता मळे, प्रभुप्रसादथी दीनता टळे;
प्रभुस्वभावमां छे दया गुणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. ६
भय विपत्ति संकष्टने समे, सहनशीलता आपशो तमे;
दिनजनो तणां दुःखने हणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. ७
प्रभुकृपाद्रुमोनी लता निचे, सुखनिवास द्यो रे दयानिधे;
नव जुयो तमे जीवदूषणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. ८

सुहृद बंधुनी सन्मती करो, दुरजनो तणी दुर्मती हरो;
सुचवशो मने सर्व सद्गुणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. ९
शुभ पदाब्ज हुं नित्य देवनां, प्रणमि अर्पुछुं पुष्प प्रेमनां;
सकलशांतिनी आशिषो भणो, भवपति प्रभु प्रार्थना सुणो. १०

हे जगत्कर्त्ता कृपालु पिता! आ समये अमे अमारा हृदयमां तारुं मंगल ध्यान करीने तने प्रेम सहित प्रणाम करिये छिये. आ संसारमां अमने जन्म आपवानो तारो केवो रूडो अने गंभीर हेतु छे, अने अमारां कर्त्तव्य कर्म संबंधी उत्तर आपवानुं काम केटलुं भारे छे, तेनो अमे विचार करिये छिये त्यारे अमे केवल लज्जायमान तथा भयभीत थइये छीए, कारण के अमारे अहीं आवीने जे करवुं जोइये ते कांइ कर्युं नथी; तारा प्रत्ये अमारो शो धर्म छे, अमारा मित्र तथा मनुष्य भाइओ प्रत्ये अमारो शो धर्म छे, तथा अमारे पोते अमारा आत्माना कल्याणने अर्थे शी रीते वर्तवुं जोइये, ते सघळा धर्म अमे जाणिये छिये, ते छतां ते धर्म जेवा जोइये तेवा बजावी सक्या नथी; सारासार विचार करवाने तें अमने विवेकबुद्धि आपी छे तथापि तेनी प्रेरणा प्रमाणे चालवाने अमे पूर्ण लक्ष आप्यो नथी, ए अमारो केटलो भारे अपराध छे! हे मंगलमय प्रभु! अमारा शरीरनी तथा मननी नबळाई तुं जाणेछे. अमारां कुकृत्य सामुं

न जोतां तारा दयाळु स्वभावथी अमारा उपर दयादृष्टि करीने अमारा सघळा अपराध क्षमा कर, अने अमारा आत्मानुं कल्याण थाय एवो मंगल मार्ग अमने बताव. अमे पतित छिये, तथापि तुं अमारुं रक्षण करे छे, ए तारो अमारा उपर मोटो उपकार छे. हे प्राणदाता प्राणरक्षक ! अमे तारे शरण छिये. तैं अमने जीव आप्यो छे. पितानी पुत्र उपर प्रीति होय छे, ते प्रमाणे तारां दीन रंक बालक उपर प्रेम राख. परिणामे सर्व प्राणियो तारा मंगल धामे आववानां छे. अमारा देह तथा आत्मानो संबंध छूटे त्यारे ऊजळे म्होंए तारे पवित्र धामे आवी सकाय एवी वर्तणुके चालिये, तारी आज्ञा पाळिये, अने तने विसरी न जइये, एवी सदाकाल अमने प्रेरणा कर. सद्गुणी थवानो अमे श्रम तथा उद्योग करिये तेमां तुं सहाय रहे. तने सदाकाळ सन्निध जाणीने अमे सद्धर्मे चालिये एवुं अमने सामर्थ्य आप. आ अमारी मागणी, हे जगदीश्वर ! तुं कृपा करीने अंगीकार कर.

हे मंगलमय महाधिराज महासमर्थ सर्वव्यापक सच्चिदानंद परब्रह्म परमेश्वर ! अमे तारे पवित्र चरणे प्रेम सहित अभिवंदन करिये छिये. आ जगत् ताराथी उत्पन्न थयुं छे, अने तुं जीवोनुं रक्षण करे छे. अमे तने जोइ सकता नथी, पण तुं अमने जुवे छे. आ जगत्मां तारा सरजेला सर्व पदार्थोमां तारी यो-

जना तथा शरीरपिंजरमां गोठवेली घटित वस्तुओ तथा तेमां मूकेली यांत्रिक युक्ति, तथा आकाशमां ग्रहमंडलनी शोभा तथा तेओना भ्रमण तथा अस्तोदयना सुंदर नियमो निरखवाथी तारी अपार शक्ति, अपार डहापण, अने अपार करुणा छे एम असे समझिये छे. तुं जाणे आ ब्रह्मांड रूपी पडदानी पाछळ रहीने करुणाभरेली विशाळ दृष्टिथी तारी रचेली विश्वरचनाने जुवे छे. हे दयानिधि ! असे निर्मल मनथी तारुं ध्यान धरी तारो महिमा गाइये छिये.तारी साची अने प्रेम सहित भक्ती ए अमो जीवोनो धर्म छे; परंतु हे दिव्यपिता! असे अमारा धर्मथी केटला वधा आडे रस्ते चल्या छिये तेनो विचार करिये छिये त्यारे असे केम बचीशुं, अमारी बले शी थशे, एवा विचारथी भयभीत थइये छिये. जाणे अजाणे थयेलां अनेक पापनी क्षमा मागी हवे पछी अपराध नहि करवानुं वचन आपीए छिये. असने रूडो मार्ग देखाड. तारी दया विना असने पांशरो पंथ जडवानो नथी; माटे भूलां पडेलां तारां रंक बालकोनी दीनवाणी सांभळी असने पवित्र अने रूडो मार्ग बताव. तथास्तु.

ढिंढि. ११

दिव्य देव तमे परम उपकारी, करो श्रवण प्रभू प्रार्थना अमारी;
पुण्यकार्य विषे राखुं हुं प्रवृत्ति, तुच्छ विषय थकी पामुं हुं निवृत्ति. १

पराभक्तिथकी मुक्तिये जवाय, सर्व शास्त्र विषे एज छे उपाय;
वृथा मनुषजन्म सर्वथा न जाय, सदा जनहितार्थ कार्य जो कराय. २
देवइच्छाअनुसार सदा चालुं, नीतिनियम प्रीतिपूर्वके हुं पाळुं;
शिरे आवे अति दुःखनो प्रसंग, नहीं थाय कदी नीतिनियमभंग. ३
करुं सर्वकाळ सज्जनसत्संग, धर्मकार्यअर्थ अर्पु मारुं अंग;
एवि सुमति दयासिंधु मने देशो, सर्व समये संभाळ तमे लेशो. ४
सर्वशक्तिमान देव दयाधारी, नम्र विनति तमे सांभळो अमारी;
विकट विश्वपंथ घांटि महा भारे, दयानाथ विना कोण मने तारे. ५



स्त्रग्धरा.

शांती रूपे विराजो शुभवरद विभु स्वामि विश्वाधिभूप,
सत्ता सर्वत्र धारो सकल सुख करो सर्वना साक्षि रूप;
भक्तोनुं श्रेय कर्त्ता सकल भयहरा भक्तिमार्गे जणाओ,
एवा कारुण्यमूर्त्ति, प्रभुपद नमिने, नित्य मागुं कृपाओ. १

शार्दुलविक्रीडित.

वंदुं हुं परमेश व्याप्त विभुने वंदुं जगाधीशने,
वंदुं सर्वशरण्य सत्यपदने वंदुं सदा ईशने;
वंदुं देव दयानिधी विभुवरा वंदुं हुं विश्वेशने,
वंदुं हुं परमात्म पूर्ण प्रभुने वंदुं परब्रह्मने. १

जेनी सर्व ऋषी मुनी स्तुति करे स्तोत्रे महासुंदरे,
वेदोथी महिमा महान उचरी भक्तीपथे संचरे;
जेनुं ध्यान धरे निरंतर मने योगीजनो जे बधा;
जेनो अंत अनंत पामि न सके ते ब्रह्म वंदुं सदा. २
जे इच्छा थकि भुमि पर्वत जलो तरुओ थयां दीपितां;
जेणे सूर्य शशी ग्रहादि भुवनो कीधां बहु शोभितां;
जे सत्ता थकि राशि चक्र भगणो भासे महामंडले,
ते विश्वेशतणी अचिंत्य गतिने जीवो करी ना कळे. ३
जेणे विश्व विषे विचित्र कृतिथी वस्तु सजावी बधी,
जेनी नित्य प्रते प्रजापर दिसे प्रीती दयाओ घणी;
जे छे सत्य समर्थ कार्य करवा कारुण्यमूर्त्ती सदा,
ते विश्वंभर सर्व पूर्ण करशो भक्तोतणी कामना. ४
जेनी शक्ति समस्त विश्व पसरी, जेमां दया छे भरी,
जेमांथी अतिश्रेष्ठ सृष्टि निसरी, जेथी स्थितीमां रही;
जेनो पार अपार को नव कळे सत्ताथि व्यापे सदा,
एवा ब्रह्म समर्थ सत्य प्रभुने नित्ये करुं वंदना. ५
विश्वाधीश वरिष्ठ नित्य तमने हर्षे करीने नमुं,
अंतर्यामि समर्थ नाथ तमथी शुं गुप्त राखी शकुं;
हुं अज्ञान प्रभूमहानमहिमा विस्तारथी शुं कहुं,
वाणीनो हुं विलास मात्र करीने विश्वास तारो धरुं. ६

तारो नाथ अनाथ दीन मुजने दृष्टी दयानी करो,
प्रेमेथी प्रतिपालना करि प्रभू संताप सर्व हरो;
आपोरे वरदान मान मुजने सामीप्यमुक्ती तणुं,
सर्वज्ञ प्रभु शक्तिमान तमने शुं हुं कहुं रे घणुं. ७
द्रव्यादी सुख भासिनी प्रभु मती जेवी रहेछे घणी,
तेवी वृत्ति हृदे निरंतर रहो तारीज भक्ती तणी;
नित्ये ध्यान रहे तमारुं अमने एवी मती आपशो,
राखीने शरणे सदा शिघ्र तमे संकष्ट सौ कापशो. ८
पूर्णात्मा परमेश ब्रह्म विभु जे सर्वत्र व्यापी रह्या,
जेना सात्विक पूर्ण शुद्ध गुणने सच्छास्त्रमां वर्णव्या.
एवा स्वामि समर्थ सत्य तमने पाये हुं लागी सदा,
मागुछुं शुभ धर्म कर्म करवा सद्बुद्धि सद्वासना. ९
ब्रह्मांडाधिपती नमुं विनयथी विद्यापती भूपति,
भक्ति ज्ञान विवेक शांति शुभती आपी करो सद्गति;
पूरो सत्य सदर्थ सर्व जनना विश्वास राखुं सदा,
दीनानाथ दयाथि दूर करशो दारिद्र्य दुःखापदा. १०
स्वामी सर्व समर्थ सत्य सघळी संपूर्ण सत्ता धरो,
मिथ्या मानुषियत्न जाय सघळुं ज्यारे कृपा ना करो;
माटे हुं निज दास आश धरिने मागुं तमारी कृपा,
कार्यो श्रेष्ठ विषे सहाय रहिने संतोष आपो सदा. ११

बांधीछे अवधी त्यहां लगि मती जीवो तणी चालशे,
तेथी पार गये घणो भ्रम थशे भ्रांती बहू भासशे;
माटे ते अवधीज मध्य रहिने धर्मध्वजा धारवी,
शिक्षाओ प्रभु तारि मान्य करिने नीती न वीसारवी. १२
जोडीने प्रभु हाथ नाथ तमने, नित्ये करुं प्रार्थना,
प्रीती पूर्ण करो पुरो प्रभु तमे सर्वे रुडी कामना;
कीधां कर्म अमे समस्त नबळां संभालि लेशो मने,
आव्योछुं शरणे कृपानिधि बधी लज्जा रहीछे तने. १३
सर्वात्मा प्रभु तूं विना नहि बिजो आधार आश्रो धरुं,
प्रेमेथी तमने प्रणाम करिने नित्योपकारो स्मरुं;
लज्जा छे तुज हाथ नाथ चितमां दोषो न वीचारशो.
ऐहामुष्मिक आपिने सुख मने संसारथी तारशो. १४
सर्वात्मा सकलेश्वरा सुखकरा सर्वज्ञ सच्चिद्घना,
सर्वांतर्गत सत्य नित्य विभु छो सन्मार्गबुद्धिप्रदा;
सृष्ट्युत्पत्तिस्थिति प्रपालनगुणो धारो तमे सर्वदा,
साष्टांगे नमि नाथ नित्य तमने मागुं हुं पापक्षमा. १५



उपेंद्रवज्रा.

अपार लीला प्रभु छे तमारी, न चालशे त्यां गति तो अमारी;
तमे दयालू अति उपकारी, स्थिती अमारी प्रभु ल्यो विचारी. १

विदीत छे सर्व अमारि वात, प्रसन्न रे'शो विभु विश्वनाथ;
मनोर्थ माग्या प्रभु प्रार्थनामां, स्विकारशो अर्थ घटीत तेमां. २
क्षमा करी नाथ समस्त पापो, दयानिधे सन्मति नित्य आपो;
प्रभू अमारा नहि दोष जोशो, कृपा करी आशिष पूर्ण देशो. ३



गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.

सगुण समर्थ सत्य प्रभुने स्मरुं हुं नित्य,
आपो धर्मनीतिव्रत वंदुंछुं हुं वारवार,
निरंजन निराकार नित्य शुद्ध निर्विकार,
शक्तिनो न पामुं पार मानुं प्रभु उपकार. सगुण समर्थ०
भवपति भगवान तमे पूर्ण बलवान,
विश्वमां विराजमान विनति करो स्वीकार;
सुणी प्रार्थना त्वरित मति द्यो मने पुनीत,
पावन करी पतित करशो तमे उद्धार. सगुण समर्थ० १

पद.

नट, ब्रह्मताल.

जय जगत्राता जगतप्रख्याता त्रिभुवनत्राता;
तुज शुभ गुण ऋषिमुनिजन गाता, सन्मतिदाता. जय जगत्राता०

एक तमे अद्वितीय अजाता अकल अबाधा;
कर्ता अद्भुत कृतिथी गणाता विश्वविधाता. जय जगत्राता० २

साक्षि सदा सच्चिद्घन ज्ञाता शुभ गुण धाता;
नव कादि मन बुद्धिथी कळाता दीनजन नाथा. जय जगत्राता० ३

ब्रह्म परात्पर मुक्तिप्रदाता प्रभु सुख मनाता;
प्रेम थकी प्रणमुं पितुमाता प्रभु साक्षाता. जय जगत्राता० ४

पद.

काफी, दीपचंदी.

जगदीशने शीश नमावुं, प्रभुमनभावुं, जग०
मैं अवगुण अपार किधा जे, गिणतथी शुं हुं गणावुं;
क्षमा प्रभु करुणा करी करशो, बहु कहीने शुं जणावुं.
किंधुं अन्य शरण हुं लावुं. जगदीश० १

जेवी स्थितिमां अहिं मने राखो, तेवी स्थितिथी निभावुं;
विधिनिषेधना नियमो मानुं, भक्तिनो भाव विभावुं,
तोज प्रभुने मनभावुं. जगदीश० २

दीनदयाल स्वभाव तमारो, ए मन धैर्य धरावुं;
प्रभुशुभचरणे प्रेमभक्तिनां, पुण्य सदैव वधावुं,
दुरित कर्म सर्व हठावुं. जगदीश० ३

शमदमादिकसाधन तीर्थे, स्नान करी शुद्ध थाउं;
विश्वपतिनुं स्मरण करीने, नीतिपंथे नित्य जाउं,
प्रभुकृपामृतफल खाउं. जगदीश० ४

वृत्ति स्वच्छ पवित्र राखीने, सर्व विकारो समावुं;
ए शुभ शुद्ध मने मति आपो, मंगल गुण हुं गाउं,
अंते प्रभु धामे आवुं. जगदीश० ५

आरति.

जयदेव जयदेव जय मुक्तिदाता जय मुक्तिदाता,
सर्वांतर्गत ज्ञाता (२), सृष्टितणा धाता; जयदेव० १
लीला तारि अपार अति अद्‌भुत भासे (२),
अतुल पराक्रम तारुं (२) नव वर्णन थाशे; जयदेव० २
अनुपम छे औदार्य उत्तम मति आपो (२),
विश्व विषे विश्वेश्वर (२) सद्धर्म स्थापो; जयदेव० ३
सर्वाधार समर्थ शुभ सन्मतिदाता (२),
अति करुणामय गुणथी (२), प्रभु छो प्रख्याता; जयदेव० ४
अवगुण दोष अपार मनमां नव धरशो (२),
सुतवात्सल्य स्वभावे(२), संरक्षण करशो. जयदेव० ५
जगदाधीश दयाल द्यो चितने शांति(२);
करुणा करि करशो प्रभु(२), पापतणी क्षांति. जयदेव० ६
सदाकाल सर्वेश सद्धर्मे रहिये(२);
ए निर्मल मति आपो(२), विनति करि कहिये. जयदेव० ७
प्रेमभक्तिथी नाथ नित्य करिये सेवा(२);
पावन करि सेवकने(२), द्यो सद्गति देवा. जयदेव० ८



अंक १२ मो.

अहो विश्वनियंता नाथरे, नमुं नमुं;
तमने जोडीने बेउ हाथरे, नमुं नमुं. १
सर्व प्राणीतणा मात तातरे, नमुं नमुं;
तमे जाणो अंतरनी वातरे, नमुं नमुं. २
परब्रह्म प्रभु परमेशरे, नमुं नमुं;
विश्वव्यापी विभु विश्वेशरे, नमुं नमुं. ३
सर्व सृष्टितणा आधाररे, नमुं नमुं;
एक नित्य अखंड अपाररे, नमुं नमुं. ४
नमुं आद्य अनंत अविकाररे, नमुं नमुं;
नमुं विश्वपतिने वारंवाररे, नमुं नमुं. ५
तारी सत्ता सृष्टिमां जणायरे, नमुं नमुं;
कळा तारी कोथी न कळायरे, नमुं नमुं. ६
महा मुनिनी मति तो भमायरे, नमुं नमुं;
स्तुति तारी ते हुंथी क्यम थायरे, नमुं नमुं. ७
दीनबंधु छो तमे दयावंतरे, नमुं नमुं;
तमे रहो सदा क्षमावंतरे, नमुं नमुं. ८
तमे सच्चिद्घन अविनाशरे, नमुं नमुं;
पुरो भक्तनी सर्व रुडी आशरे, नमुं नमुं. ९

तमे दयासिंधु छो दयालरे, नमुं नमुं;
सदा सेवकनी ल्यो संभाळरे, नमुं नमुं. १०
तमे सात्विकगुणनिधानरे, नमुं नमुं;
करो नित्य कुशल कल्याणरे, नमुं नमुं. ११
आवुं चरणसमीप हुं बालरे, नमुं नमुं;
प्रतिपालन करो कृपालरे, नमुं नमुं. १२
प्रेमभावथी प्रभु पाय लागुंरे, नमुं नमुं;
पापकर्मनी क्षमा नित्य मागुंरे, नमुं नमुं १३
मागुं कृपा तमारी महाराजरे, नमुं नमुं;
राखो दास तणी तमे लाजरे, नमुं नमुं. १४
एक आश्रय धारुं तारो सत्यरे, नमुं नमुं;
नथी के'वानी बधु अगत्यरे, नमुं नमुं. १५
दुष्ट दुरित सर्व कर्म कापोरे, नमुं नमुं;
नीति धर्म तमे मने आपोरे, नमुं नमुं. १६
उपकार करोछो अत्यंतरे, नमुं नमुं;
शरणे राखो मने भगवंतरे, नमुं नमुं. १७
सर्व कार्य करवा छो समर्थरे, नमुं नमुं;
कृपाविना न सरे कांई अर्थरे, नमुं नमुं. १८
तमे सत्य सर्वज्ञ शक्तिमानरे, नमुं नमुं;
मने आपो अभय वरदानरे, नमुं नमुं. १९

जय जय जय जगताततरे, नमुं नमुं;
जय जय अचिंत्य अजाततरे, नमुं नमुं. २०
नमुं नमुं हुं नमुं दिन निशरे, नमुं नमुं;
कृति साधुं न जोशो जगदीशरे, नमुं नमुं. २१
मानुं तारो बहु उपकाररे, नमुं नमुं;
करो विनति तम अंगीकाररे, नमुं नमुं. २२
करो दृत्ति विमल विश्वनाथरे, नमुं नमुं;
करो क्षमा महा अपराधरे, नमुं नमुं. २३
शिरसाष्टांग करुं हुं प्रणामरे, नमुं नमुं;
कृपासिंधु पुरो शुभ कामरे, नमुं नमुं. २४



हे ज्ञानसिंधु, हे दयासागर, हे परम कृपालु भगवान्! अमे तारे शरणे आव्या छिये. तमने पगे लागी वरदान मागीए छीए के अमने सदाचार पाळवानी मति आपो. तमारी दयाथी अमने ज्ञान थयुंछे के साचाई, प्रमाणिकपणुं, न्याय, दया, क्षमादि सुनीतिना गुणो अमारामां हशे तोज अमे तारी कृपा संपादन करवाने लायक थइशुं. अमारी खातरी थइ छे के कुकर्मो करीशुं नहि, दुर्गुणो तजीशुं, अने सदाचार पाळी तारी भक्ति दृढ श्रद्धाथी करीशुं, तोज अमारुं कल्याण थशे; माटे सदाकाळ सद्गुणो अमे पाळिये, कोइ साथे वैरभाव राखिये

नहि, विपत्ति तथा दुःखनी वेळा धीरज राखी तारो आश्रय मागिये, दोलत अधिकारादिना अभिमानथी चढी जइये नहि, सर्व मनुष्य भाइयो साथे सभ्यता, नम्रता, अने सलाह संपथी चालिये, दररोज तारी भक्ति तथा उपासना करीने तारी अ-मारा उपर दया कृपानो उपकार मानिये, गमे तेवुं संकट पडे पण तने अणगमतां काम करिये नहि एवी रीते रुडी चाले चालवानुं अमने सामर्थ्य आप. हे करुणासागर! तारी अमारा उपर घणीज दया छे. कादि कोइ वखते अमने दुःख पडे छे, पण तेनो जो अमे पूरो विचार करिये तो ए दुःख पडवामां पण तारी दयानो संकेत होय छे. परम पिता ! तुं केवो दयालु छे ! तारो अमारा उपर दयाभाव छतां अमे तने भूली जइने अवळे रस्ते चालिये छिये. अमारां सत्कर्म घणांज थोडां छे, माटे तेनुं फळ मागवानो अमारो कांइ दावो नथी, अने फळनी इच्छा राख्या विना सत्कर्मो करवां ए अमारो धर्म छे, तथापि अमे भूलीए छीए. अमारे तो एटलुंज बोलवुं जोइये के अमे अपराधी छिये, अमे अपराधी छिये.

आ संसारमां अमारे सदाकाळ रहेवानुं नथी. अमारा भाविकालनी अमने खबर नथी. मरणवेळा तारा विना अमारो कोई त्राता नथी. परलोकमां अमने सद्गति आपवानुं तारे पोतानेज हाथ छे. तुं सर्व शक्तिमान् छुं. तारा प्रसादथी प्रभु-

रवायु वाय छे, तारा प्रसादथी समुद्रनां तरंगो उछळे छे, तारा प्रसादथी आ सर्व विश्व प्रकाशी रह्यु छे. तने पूज्य मानी तारी भक्ति करवी ए अमारो धर्म छे. तारे कशानी अपेक्षा नथी. अमारुं आधीनपणुं बतावी तारी प्रार्थना करवी ए गुण अमारा आत्माना कल्याणने अर्थे अमारा आत्मामां स्वाभाविक रीते ते मूकेलो छे; एवुं छतां अमे तारी प्रार्थना न करिये तो अमे ठगारा तथा धर्मभ्रष्ट कहेवाइये; माटे प्रेमपूर्वक तारी भक्ति तथा प्रार्थना करवानुं भूली जइये नहि एवी अमारा अंतःकरणमां चेतवणी आपतो रहेजे.

हे महाप्रतापी कृपालु परमेश्वर ! अमे साचा अने पवित्र अंतःकरणथी तारुं ध्यान करी, श्रद्धारूपी चंदन अने भक्ति रूपी अक्षत, तारे मंगलचरणे अर्पण करी तने प्रेमपुष्पनी माळा चढावी अमे अमारी प्रार्थना समाप्त करिये छिये. तुं प्रसन्न चित्तथी अमारुं संरक्षण कर.

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

दिंडि १२ मी.

सर्वव्यापि सर्व जीवना शरण्य, विश्वरचना विभु सर्वछे वरेण्य;
सृष्ट वस्तुथकी भिन्न तमे एक, सकल विश्वमां कियो रुडो विवेक. १
तमे ज्ञानवान नित्य निर्विकारी, सृष्ट वस्तु तुल्य मूर्ति नथी तारी;

पूर्ण ब्रह्म परम ज्योति दीप्तिमान, यथा घटिल किधुं सृष्टिमां विधान.२
नहीं पुरुष नहीं नारि रूप धारो, नहीं थाय नाथ जन्म तो तमारो;
नहीं तुलना प्रभु कोइ साथ थाय, नाहिं प्रतिमा प्रभु तारि तो जणाय.३
देशकालथी अतीत छो अपार, मनुष कल्पना न चालशे लगार;
अजर अमर तमे एक छो असंग, महत्तत्वनो न थाय कदी भंग. ४
सर्व साक्षि तमे छो स्वयं प्रकाश, शुद्ध मुक्त सत्य चिद्घन अविनाश;
भक्तिभावथकी राखुं हुं विश्वास, तमे पूर्ण करो दिन जनअभिलाष. ५



उपेन्द्रवज्रा.

परातपरा ब्रह्मपदे हुं नित्ये, नमी विनंती करुं एक चित्ते;
सुणो तमे प्रार्थन मंत्र जापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. १
विना प्रभू तुं नथी कोइ अन्य, विना प्रभू तुं नथि को शरण्य;
विना प्रभू कोण सुणे विलापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो.२
जगत्क्रिया तुं थकि सर्व चाले, विना प्रभू शक्ति न पत्र हाले;
प्रकाश पाम्या प्रभुना प्रतापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ३
दिसे तमारी सघळी लिलाओ, दिसे तमारी सघळी क्रियाओ;
दिसे तमारी करुणा अमापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ४
कृपाथकी मंगळ कार्य थाय, कृपाथकी सर्व अरिष्ट जाय;
कृपाथकी जाय त्रिवीधि तापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो.५

करुं तने अर्पण सर्व कर्म, निभावि त्यो जाणि प्रभु स्वधर्म;
कृपाकरी संकट सर्व कापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ६
दयाघना अंकित छुं तमारो, दयाथि दोषो सघळा निवारो;
शिरे अमारे वरहस्त थापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ७
सदा तने वंदन विश्वनाथ, अमे करीए प्रभु जोडि हाथ;
क्षमा करो नाथ समस्त पापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ८

शार्दूलविक्रीडित.

हे विश्वेश्वर हे जगत्त्रयगुरू सर्वज्ञ सच्चिद्घना;
कौटुंबी जन मित्र बंधु सघळा जे आ जगत्मां रह्या;
आ देशे वसता विदेश फरता प्राणी समस्तो तणां,
पापो सर्व क्षमा करी प्रभु तमे संतोष आपो सदा.

शालिनी.

प्रभुपरपद मोटुं मोक्षकल्याणदाता,
ऋषि मुनि जन सर्वे चित्तथी नित्य गाता;
करगरि प्रभु मागुं कष्टने कापि नांखो,
शरिरपतन वेळा पाळिले पास राखो. १
अखिलभवपतीनी प्रार्थना पुण्यकारी,
सकलदुरितहारी सर्वदा श्रेयकारी;

भणि भजन करुंछुं चित्तने शान्ति आपो,
चरणशरण राखी संहरो सर्व तापो.

सेनिका.

विश्वनाथ नित्य शुद्ध मुक्त छो, सर्वव्याप्त पूर्ण ब्रह्म सत्य छो;
प्रेम भक्तिथी नमुं परात्परा, सत्य ज्ञान आपशो प्रभू वरा. १
सर्वकाल ध्यान तारुं हुं धरुं, नित्य धर्मकार्यमां हुं संचरुं;
मागुंछुं सहाय तारि चिद्घना, सिद्ध थाय वाञ्छितार्थ कामना. २
नम्र भावथी विनंति हुं करुं, शीश प्राणनाथने पदे धरुं;
विश्वपाळ छो समर्थ रे तमे, अल्प दीन सर्व जीव तो अमे. ३
अर्पुं सर्व कर्म मात तातने, तारशो तमे मने अनाथने;
थर्ये सर्वदा दयाळ आपशो, दासना समस्त दोष कापशो. ४
अल्प बुद्धि जीवनी विचारशो, सर्व विघ्न कष्टने निवारशो;
द्यो तमे मती रुडी दयाघना, पापकर्मनी करो प्रभु क्षमा. ५
विश्व कार्य नित्य नाथ थाय छे, न्यूनता दयानि ना जणायछे;
ए तमारुं छे प्रभु प्रभुत्वरे, शुं स्तुती करुं हुं ते महत्त्वरे. ६
सृष्टिकार्य हाथ सर्व नाथने, जाणि ल्यो तमे अमारि वातने;
हाथ जोडिने करुं हुं वंदना, मानि ल्यो तमे अमारि अर्चना. ७
शान्ति सर्व विश्वमां सदा करो, भक्तनी विपत्ति आपदा हरो;
दीन दास जाणिने जगत्पति, आपशो कृपाथि नाथ सद्गति. ८

शालिनी.

स्वामी सर्वात्मा प्रभु प्राणनाथ, सर्वे जीवोना तमे माततात;
अंतर्यामी आप जाणो अमारां, जे जे कीधां कृत्य सारां नठारां. १
माफी आपो दुष्कृतीनी दयाल, दृष्टी राखो प्रेमनी सर्व काल;
अर्थो माग्या प्रार्थनामां अमे जे, स्वीकारी ल्यो जे प्रभूने गमे ते. २
प्रीतीभावे वंदिये जोडि हाथ, शांती आपो विश्वमां विश्वनाथ;
भक्ती आपो शुद्ध साची तमारी, सत्कार्योमां वृत्ति राखो अमारी. ३



गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.

नमुं नित्य विश्वपति आपो मने शुद्धमति,
अगम्य तमारी कृति कदि ना कळाय नाथ;
शरण तमारुं धरुं वधु विनति शुं करुं,
विदित छे विश्वनाथ तमने समस्त वात. नमुं नित्य०
विश्वमां करुं निवास राखीने तमारी आश,
करशो नहि निराश विभु माततातभ्रात;
पूज्य जाणी आपुं मान तमने कृपानिधान,
करो मने नीतिमान प्रणमुंछुं प्राणनाथ. नमुं नित्य० १

पद.

जिल्हो. एको.

विश्वनाथ तुं विना न को सहायकारी;
निर्मल निःसंग सत्य नित्य निर्विकारी,
सच्चिद्घन साक्षी सर्व संकटभयहारी. विश्वनाथ तुं विना० १
निंद्य कृत्यथी दयाल ल्यो तमे उगारी,
भवपति भवसिंधुथकी द्यो मने उतारी. विश्वनाथ तुं विना० २
सत्य देव एक एम श्रुति वदे पोकारी,
सत्य धर्म आपि मने राखो सदाचारी. विश्वनाथ तुं विना० ३
श्रवण करो सर्व तमे प्रार्थना अमारी,
सर्वदा रहो प्रसन्न परम उपकारी. विश्वनाथ तुं विना० ४

पद.

खमाच मिश्र काफी जिल्हो. त्रिताल.

प्राणपति सुणो विनति अमारी;
विनति अमारी विज्ञप्ति अमारी. प्राणपति०
मंदमतिथी प्रभु स्तुति शी थाय,
अकळ गति छे गहन तमारी. प्राणपति० १
विदित तने अंतरनो आशय,
अतिशय शुं वदियें विस्तारी. प्राणपति० २
विपरीत कृतियो विभु नव जोशो,

करुणासागर छो उपकारी. प्राणपति० ३
मंगल कार्य करावो जगत्मां,
जगदीश्वर द्यो भवथी उतारी. प्राणपति० ४

पद.

कहारवो. त्रिताल.

कृतिसामुं प्रभु कदि नव जुवोरे;
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं०
विषयमहोदधिमां हुं मग्न,
दयानिधि दयाकरी कर ग्रहोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० १
साष्टांगे तुज चरणे वंदी,
स्मरण करुं सदा प्रभु अनुग्रहोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० २
परमात्मा प्रभु प्रणत जनोनां,
मनवाञ्छित तमे परिपूर्ण करोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसामुं० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जयसविता धाता जयसविता धाता
सर्वोत्तम पददाता(२) प्रणतजनत्राता. जयदेव० १

शांताकार शरण्य शिव शुभ गुण धारो (२)
भवमोहाब्धिथकी प्रभु (२) कर ग्रहिने तारो. जयदेव० २
रविशशिवन्हिप्रकाश ज्यां कादि नव जाशे (२)
त्यां प्रभु स्वयंप्रकाशे (२) सच्चिद्घन भासे. जयदेव० ३
ते परब्रह्म परेश पदपंकज प्रणमुं (२)
प्रेमाक्षत अर्पण करि (२) तत्पदमां विरमुं. जयदेव० ४
अतिशय छे अपराध अति लज्जा पामुं (२)
केवळ कृपास्वभावे (२) प्रभु जोशो सामुं. जयदेव० ५
भवतारक भगवंत भक्ति करुं तारी (२)
ब्रह्मध्यानपरायण (२) वृत्ति रहो मारी जयदेव० ६
संध्या समये नित्य स्मरुं करुणासिंधु (२)
प्रेमथकी प्रणमी प्रभु (२) मंगलपद वंदुं जयदेव० ७
जगदाधार दयाल शुभ दर्शन देशो (२)
ध्यानार्चनवंदनविधि (२) विभु मानी लेशो जयदेव० ८

अंक १३ मो.

ललित.

नमुं नमुं महाराजने नमुं, परम भक्तिना रंगमां रमुं;
नव बिजो प्रभू जाणुं हुं विधि, शरण राखशो रे दयानिधि. १
हृदयमां रुडुं ध्यान हुं धरुं, प्रभु उपासना प्रेमथी करुं;
सकल शांतिना छो महोदधि, शरण राखशो रे दयानिधि. २
परमतत्त्वहे मंगलप्रदा, विनयपूर्वके वंदुं हुं सदा;
प्रभु दयाकरी द्यो रुडी मति, शरण राखशो रे दयानिधि. ३
जगतमां सहू वस्तुओ विषे, घटित योजना नाथनी दिसे;
स्तुति नहीं थशे अल्प जीवथी, शरण राखशो रे दयानिधि. ४
प्रभु कृपादयानुं निधान छो,सकल प्राणिनुं शांतिस्थान छो;
तुजपदे सदा राखुं हुं रति, शरण राखशो रे दयानिधि. ५
प्रणमिने परब्रह्मने भजुं, दुरित वासना सर्व हुं तजुं;
प्रभु बचावशो पाप कर्मथी, शरण राखशो रे दयानिधि. ६
असत मार्गथी वृत्ति वाळशो, दिन गणी दयानाथ पाळशो;
शुभ क्रिया कदी में नथी किधी, शरण राखशो रे दयानिधि. ७
तुजविना मने कोण तारशे, त्रिविधदुःखने कोण टाळशे;
पतित प्राणि हुं मंद अल्पधी, शरण राखशो रे दयानिधि. ८

सकल कार्यमां तुं सहायता, अति अवश्य छे रे जगत्पिता;
सकल शुभक्रिया थाय तुं थकी, शरण राखशो रे दयानिधि. ९
परम प्रेमनी पुष्प अंजलि, प्रभुपदे समर्पुं वळी वळी;
भवपती करो आत्मउन्नति, शरण राखशो रे दयानिधि. १०



ॐ परमात्मने नमः

हे जगत्कर्त्ता! हे सर्व प्राणीना महापिता! अमे तमारे शरणे आवी अमारा अपराधनी क्षमा मागीए छीये. अमे पामर प्राणी छीए. अमारी बुद्धि थोडी अने अमारुं ज्ञान छेक अल्प छे. तारी हजुरमां आववाने अमे केवळ अयोग्य छीए. कमअकलथी अने दुष्ट बुद्धिथी अमे जाणे अजाणे अगणित पाप कर्यांछे, तेने माटे पश्चात्ताप करीने तमारी पासे माफ मागीए छीए. क्षणे क्षणे अमारी मति फरे नाहि, आ पश्चात्तापनी असर अमारा मन उपरथी घसाइ ना जाय, एवा उपाय कृपा करी अमने सूझाड. अमारा अज्ञाननो नाश थाय एवा तमारा तेजनो प्रकाश अमारा अंतःकरणमां करो. प्रभाते सूर्यनां किरणोथी जेम रात्रिनुं अंधारुं नाश पामेछे तेम तमारा ज्ञानरूपी किरणोथी अमारा मनना अंधारानो नाश करो, अने मुक्ति पामवानां साधन बतावो. तमारी प्रेरणा अने तमारी सहायता विना आ सर्वोत्तम कार्यने माटे अमारां सघळां प्रयत्न निष्फल

जायछे; माटे हे दयानिधि! करुणा करो. अमे दीनजनो तमारा भाविक भक्त उपर मेहेरबानीनी नजरे जूवो. अमे भूलां पडेलां प्राणीओने खरे रस्ते चढावो. जेवो उपकार आज सुधी कर्योछे तेवोज हवे पछी करशो. निर्लज्ज थइ घणी वार अमे तमारा उपकारने विसारी दीधोछे. दुःखमां तमने संभारीए छीए ने सुखने समये उन्मत्त थइ तमने भूली जइए छीए. ए अमारी केवी मूर्खाइ छे. एवां पाप न करीए एवी अमारी इच्छा छे ते सफळ करो. अमारी मूर्खाइनो पार नथी. हे प्रभु! अमारा अपराध अने अमारा अज्ञाननो पार नथी. वहेमरूपी दैत्य अमारा आत्माने अधम गतिए पहोचाडेछे; अहंकार अने वहेम अमने ऊंधी मति सूझाडेछे. कांइ सुख थयुं, के द्रव्य मळ्युं के यश मळ्यो, तो अमारी चतुराइथी, अमारा डहापणथी, अमारा नसीबथी, फलाणानी उपासनाथी के कृपाथी ते प्राप्त थयां एम मानी पापना ऊंडा खाडामां पडीए छीए. आ जगत्नो कर्ता, हर्ता, मालीक अने नियंता तमारा विना बीजो कोइ नथी; अने तमारा करेला नियमो उपरांत कांइ थतुं नथी, ए भूली जइ प्रेमभक्तिमां चूकीए छीए, ने बीजा कोइ उपर विश्वास राखीए छीए. एवा वहेम अने अंधाराना कूवामांथी अमने काढो! ओ प्रभु! अमने काढो अने तारो. वहेमरूपी नदीना वहेता पूरमां अमे, अमारा स्नेहीओ, अने अमारा देशीओ, तणाया जइए छीए; दया

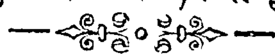
करो; प्रभु! दया करो; दया करीने अमने उगारो. अमने वहे-
मनी जाळमांथी छोडवो अने तमारा एकलाना आस्तिक भक्त
करो. अमने खरी श्रद्धा आपो, अमने ढोंगना खाडामांथी काढो ने
पुण्यने मार्गे चढावो. हे विश्वाधिपति महाराज! अमारां एवां
धन्य भाग्य क्यांथी के अमारी सघळी दुर्वासना, अमारा सघ-
ळा वहेम, अमारुं सर्व अज्ञान, नाश पामे अने अमे सद्गुणी
थई तमारे एकलानेज शरणे आवी रहीए; मात्र तमारी एक-
लानीज पराभक्ति अने मानसिक सेवा पूजाथी पवित्र थई त-
मारी कृपा पामवाने योग्य थइए अने मोक्ष पामीए! हे दीन-
नाथ, दयासागर, कल्याणकारी प्रभु! भाविक भक्तने तारनार
भगवान्! अमारी आ दीन याचना सांभळो, अमारी आ अ-
रज स्वीकारो. अमने परमार्थ बुद्धि आपो, अमारी मति नि-
र्मळ करो; अमे तमारी पराभक्ति अने अमारा देह आत्मानो
वियोग थये आत्मानी भक्ति मागीए छीए ते आपो. तथास्तु.

—※—

दिंडि. १२

सदा महिमा शुभ गाउं हुं तमारो, कृपाभावना हुं मानुं ऊपकारो;
अल्प मंद मारि बुद्धिने सुधारो, स्वजनबंधुप्रीति हृदयमां वधारो. १
सर्व नाशवंत ऐहिक सुखभोग, थाय निश्चय ए सर्वनो वियोग;
तमे एक मात्र मंगळमय सत्य, मनोवृत्ति रहो प्रभुपदे प्रवृत्त. . २

महाशक्तिथकी शितळ वायु वाय,सदा ध्वनि तरंगसिंधु विषे थाय;
मधुर नादेथि पक्षि गान गाय,गहनशक्ति सकल सृष्टिमां जणाय. ३
सकल वस्तुविषे प्रभुप्रताप भासे, पुरुं वर्णन नहिं जीवथी कराशे;
महाराज सर्व सृष्टिना नियंता,नमुं नित्य निराकार अनाद्यंता. ४
न्यायसिंधु सर्व सत्य नियम धारो, कदी भंग नियमनो नहीं विचारो;
पतितपावन प्रभु प्रणमुं प्राणनाथ,करी पूर्ण कृपानाथ ग्रहो हाथ. ५



वंशस्थविल.

नमी नमी नित्य जगादिनाथने, नमी नमी सत्य प्रभू अजातने;
नमी पराभक्तिथि ध्यान हुं धरुं, पदारविंदे अभिवंदना करुं. १
अतर्क्य शक्ति प्रभु को न पामशे, विचारना वेग बधा विरामशे;
तमे मने नाथ प्रसन्न रे'शो, सुनीतिनो बोध सदैव देशो. २
पळे पळे हुं बहुं पातको करुं, तथापि तारी प्रभु आश हुं धरुं;
स्थिती तमे दासनि चित्त धारशो,कृपा करि नाथ भवाब्धि तारशो. ३
विना प्रभू को नथि अन्य तारक, विना प्रभू को नथि पापहारक;
तमे हरो सर्व विपत्ति आपदा, तमे करो रक्षण मारुं सर्वदा. ४
पदे पदे हुं तमने प्रमाणुंछुं, दया तमारी सघळे हुं जाणुंछुं;
उपासुं हुं प्राणपति प्रभू सदा, न पामुं हुं दुःख दयानिधी कदा. ५
असंख्य पापो प्रभु नित्य थाय छे, तथापि तारी करुणा जणाय छे;
अनन्य भावे करुं भक्ति तादृशी, मती करो निर्मळ नाथ मादृशी. ६

તમારિ સત્તા થકિ તો હલાય છે, તમારિ સત્તા થકિ તો ચલાય છે;
કૃપાકરીને વરદાન દ્યો તમે, સહાય રે'શો પ્રભૂ કષ્ટને સમે. ૭
પ્રભૂ તમારો અપરાધિ હું થયો, અનીતિના પંથમતે વહૂ ગયો;
કૃપાનિધે પાપ સમસ્ત કાપશો, સદા મને સન્મતિ નાથ આપશો. ૮
સમર્પુ તુંને નિજ સર્વ કર્મ રે, તમેજ જાણો મુજ ચિત્તમર્મ રે;
દયાનના દાસ ગણી દયા કરો, કદી ઉપેક્ષા પ્રભુ નાથ ના કરો. ૯
કૃતજ્ઞતાપૂર્વક પ્રાર્થના કરું, પ્રભૂપદે મસ્તક નિત્ય હું ધરું;
દયાથિ રાખો શરણે મને પ્રભુ, વિના દયા હું ક્ષણ એક ના નિભું. ૧૦
અહોનિશે નીતિવિધાન પાળું હું, સદા તને સન્નિધ નાથ જાણું હું;
નમી નમી હું પ્રભુ પાય લાગુંછું, ક્ષમા મહાદોષતણી હું માગુંછું. ૧૧
તમેજ મારા પ્રભુ માતતાત છો, તમેજ મારા સહુ મિત્રભ્રાત છો;
વિનંતિ સર્વે ચિતમાં તમે ધરો, કૃપા કરી પાપ સમસ્ત સંહરો. ૧૨

રથોદ્ધતા.

વંદું નિત્ય પરમાત્મ બ્રહ્મને, વંદું સત્ય વિભુ વિશ્વવંદ્યને;
વંદું પ્રેમથકિ હું કૃપાઘના, જાઉં કોણ શરણે પ્રભૂ વિના. ૧
દીનવત્સલ તમે દયાનિધિ, સ્તુતિના હું નવ જાણું રે વિધિ;
વારવાર નમિને હું ચિદ્ઘના, પ્રેમથી કરું તમારિ પ્રાર્થના. ૨
એક દેવ તમને ઉપાસુંછું, નિત્ય નાથ શરણે નિવાસુંછું;

अल्पमंद प्रभु मारि छे मति, मात्र तारि करुणाथकी गति. ३
ब्रह्म पूर्ण प्रभु रे अनन्य छो, सर्वभक्तजनना शरण्य छो;
सृष्टिसूत्र प्रभु धारिने रहो, सर्वनी स्थिति तमे चिते लहो. ४
शक्ति छे सबल नाथ तारिरे, सर्जिछे सकल वस्तु सारिरे;
दीनवत्सल करी तमे दया, मागुं नित्य प्रभु पापनी क्षमा. ५
विश्ववंद्य विनती चिते धरो, भक्तनां विपति संकटो हरो;
मानुं नित्य प्रभुना अनुग्रहो, दास जाणि कर भक्तनो ग्रहो. ६
विश्वनाथ विभु विश्व संचरो, कृत्य सामुं कदि लक्ष ना करो;
माततात तमने नमुं सदा, पामुं हुं न त्रिविधीनि आपदा. ७
वंदना करुं हुं प्रेमभक्तिथी, प्रेरशो प्रभु कृपाथि सन्मति;
प्राणनाथ प्रतिपालना करो, रूडी आश प्रभु प्रेमथी पुरो. ८

गीति.

जय जय जय जगदीश्वर, ईश्वर अनुपम अतर्क्य अद्वितिय;
अविचल अनंत गुणमय, सच्चिद्घन शुद्ध छो अपरिमेय. १
सत्य तमे जगकर्त्ता, संशय नथि कांइ चित्तमां अमने;
शक्ति सबल मानीने, वंदन करिये क्षणे क्षणे तमने. २
आस्तिक भक्तजनोजे, प्रभुनुं अस्तित्व सत्य चित धारे;
नास्तिक ऊर्मि उपजतां, तत्क्षण तेने निवारि धिक्कारे. ३
अंतर निर्मल नथि तो बाह्याचारो वधी वृथा जाय;

सत्य पराभक्ती छे, तेथकि प्रभुनुं प्रसन्न चित थाय. ४
भक्ति विना नथि मुक्ती, सत्य सकल एज शास्त्र सिद्धांत;
एथकि प्रभुपद मळशे, टळशे भवविषयमोहनुं ध्वांत. ५
गीति स्तवने करुंछुं, प्रभुप्रार्थन हुं यथामती तारुं,
नम्र वचन उच्चारुं, मनथकि तमने कदी न वीसारुं. ६
अभिवंदन प्रभु चरणे, निशदिन करुं हुं सदा तने नाथ;
ऐहिक आमुष्मिक सुख, आपो अति चित प्रसन्न थइ तात. ७

उपजाति.

सच्चिद्घनानंदप्रभू समर्थ, करो सदा मंगलकार्य सत्य;
भक्तो मळी मंगल गीत गाय, रहो सदा नाथ तमे सहाय. १
दयाघना देव तमे अमारी, लेशो विनंती चितमां विचारी;
जणाय तेमांथकि योग्य सारी, कृपा करीने प्रभु ल्यो स्विकारी. २
प्रभू तमारी तुलना न थाय, सदा तमारी करुणा जणाय;
तमे महामंगल मार्ग दाखो, सत्संगतीमां दिनरात्र राखो. ३

मालिनी.

अवगुण अपराधो छे अपारा अगाध,
क्षमा करि परलोके सद्गती थाय नाथ;
श्रवण करि अपारा स्वामि सर्वे विलापो,
अतिशय करुणाथी पापनी माफि आपो. १

—०—

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.

धन्य धन्य धन्य धन्य धन्य आजनो सुदिन,
मळी सर्वे भक्तजन करिये अमे प्रणाम;
सद्गुण नियम धारी स्तुति करिये तमारी,
अर्चा एज छे अमारी तमने अंतर्याम. धन्य धन्य०
निर्मल आपो मति विश्वंभर विश्वपति,
तमविना नाथ नथी अमने बिजो विराम;
भरुसो छे नाथ भारे भगवंतनो अमारे,
करशो कृपाल तमे परिपूर्ण रूडुं काम, धन्य धन्य० १

पद.

काफी जिल्लो. दीपचंदी.

विधाता धन्य छे तारी रचना जगतनी अनंत, विधाता०
अतर्क्य अगोचर रूप तमारुं, व्यापी रह्या सत्ताथकी भगवंत. वि० १
वेद स्तुति तारी करिने विराम्या, पाम्या नहि तारो पुरो प्रभु अंत. वि० २
संरक्षण सर्वकाल करो छो, प्रभु दीनवत्सल छो दयावंत. वि० ३
कर्मतणुं भोक्तृत्व निश्चय छे, शुभाशुभ क्रिया थशे फलवंत. वि० ४
परमात्मा समदृष्टि जुवो छो, सरखा तमे गणो दरिद्री श्रीमंत. वि० ५

अवलंबन आधार तमारो, राखी अमे रहिये सदा निश्चित. वि०६
विधिनिषेधनी आज्ञा मानी, अमे अनुसरिये तारो भक्तिपंथ. वि०७
अभिवंदन नम्र थइ अमे करिये, कृपा करी रहो तमे क्षमावंत. वि०८

पद.

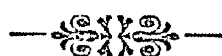
अति अद्भूत कला प्रभु तारी०
महामुनिजन तुज पार न पाम्या, मति चाले नव मारी. अति०॥१॥
जगरचनामां प्रभु चमत्कृतीथी, शक्ति विपुल विस्तारी. अति०॥२॥
जीवतणा अपराध न जुवो, प्रभु छो अति उपकारी. अति० ॥३॥
शुद्ध सत्व गुण श्रेष्ठ तमारो, जीव छे सर्व विकारी. अति० ॥४॥
दया करी प्रभु दीन जनोने, द्यो भवसिंधु उतारी. अति० ॥५॥



आरति.

जयदेव जयदेव जय शान्तिदाता जय शान्तिदाता
दिव्य पिता प्रभु त्राता (२) त्रिभुवन विख्याता जयदेव० १
एक अखंड अनंत अजरामर साचा (२)
स्तुति गावा प्रभु तारी (२) नव चाले वाचा जयदेव० २
सृष्टिनियम साक्षात् निरखी आनंदुं (२)
जगकर्ता जाणी प्रभु (२) प्रेमथकी वंदुं जयदेव० ३
प्रभु सर्वज्ञ समर्थ शुभ सन्मति आपो (२)

कृपाघना करुणा करि (२) क्षमा करो पापो जयदेव० ४
कृपाविना किंचित् कार्य नहिं सरशे (२)
सद्गुणि भक्त तमारा (२) भवसागर तरशे जयदेव० ५
जगतारक जगवंद्य जगदीश्वर देवा (२)
मानि दयानिधि लेशो (२) दिन जननी सेवा जयदेव० ६
करुणादृष्टि दयाल दिनजन पर करशो (२)
घटित विनंति अमारी (२) चित्त विषे धरशो जयदेव० ७
मानि बहू उपकार प्रणमुं प्रभुचरणे (२)
कृपा करी सेवकने (२) राखो निज शरणे जयदेव० ८



अंक १४ मो.



भुजंगी.

नमीए सदा सच्चिदानंदरूप, नमीए सदा सर्वविश्वाधिभूप;
नमीए सदा दीनबंधु दयाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. १
तमे छो अमारा प्रभू अन्नदाता, तमे छो अमारा सदा सत्यत्राता;
पराभक्तिभावे अमे विश्वपाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. २

कृपाथी करो सर्व रुडुं अमारुं, कृपाथी करो सर्व स्रष्टीनुं सारुं;
कृपाथी करो रक्षणो सर्व काल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ३
तमे प्राणिना सांभळीने विलापो, करोछो कृपाथी क्षमा सर्व पापो;
अमे दीनना नम्रताथी त्रिकाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ४
प्रभु प्रार्थना लक्षमां सर्व धारो, अमारां वधां संकटोने निवारो;
अमे पामरो प्राणियो अज्ञ वाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ५
कियां पापकर्मो अमे उग्र भारे, तमारा विना कोण तेने निवारे;
करो नाथ दृष्टी दयानी विशाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ६
कृपाथी नमे सांभळो विश्वनाथ, विनंती करी जे अमे जोडि हाथ;
विदाइ वळी विश्वनी मोहजाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ७
करीए अमे अर्चनाओ तमारी, कृपाथी पुरो वाञ्छनाओ अमारी;
अमे आपिये प्रेमनी पुष्पमाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः

हे जगत्ना स्वामी, महा प्रभु, प्राणनाथ! अमारा खरा प्रेमथी करेला आ नमस्कार स्वीकारशो. अमारी तारा उपर दृढ श्रद्धा छे. अमे खरी श्रद्धाथी मानीए छीए के पृथ्वी, वायु, अग्नि, पाणी, पर्वत, सागर, वृक्ष, तत्त्वादिक सघळी वस्तुओनो, चंद्र, सूर्य, नक्षत्रोनो सृजनार तुं एकलो छे. ए सर्वने माटे तें

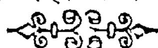
नियमो रच्याछे. तारी तुल्य बीजुं कोइ नथी; पूजवा योग्य तारा विना बीजुं कोइ छेज नहि. आखा विश्वमां, असंख्य ब्रह्मांडोमां सर्वनो रक्षक, सर्वनो पाळनार, सर्वनो आधार तुंज छे. तारो महिमा अपार छे. तारी दयानो भंडार अखूट छे. तारा उपकार अनुप छे. तारी पवित्रता अने सारापणुं केम वर्णी सकाय! जे डहापणमां, कौशल्यमां, अने चतुराइमां परिपूर्ण छे, जेनामां कशी अपूर्णता नथी, कोइ खोड नथी, जे सर्व शक्तिमान् अने अति दयालु तथापि न्यायी छे, जे सघळी जगाए छे, बधुं जुवेछे ने सांभळे छे, जे कांइ विसरतो नथी, कोइ बीजाने विद्यमान राख्या वगर तथा कोइ रूप धारण कर्या विना मात्र पोतानी इच्छाथी जे धारे ते करी सकेछे, एवा अति प्रतापी क्षमावंत भगवान्ने दंडवत् प्रणाम करी वंदन करीए छीए. तने योग्य जणाय तो अमारी प्रार्थना सांभळ, अमारा अपराध क्षमा कर. अमे सुमति अने सुज्ञान मागीए छीए. इंद्रियोने अने मनोविकारने सुनीतिनी योग्य मर्यादामां राखवानी प्रेरणा कर अने शक्ति आप. तारी सहायता विना रूडां कर्म करवाने करेलां अमारां सघळां प्रयत्न व्यर्थ जायछे. अमारी धारणा अने अमारा संकल्पो खोटा छे. तारुं धार्युं मात्र सत्य छे. अमे मिथ्याभिमानी दुष्ट माणस आ लोकमां यश प्राप्त करवाने, मोटा कहेवडाववाने, अने भुंडां काम करवाने, केवा तत्पर थइये छिये, केवो उमंग

राखिये छिये! लाभ मेळववाने अने स्वार्थ साधवाने केवा तत्पर रहीए छीए! अने रूडां पुण्यनां कर्म करवामां केवा मंद छीए, केवा धीमा छीए! इंद्रियादिकनां क्षणिक सुख भोगववाने केटला आतुर छीए! मरणनो भय भूली जई केवा प्रपंच करीए छीए! अमारा अमर आत्माना मोक्षनी, तेना नित्यना सुखनी चिंता केटली थोडी राखीएछीए! आ संसारनी क्षणभंगुर मालमिलकत उपर अमर्याद आसक्ति राखी मायानी एटले अज्ञाननी मोहजालमां लपटाईने बंधाई रह्या छीए. तारी वास्तविक भक्तिनां खरां साधन छोडी आडे मार्गे, पापने रस्ते जइये छीए. अमने आंखो छे तोपण अंध छीए. अमे अज्ञानी छीए, अमे मूर्ख छीए. अमे पापना अंधारा कूवामां पड्या छिये, दया करी अमने एमांथी काढ. सत्यज्ञानरूपी अजवाळुं आप. तारी सत्य भक्ति, तारी अन्यय भक्ति, तारी पराभक्ति रूपी दीवो अमारा अंतःकरणमां प्रदीप्त कर. आ जगत्मां सत्य मार्गे चालिए, तारा उपर प्रेम राखीए, तारा आश्रय, डहापण अने सामर्थ्य उपर श्रद्धा राखीए, तारो भय राखीए, अने सुनीतिथी वर्तिये, तोज अमारा मननो मेल जाय. बीजा कोइ बहारना उपचारथी जवानो नथी. जळथी के बीजा कशाथी ते धोवावानो नथी. सरोवर नदी के समुद्रना स्नानथी मन चोखुं थतुं नथी. ए मेल जाय तोज अमारां मन पवित्र थाय. अपवित्र मनथी करेली सेवा, मलिन

अंतःकरण छतां करेली भक्ति तुं न स्वीकारे, माटे अमारां मन पवित्र करवानी अमारी महेनत सफल कर. हे महा प्रभु! अमारा उपर प्रसन्न था. अमारां मन निर्मल करी भक्तिरसथी भर के आ संसारमां रही पाप ना करीये अने पुण्यशाली थइ मुक्ति पामीए. तथास्तु.

दिंडि. १४

ब्रह्म सत्य जीव तेनुं सृष्ट तत्त्व, नहीं जीवब्रह्मने कादि एकत्व;
सत्य शास्त्र विषे एकज सिद्धांत, किधो ज्ञानि जने निर्णय अभ्रांत.१
भ्रमित ब्रह्मवादि सत्य मार्ग छोडे, न्यायनीतियुक्त धर्म सर्व तोडे;
परमशुद्धभक्तिनियमभंग थाय, असज्ज्ञानथकी प्रभु नहीं पमाय.२
मूढ नास्तिक जन शून्यवाद माने, नथी ईश न्यायकारि एम जाणे;
असद्वृत्ति एवि थाय नहीं ईश, एज मागुं तारि मंगल आशीष. ३
तमे सत्य न्यायकारि छो अमारा, वर्णुं केइ विधे यशगुणो तमारा;
कीर्ति प्रभुनी सहु शास्त्रमां वखाणी,पादपंकजे हुं प्रणमुं पतित प्राणी.४
नहीं देव बीजो कोइ हुं आराधुं, सत्यभक्तिबले नाथने हुं साधुं;
मने दर्शन द्यो देव हे अनंत, रहो सर्व काल नाथ कृपावंत. ५



अनुष्टुप्

नमुं परात्पर ब्रह्म परमात्मा महेश्वर;

नमुं हुं जगदाधार नमुं हुं जगदीश्वर. १
नमुं विश्वेश विश्वात्मा नमुं हुं प्राणरक्षक;
नमुं हुं करुणाकांत नमुं कल्याणकारक. २
नमुं सर्वजगद्व्यापी नमुं प्राणपति प्रभु;
नमुं चैतन्यरूपात्मा सच्चिदानंद ईश्वर. ३
अनंत नित्य निर्लेप सृष्टिकर्ता सदाशिव;
मुक्तिदाता नमुं नित्ये नमुं हुं भक्तवत्सल. ४
जगन्नाथ जगत्राता जगदुत्पत्तिकारक;
स्वयंभू सर्व लोकेश नमुं सर्वत्र व्यापक. ५
नमुं सर्वाद्य अव्यक्त सर्वांतर्यामि उत्तम;
न्यायकर्ता जगद्धाता नियंता परमेश्वर. ६
विश्वंभर विभू वंदुं वंदु हुं विश्वपालक;
जगद्वंद्य जगाधीश प्राणदाता प्रजापति. ७
उपकारी कृपासिंधु नीति सज्ज्ञानवर्धक;
नमुं ज्येष्ठ नमुं श्रेष्ठ शरण्य शान्तिदायक. ८
भयत्राता भवाधीश भक्ताभीष्टफलप्रद;
अद्वितीय अनाद्यंत जयदाता जगत्पति. ९
नमुं नमुं प्रसन्नात्मा प्रेरक द्योतनात्मक;
सर्वाधार सदा वंदुं सर्वतत्त्वप्रकाशक. १०
नमुं सर्वेश सर्वात्मा सर्वसिद्धिप्रदायक;

स्वतंत्र सर्वविद्वंदुं वंदुंसत्वगुणान्वित. ११
शुद्ध मुक्त सदाशान्त नमु दुष्कर्मनाशक;
शक्तिमान् ज्ञानवान् वंदुं वंदुं विश्वार्तिहारक. १२
नमुं हुं सविता धाता भक्तिदाता भवेश्वर;
सर्वसाक्षी सदा वंदुं वंदुं सद्बुद्धिदायक. १३
नमुं देव महादेव महामांगल्य कारक;
महत्तत्व नमुं नित्ये सर्वलोक प्रकाशक. १४
नमुं नमुं जगत्स्वामी सर्वाधीश नमुं नमुं;
सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिकर्ता नमुं हुं करुणाकर. १५
अज एक अनाद्यंत अविचिंत्य अगोचर;
नमुं साष्टांग हुं नित्ये सत्य सर्वज्ञ तारक. १६
शत मंगल नामेथी स्तुति कीधी यथामति;
स्वीकारी सर्व ते लेशो आपशो नित्य सन्मति. १७
तमारे शरणे राखी भक्तसंरक्षणो करो;
सदा वात्सल्यभावेथी दुःख दारिद्र्यने हरो. १८
कोट्यावधि महादोषो कीधाने करुंछुं सदा;
तमारो दास जाणीने करुणाथी करो क्षमा. १९
अनन्यभक्तिभावेथी करुं हुं अभिवंदना;
प्रसन्न थइने पूरो मनवाञ्छित कामना. २०

इंद्रवंशा.

स्वेच्छाथकी सृष्टि तमे प्रभू किधी, स्वेच्छाथकी ते उपसंहरो वधी;
अद्भूत छे देव तमारि तो कृति, चाले नही त्यां जिव अल्पनी गति. १
कोट्यावधी दोष किधा दयानिधि, जाणुं नही हुं उपशांतिनो विधि;
नित्ये मने सन्मतिनाथ आपशो, संसारसिंधू थकि पार पाडशो. २
स्रष्टा तमे सृष्ट पदार्थ सर्वना, साक्षी तमे छो प्रभु सर्व कर्मना;
सर्वेश सर्वांतरयामिने सदा, साष्टांग वंदी प्रभु मागुंछुं क्षमा. ३
आधार वीजो नथि नाथ तुं विना, नित्ये करुंछुं प्रभु पादसेवना;
भक्तोतणी सर्व विपत्तियो हरो, कल्याण मांगल्य तमे सदा करो. ४
पादारविंदे नमि पाय लागुंछुं, सत्कार्यमां नाथ सहाय मागुंछुं;
दृष्टी दयानी प्रभु नित्य राखशो, निःशेष दोषो सहु कापि नांखशो. ५
कौटुंबि मित्रो स्वजनो जनो बधा, पामे नहीं किंचित दुःख आपदा;
आरोग्यता आपि करो सहायता, राखो जगत्मां प्रभु सर्व शांतता. ६
नीति प्रमाणे अनुवर्तनो थशे, त्यारे कृपा पूर्ण तमारि तो थशे;
माटे विनंती करुं वार वाररे, स्वीकारवाने करशो न वाररे. ७
दुर्वासनाथी प्रभु दूर राखशो, सन्मार्ग सद्धर्म मने बतावशो;
संकष्ट मारां प्रभु सर्व कापशो, सामीप्यमुक्ती पदलाभ आपशो. ८

वसंततिलका.

विश्वेश वंद्य विभु छे तमने विदीत,

इच्छा अपारि सघळी घटिताघटीत;
भक्तोतणी विनति सर्व चिते विचारी,
लेशो हशे घटित जे प्रभु ते स्विकारी. १
पुत्रो पिता समिप आवि समस्त मागे,
तेमां थकी घटित अर्थज तात आपे;
ए न्याय राखि परिपूर्ण करो सदर्थ,
सर्वे सुकार्य करवा प्रभु छो समर्थ. २
सर्वे कुकर्म करुणा करिने शमावो,
सद्धर्मकृत्य करवा सुमती बतावो;
भक्तो मळी स्तवन नित्य तमारुं गाय,
प्रेमेकरी प्रभु रहो अमने सहाय. ३



गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.

वंदु परब्रह्मचरण करुंछुं शुभ नामस्मरण,
भजुंछुं भवदुःखहरण मंगल दिन मानुं आज.
संगीत गीत गाउं चिद्घनमत नित्य धाउं,
प्रणमी कृतार्थ थाउं जय जय जगदधिराज. वंदु०

अतिशय मुज दुष्टकृति क्यम करी प्रभु पामुं गति,
थर थर थर कंपु प्रभु करणा करी राखो लाज;
अविचल प्रभु भक्ति आपी त्रिविधिजानित कष्ट कापी,
मुज शिर वरहस्त थापी करशो हितकारी काज. वंदु० १

पद.

यमनकल्याण. दीपचंदी (कटाव).

जय जय हे जगदीश्वर ईश्वर अविचलशुभपददाता,
तत्त्व महत् थकि व्याप्त विभु त्रिगुणात्मक विश्वविधाता;
दुर्मति टाळि मति शुभ द्यो दयादृष्टि करि दीननाथा. जय जय हे०
प्रभु परमकृपाळ, जनप्रतिपाळ, दीनजनबंधु, दीनदयाळ,
चरण तमारे, नमुं हुं त्रिकाल, करुणादृष्टि करो विशाल;
शरणागत सेवक सर्वे तुज मंगलयशगुणगाता. जय जय हे० १
प्रभु कृपानिधान, बहु बलवान, नव कोइ भासे ब्रह्मसमान,
पूज्य मानिने, करुं शुभ ध्यान, कृपाघना मुज द्यो वरदान;
विश्वनाथ विश्वंभर विभु छो विश्वविषे विख्याता. जय जय हे० २
सर्वांतर्यामी, प्रभु निष्कामी, विश्वस्वामी, अविचलधामी,
सत्य सदा सचराचरगामी, भक्ति विषे मुज वृत्ति विरामी;
दयानिधि दीनवत्सल देवा सदा करो सुखशाता. जय जय हे० ३
परब्रह्म महेशा, प्रभु परमेशा, प्रकृतिपरेशा, विभु विश्वेशा,

प्रणमुं तमने, प्रभु दिनानिशा, दूर करो मुज दुरित अशेषा;
दिव्यपिता परमेश्वर तमने निरखुं सदा साक्षाता. जय जय हे० ४
जय अपरंपार, छो अविकार, भक्तजनोना, प्रभु आधार,
अविचल पद, आपो दातार, सदा तमारा स्मरुं उपकार;
आद्य निरंजन निर्मल अविचल त्रिभुवनना प्रभुत्राता. जय जय हे० ५
जनमंगलकारी, बहु उपकारी, भक्त जनोना भवभयहारी,
यथामति आ, विनति उचारी, कृपा करीने ल्यो स्वीकारी;
पूर्ण करो प्रभु आश अमारी आद्य अनंत अजाता. जय जय हे० ६
सुखशान्तिप्रदाता, प्रभु प्रख्याता, प्रेमभावथी, नमुं जगत्राता,
आद्य अनंत, अखंड अजाता, सर्व कर्मना प्रभु छो ज्ञाता;
परमात्मा परलोक विषे प्रभु समीप मुक्तिफलदाता. जय जय हे० ७
हुं शरण तमारे, आव्यो द्वारे, चढशो वारे, संकट भारे,
तुज विण प्रभु ते, कोण निवारे, सर्व अर्थ सेवकना सारे;
सदा तने साष्टांग विधिथी नमुं नमुं नमुं पितु माता. जय जय हे० ८

पद.

खमाच जिल्लो. दादरो.

सच्चिद्घनना स्वरूपमां विरामुंरे सच्चिद्०
अंतरवृत्ति विमल थया विना,
बाह्याचरण सर्व छे नकामुंरे. सच्चिद्० १

कृपाघना करुणादृष्टिथी,
जुवो नित्ये सेवकजनसामुंरे, सच्चिद्० २
नीतिसद्धर्माचरणथकी हुं,
सदा तारो प्रसाद पूर्ण पामुंरे. सच्चिद्० ३



आरति.

जयदेव जयदेव जय जगदुद्धारा जय जगदुद्धारा
अविनाशी अविकारा (२) विभु अपरंपारा जयदेव० १
नमी दंडवत् नाथ नित्य तमने भजिये (२)
मंगलकारी तमारुं (२) नाम मुखे जपिये जयदेव० २
सच्चिद्घन सर्वेश संरक्षण करशो (२)
प्रेमलभक्ति तमारी (२) मुज हृदये भरशो जयदेव० ३
त्राता त्रिभुवन नाथ सद्गुणना दाता (२)
दया करो दिनजनपर (२) दिव्य पितामाता जयदेव० ४
स्रष्टा सत्य समर्थ मंगल मति देशो (२)
स्तुतिवंदनप्रार्थनविधि (२) विभु मानी लेशो जयदेव० ५
अकल कला न कळाय करुणामय तारी (२)
दया करी मुज दीनने (२) मति आपो सारी जयदेव० ६

प्रणमुं तमने, प्रभु दिनानिशा, दूर करो मुज दुरित अशेषा;
दिव्यपिता परमेश्वर तमने निरखुं सदा साक्षाता. जय जय हे० ४
जय अपरंपार, छो अविकार, भक्तजनोना, प्रभु आधार,
अविचल पद, आपो दातार, सदा तमारा स्मरुं उपकार;
आद्य निरंजन निर्मल अविचल त्रिभुवनना प्रभुत्राता. जय जय हे० ५
जनमंगलकारी, बहु उपकारी, भक्त जनोना भवभयहारी,
यथामति आ, विनति उचारी, कृपा करीने ल्यो स्वीकारी;
पूर्ण करो प्रभु आश अमारी आद्य अनंत अजाता. जय जय हे० ६
सुखशान्तिप्रदाता, प्रभु प्रख्याता, प्रेमभावथी, नमुं जगत्राता,
आद्य अनंत, अखंड अजाता, सर्व कर्मना प्रभु छो ज्ञाता;
परमात्मा परलोक विषे प्रभु समीप मुक्तिफलदाता. जय जय हे० ७
हुं शरण तमारे, आव्यो द्वारे, चढशो वारे, संकट भारे,
तुज विण प्रभु ते, कोण निवारे, सर्व अर्थ सेवकना सारे;
सदा तने साष्टांग विधिथी नमुं नमुं नमुं पितु माता. जय जय हे० ८

पद.

खमाच जिल्लो. दादरो.

सच्चिद्‍घनना स्वरूपमां विरामुंरे सच्चिद्०
अंतरवृत्ति विमल थया विना,
बाह्याचरण सर्व छे नकामुंरे. सच्चिद्० १

દુરિત કૃત્ય તો થાયછે અતિ, અવકૃપા તથાપી થતી નથી;
અનુગ્રહો અને નિત્ય માનિયે, પ્રભુકૃપાથકી શાંતિ પામિયે. ૬
જય જગેશ્વરા ક્ષેમકારક, જય ભવેશ્વરા ભક્તકારક;
પ્રભુ સુણો તમે નમ્ર પ્રાર્થના, પુરિ કરો રુડી સર્વ કામના. ૭
શુભ ઉપાસના આજ આ સમે, કરિ પ્રભુપદે વંદિયે અમે;
વિનતિ સાંભળીને તમે પછી, શરણ રાખશો રે દયાનિધિ. ૮



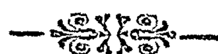
ૐ તત્સત્ પરમાત્મને નમઃ

શ્રી જગદીશ્વર મહાપ્રભુ પરમપવિત્ર ભગવાનને સાષ્ટાંગ નમસ્કાર કરુંછું. સર્વ બ્રહ્માંડના નાથ વિશ્વાધિપતિ મહારાજ ! તમારે શરણે આવ્યોછું. મારા અપરાધ ક્ષમા કરો, મારાં પાપ બાળી નાંખો, અને મને મુક્તિ આપો. આ જગત્માં જીવું ત્યાં સુધી તારી ભક્તિ શુદ્ધ ભાવથી કરું, તારી પ્રીતિઅર્થે અને મારો ધર્મ જાણી પરમાર્થ કરું, સદાચરણવડે પુણ્યશાળી થાઉં, અને તારા પ્રેમને પાત્ર થઇ સદ્ગતિ પામું, એ મારી મનકામના છે; એજ મારે માગવું છે. બીજું શું ઇચ્છું ? બીજું શું માગું ? તારી કૃપાથી બીજો કોઈ પદાર્થ મોટો નથી. તું મુજ દીનઉપર પ્રસન્ન થા, એજ મારે માગવાનું છે. મારે બીજું કાંઇ જોઈતું નથી. આ સંસારના સુખદુઃખ કર્માદિ કારણોને સંયોગે ઉત્પન્ન થાય

प्रेमथकी परमेश माफ करो पापो (२)
विश्वविषे विश्वेश्वर (२) सुखशान्ति आपो जयदेव० ७
विनति अमे महाराज करिये नित्य तमने (२)
घटित मनोर्थ हशे जे (२) प्रभु आपो अमने जयदेव० ८



अंक १५ मो.



ललित.

परम इष्टने पादपंकजे, प्रतिदिने पराभक्तिपूर्वके;
परम प्रेमनी पुष्पअंजलि, सतत आर्पिसे भक्तमंडळी. १
प्रभु अमूर्तनी मूर्तिभावना, अमित जीवनी क्लिष्ट कल्पना;
अखिल विश्वनो आदि एकजे, नव कदी थशे व्यक्त मात्र ते. २
सकल वस्तुथी भिन्न सत्यछो, सबल शक्तिथी व्याप्त नित्यछो;
विदित जीवनां कृत्य आपने, प्रभु क्षमा करो सर्व पापने. ३
प्रभु परात्परा पूर्ण छो तमे, परमभक्तिथी पूजिये अमे;
अशुभ कर्मथी दूर राखशो, सुनितिनो सदा मार्ग दाखशो. ४
सकल सृष्टिना नाथ नायक, सकल विश्वमां शांतिदायक;
नमि नमी अमे पाय लागिये, रुडि मती महाराज मागिये. ५

ધકાર નાશ કરી મારી સકલ દુર્વાસના દૂર કર; મને વહેમના દરીઆમાં ડૂબવા ન દેઇશ. મને પાખંડના ખાડામાંથી કાઢ મને સંસારસાગરથી તાર. તારા જ્ઞાનરૂપી અમૃતનું મને પાન કરાવ કે મારો આત્મા તને પામે.

॥ શાંતિઃ શાંતિઃ શાંતિઃ ॥



દિંડ. ૧૯

જગતલીલા અતિ સુંદર સુખકારી, નહીં ચાલિ સકે ગતિ મતી અમારી;
કરું પ્રભુપદે હું દંડવત્પ્રણામ, પુરો સર્વ રુડા નાથ મનસ્કામ. ૧
પુણ્ય પ્રાણિ સદા સત્ય પથે ચાલે, નીતિનિયમ અતિ પ્રીતિથકી પાળે;
પાપ રાશિ બાળિ નાંખિને અશેષ, અમૃત ધામ સત્ય આપશો મહેશ. ૨
મોહપાશબદ્ધ અલ્પ હું અજ્ઞાન, કરો મુક્ત મને હે કૃપાનિધાન;
વિનાનાથ અન્ય શરણ કોનું લાવું, દયા થાય તોજ પાપમુક્ત થાઉં. ૩
ચડો વારે પ્રભુ કષ્ટ મહા ભારે, ગ્રહી હાથ કોણ અન્ય તે નિવારે;
વિષયમોહબંધ નાથ કાપિ નાંખો, આત્મ ઉન્નતિનો પુણ્ય માર્ગ દાખો. ૪

તોટક.

પરબ્રહ્મ પરાત્પર વિશ્વપતિ, નમિને તમને કરુંછું વિનતિ;
પ્રભુ વ્યષ્ટિસમષ્ટિવિષે વિચરો, કરુણાનિધિ કષ્ટ સમસ્ત હરો. ૧

छे. ते बधां कारण मारा समजवामां आवतां नथी. हुं तो केवळ तारा उपर भरोंसो राखी रह्योछुं. जे साधनोनी वक्षीस तें करी छे तेनो रूडो उपयोग यथाशक्ति करीने सदा तारो पाड मानुं, अनित्य सुखो भोगवतां छतां ते उपर आसक्त ना थाउं. कल्याणकारी ! तारा अनुग्रहरूपी नित्यनुं सुख संपादन करवाने आतुर रहुं, ए नित्यनुं सुख मेळववाने सदा उद्यममां रहुं, निरंतर मंड्यो रहुं, आ संसारनां, क्षणिक सुखने लोभे अने क्षणिक दुःखना भयथी आडी वाटे न जाउं, सुख समये तारा सुनीतिना नियमोने आधीन रहुं, अने दुःखनी वेळा खरा विंश्वासथी चाली, श्रद्धापूर्वक तारी अनन्यभक्ति छोडुं नहि अने तने दोष न देतां धीरजथी जे थाय ते सहन करुं, एवी मति आप. मारी आ अरजमां कांइ अयोग्य होय तो मारी भूल माफ करीश. अमे तारां अज्ञान बालक छीए. धनादिनी अने इंद्रियना भोगनी तृष्णा सुनीतिनी घटित मर्यादामां राखवानुं सामर्थ्य नम्रतापूर्वक मागीए छीए ते करुणा करी आप. सदुद्योगथी ने सत्य मार्गे जे मळे तेमां राजी रहीए एवो संतोष आप. संकट समये सावध रही सद्धर्मनां कर्मो चूकीए नहि, खोटे रस्ते चढीए नहिं एवी बुद्धि देनार सर्वशक्तिमान महापिता विना वीजुं कोई नथी. हे मायाळु पिता ! परब्रह्म परमात्मा ! भक्तोना अंतःकरणमां ज्ञाननो प्रकाश करनार ! मारा मननो अं

अवलंबन सत्य प्रभूपदनुं, शुभ कार्य करो सघळा जननुं;
मुज चित्तविषे प्रभु शांतिभरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १२
प्रभु अंतरयामि अनादि तमे, तमने सुनिती शुभ मार्ग गमे;
निजभक्ततणी रुडि आश पुरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १३
अपराध अगाध हुं नित्य करुं, प्रभु तारि कृपाथकि मात्र तरुं;
मुज मंद मती सघळी सुधरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १४
अभिवंदन विश्वपती चरणे, करिने रहुंछुं प्रभुने शरणे
शुभ आशिष नाथ सदा उचरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १५

भुजंगी.

परात्मा प्रभु चिद्घना चित्स्वरूप, सदानंद आनंददाता अनूप;
अनिर्वाच्य शक्ती तमारी अपार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. १
नियंतृत्व कर्तृत्व सत्ता तमारी, दयासिंधु दीसो बहू उपकारी;
सहू शास्त्रनो एज सिद्धांतसार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. २
षडैश्वर्यसंपन्न स्वामी समर्थ, पुरो सेवकोना तमे सर्व अर्थ;
कृपावीण कोया न थाशे लगार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. ३
रची कोटि ब्रह्मांडना सर्ग पोते, महाशक्तिथी व्याप्त छो पूर्ण ज्योते;
तमे प्राणदाता प्रभू निर्विकार, जगद्बंधने वंदिये वारवार. ४
तमारा प्रभू विश्वमां नीम साचा, अमो जीवना सर्व संकल्प काचा;

प्रभुता प्रभु तारि दिसे सघळे, तुज पार पुरो अमने न मळे;
प्रगट्यो परिपूर्ण प्रताप खरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. २
भुमिमंडल सुंदर शोभि रह्युं, तुज शक्तिथकी भरपूर थयुं;
प्रभुनाथ तमे भवताप हरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ३
गगने ग्रहराज विराजि रहे, प्रभुनी प्रभुतानु प्रमाण कहे;
सचराचर सृष्टि विषे पसरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ४
ग्रहगोल विचित्र गतीथि फरे, परब्रह्म तणो प्रतिबोध करे;
प्रभु निर्मित नीमथकी न फरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ५
प्रभुना पदपंकजने प्रणमुं, शुभ ध्यान धरी मनमां निरखुं;
वरहस्त तमे मुज शीष धरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ६
शुभ मंगल नाम मुखेथि जपुं, निजकर्म यथा तमने अरपुं;
मुज चित्तविषे प्रभु भक्ति ठरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ७
अविनाश पदे अभिलाष धरुं, भवसागर नाथ कृपाथि तरुं;
मुज चित्त थकी कदि ना विसरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ८
मुज अंतरभावथकी निरखुं, विभुनाथ तने वदतुं शुं नहुं;
शरणागत जाणि ग्रहीज करो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ९
करुणाथकि दुःख विपत्ति टळे, करुणाथकि नाथ प्रसाद मळे;
करुणाथकि कार्य समस्त सरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १०
जिवना अवगुण तमे न गणो, मुज आश्रय आपकृपाजतणो;
प्रभुरे करुणामृतदृष्टि करो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ११

करुणाकर कर धरशो, हरशो मुज सकल दुःख संताप;
प्रेमल दृष्टिथकी प्रभु, करशो मुज रंकनां क्षमा पाप. २
नित्य निरंतर देखो, सेवक जननी बधी कृती तात;
नविन नथी के'वानुं, जाणो मुज सकल हृदयगत वात. ३
शरण सुखप्रद तारुं, ग्रहण किधुं छे अमे जगाधीश,
विमुख विभू नव करशो, वंदन करिये तने हृदे ईश. ४
अति उपकार तमारां, क्षणप्रतिक्षणमां दिसे दयासिंधु;
दिनवत्सल दिनबंधु, तुज शुभ चरणे सदा हुं अभिवंदुं. ५
भोगववां कृत कर्मो, ए प्रभुनिर्मीत नियम छे नित्य;
लाभ समिप मुक्तीनो, मळशे सद्धर्म कृत्यथी सत्य. ६
नाम कृपासिंधू ते, सार्थक करशो दयानिधी देवा;
थर थर थर कंपुंछुं, किंचित तारी नथी किधी सेवा. ७
साष्टांगे नमुं तमने, कृति सामुं प्रभु कदापि नव जोशो;
राखो लाज अमारी, शरणागतना क्षमा करो दोषो. ८
भावथकी प्रभु तमने, भजशे तेनां त्रिविधि दुख टळशे,
ईश्वरप्रसाद मळशे, संचितसकळशुभधर्मकृत फळशे. ९
जय जय जय करुणाब्धे, जयजयकारो करो तमे देवा;
प्रेमथकी परमेश्वर, सेवकजननी स्विकारशो सेवा. १०
नम्र विनंति अमारी, करुणा करिने तमे हृदे धरशो;
तेमां घटित हशे जे, ते ते इच्छा तमे पुरी करशो ११

प्रेमाक्षत अर्पण करि, प्रार्थन करिये सदा असे तमने,
सद्गति प्राप्त थवाने, सन्मतिं देशो दयानिधी अमने. १२
शरणे रही तमारे, ध्यान तमारुं हृदय विषे धरिये;
स्तवन भजन कीर्तन करि, शिरसाष्टांगे प्रणाम प्रभु करिये. १३

गायन.

पद.

काफी. चोताल.

शुभ गुण गाय गाय मंगल पद थाय थायरे,
शुभ गुण गाय०
सुंदर नरनारी मळी मंडळ लागे प्रभुने पाय पायरे,
शुभ गुण गाय०
करुणामय दृष्टिथी तमारी, दुरित क्षति सर्व जाय जायरे,
धन्यधन्यधन्यधन्य, धन्य सच्चिद्घन, मंगल कुस नित्य थाय थायरे.
शुभ गुण० १

पद.

बिलावल. त्रिताल (अष्टपदी)

नमुं जगदीश्वर प्रभु परमेश्वर, परपद मंगलदाता;
जगदुद्धारक जनसुखकारक, दुःखपरिहारक त्राता. नमुं० १

षड्गुणयुत भगवंत तमे छो, विश्वतणा विभु धाता;
ऋषि मुनियो तुज शुभ महिमाना, मंगल यश गुण गाता. नमुं० २
एक तमे अद्वितीय स्वरूप, विश्व विषे विचरो छो;
सदा निरंतर भक्त जनोनी, प्रभु संभाळ करो छो. नमुं० ३
धन्य कृतिछे जगरचनानी, कदि नव जाय वखाणी;
यथाघटित नियमो बांध्याछे, करुणा चित्तमां आणी. नमुं० ४
शक्ति सबल सर्वेश्वर तारी, विश्व विषे रहि व्यापी;
मानविजनने घटित नियमथी, मतिमर्यादा आपी. नमुं० ५
सृष्ट वस्तुथी स्रष्टा भासो, परमात्मा भगवान्;
त्रिगुण शक्ति तें धारी तथापि, सात्विक गुण प्रधान. नमुं० ६
मिथ्या भासित नथी थयुं आ, सृष्टितणुं मंडाण;
अति चातुरिथी सर्व वस्तुमां, नियम कीधो निर्माण. नमुं० ७
देहाकृतिमां अतिअद्भुत जे यांत्रिक युक्ति जणाय;
तेथकि प्रभु कर्ता छो तेनां, मुख्य प्रमाण गणाय. नमुं० ८
ग्रहगण गगने गणितनियमथी, अति शोभाथी प्रकाशे;
उपग्रह ग्रहयुक्ति अस्तोदय, निरखी चित्त उल्लासे. नमुं० ९
आस्तिकजन सानंदाश्चर्ये, प्रभुमहिमाने माने;
वारवार विचार करीने, ब्रह्मपदे विश्रामे. [illegible]१
अभिवंदन दीनवत्सल तमने, करिये वारंवार;
श्रवण करो करुणानिधि सर्वे, दीन जनना उच्चार.

प्रेमाक्षत अर्पण करि, प्रार्थन करिये सदा अमे तमने,
सद्गति प्राप्त थवाने, सन्मति देशो दयानिधी अमने. १२
शरणे रही तमारे, ध्यान तमारुं हृदय विषे धरिये;
स्तवन भजन कीर्त्तन करि, शिरसाष्टांगे प्रणाम प्रभु करिये. १३

गायन.

पद.

काफी. चोताल.

शुभ गुण गाय गाय मंगल पद ध्याय ध्यायरे,
शुभ गुण गाय०
सुंदर नरनारी मळी मंडळ लागे प्रभुने पाय पायरे,
शुभ गुण गाय०
करुणामय दृष्टिथी तमारी, दुरित कृति सर्व जाय जायरे,
धन्यधन्यधन्यधन्य, धन्य सच्चिद्घन, मंगल कुस नित्य थाय थायरे.
शुभ गुण० १

पद.

बिलावल. त्रिताल (अष्टपदी)

नमुं जगदीश्वर प्रभु परमेश्वर, परपद मंगलदाता;
जगदुद्धारक जनसुखकारक, दुःखपरिहारक त्राता. नमुं० १

जय जगदीश्वर जय परमेश्वर, जय परब्रह्म परेश;
प्रसन्न थइ प्रेरो सद्बुद्धि, विनवीए विश्वेश. नमुं० २२
प्रेमथकी आज्ञाओ तारी, सेवकजन जे पाळे;
परमात्मा पोतानो तेने, जाणी सदा संभाळे. नमुं० २३
मनवाणीकायाथी तमने, करिये कोटि प्रणाम;
ऐहिक सुख आपो प्रभु अमने, परलोके निज धाम. नमुं० २४



आरति.

जयदेव जयदेव जय सृष्टिकर्ता जय सृष्टिकर्ता
संकट भयदुखहर्ता (२) विश्वतणा भर्ता जयदेव० १
जय जगवंद्य दयाल जय करुणामूर्ति (२)
मंगल महिमा गावा (२) वाणि नथी पुरती जयदेव० २
जय चैतन्यस्वरूप गुणगणना गणतां (२)
ऋषि मुनि सर्व विराम्या (२) लक्ष्य स्थले जातां जयदेव०
नथि धरता अवतार नथि प्रभुनी प्रतिमा (२)
विश्वेश्वर व्यापक प्रभु (२) चिद्घन परमात्मा जयदेव० ४
अंतर्यामि अजात अनुपम अविकारी (२)
मानासि मंगल अर्चा (२) प्रभुने प्रियकारी जयदेव० ५

भवसागरथी तरवा तारी, करुणारूपी नौका;
प्रेमथकी सन्मार्ग बतावो, तो तरिये निःशंका. नमुं० १२
विकट विभू भवपंथ घणोछे, जीवथी कादि न तराय;
दयासिंधु करुणा करशो तो, नाहिं ते दुस्तर थाय. नमुं० १३
कृति अमारी प्रभु नव जोशो, दोष किधा छे भारे;
मातपिता शिशुना अवगुणने, चित्तमां कादि नव धारे. नमुं० १४
आ संसारे शुभ कर्मोनी, मति आपो जगदीश;
सदाचरणथी भक्ति तमारी, करिये प्रभु दिनानिश. नमुं० १५
जगदीश्वर जगवंद्य तमारा, अकल कला न कळाय;
सत्संकल्पो छे प्रभु तारा, मिथ्या कादि नव थाय. नमुं० १६
भक्तिविना नीति निष्फल छे, कादि करवो न वियोग;
विनानीतिं भक्ति करवाथी, थाय न शुद्ध प्रयोग. नमुं० १७
सत्य वचन सद्धर्माचरणो, सद्विद्या सत्संग;
चित्तार्पण प्रभुचरणे करवुं, ए भक्तिनुं अंग. नमुं० १८
अवलंबन आधार तमारो, छे साचो भगवंत;
भयसंकटसंताप निवारो, करुणा करि अत्यंत. नमुं० १९
विनयथकी साष्टांगे तमने, वंदन करिये नाथ;
कृपावना करुणादृष्टिथी, क्षमा करो अपराध. नमुं० २०
शरण तमारुं ग्रहण किधुं छे, प्रभु करशो न निराश;
अविचल पद परमात्मा आपो, जाणी तमारो दास. नमुं० २१

छंद, गीत, वगेरेनी अक्षरवार अनुक्रमणिका.

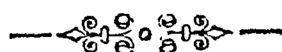
प.

५ मंगल समय आज स्मरिने जगाधिराज.	,,	९१४
६ मनकर्मवाणीथकी प्रभुने वंदु रे.	संगीत.	१३

व.

१ विश्वाधीशा विनयथि नमुं नित्य पाये तमारे.	मंदाक्रान्ता.	१११
२ वंदु नित्य परमात्म ब्रह्मने.	रथोद्धता.	१४५
३ विश्वेश वंद्य विभु छे तमने विदीत.	वसंततिलका.	१९७
४ वंदु हुं परमेश व्याप्त विभुने वंदुं जगाधीशने.	शार्दूलविक्रीडित.	१२१
५ विश्वाधीशा विश्ववंद्या विधाता.	शालिनी.	८८
६ विश्वनाथ नित्य शुद्ध मुक्त छो.	सेनिका.	१३९
७ विश्वाधारा अपारा अतिविनयथकी वंदुं पादारविंदे.	स्रग्धरा.	२८
८ वंदु परब्रह्मचरण करुं छुं शुभनामस्मरण.	ध्रुपद.	१५८
९ विधाता धन्य छे तारी रचना जगतनी अनंत.	संगीत.	१४८
१० विनति करुं कर जोडी.	,,	८१
११ विनति प्रभु सांभळो मारी.	,,	९२
१२ विश्वनाथ तुं विना न को सहायकारी.	,,	१३७

कठण शब्दनो कोश.



अखंड.	जेना भाग थाय नहिं; जेना अंश थाय नहिं ने होय नहिं.
अखिल.	सर्व; कुल; बधुं.
अगम्य.	न पामी सकाय एवुं; न जणाय एवुं.
अगाध.	अपार; गहन.
अगोचर.	इंद्रियोना जाणवामां न आवे एवुं.
अग्रे.	आगळ, पहेलां.
अघ.	पाप, अपराध, गुन्हो.
अङ्कित.	सेवक, दास, चाकर, नोकर.
अचिन्त्य.	विचारमां आवी सके नहिं एवुं.
अजर.	जेने घडपण नहि ते.
अंजलि.	खोबो, पोश.
अजात, अज.	जन्मरहित. जेने अवतार नथी ते.
अतर्क्य.	विचारमां न आवी सके,जेनो तर्क थइ न सके ते.
अतुल.	जेनी बरोबर बीजुं नहिं ते.
अत्युग्र.	मोटुं, भारे, महा.
अदृश्य.	देखाय नहिं तेवुं.

अद्भुत.	आश्चर्यकारक, चमत्कारी.
अद्वितीय.	जेना जेवुं बीजुं नथी.
अधिष्ठान.	स्थिति. राज्य.
अध्यक्ष.	मुख्य, प्रमुख.
अध्यात्मिक.	आत्मानुं.
अनन्यभक्ति.	एक ईश्वरविना बीजा कोइ देवउपर भक्ति न राखवी ते.
अनादि.	आरंभवगरनुं.
अनाद्यंत.	जेनो आरंभ अने अंत नथी ते.
अनिर्वाच्य.	कही सकाय नहिं, वर्णवी सकाय नहिं तेवुं.
अनुकंपा.	दया, करुणा.
अनुग्रह.	कृपा, महेरबानी, उपकार.
अनुपम.	जेने कोइ जोडे सरखावी सकाय नहिं एवुं.
अनुभवुं.	भोगववुं.
अनुवर्त्तन.	पाछळ पाछळ चालवुं.
अन्तः	अंतरनुं, मननुं, मांहेनुं, अंदरनुं.
अन्तर्गत.	मनमांनुं, मनमां रहेलुं.
अन्तर्याग.	मानसिक पूजा.
अन्तःस्थ.	मनमां रहेलुं.
अन्य.	बीजुं.

अन्योन्याकर्षण. एक बीजा तरफ खेंचवानो गुण.
अपरिमेय. मापी सकाय नहिं तेवुं, मापमां न आवे एवुं.
अप्रतिम. जेनी मूर्त्ति नथी, जेनी छबी नथी एवुं.
अपाय. दुःख, कष्ट, सन्ताप.
अबाध. निर्दोष.
अब्धि. सागर; मोहाब्धि एटले मोहनो सागर.
अभाव. न होवुं.
अभिलाष. इच्छा, आशा, उमेद.
अभिवंदन. नमस्कार.
अभीष्ट. इच्छेलुं, सारुं, भक्ताभीष्ट एटले भक्तनुं इच्छेलुं
अभेद्यपट. भेद, प्रवेश न थाय एवो पडदो.
अभ्युदय. चढती कला, सारो वखत.
अमर. जेने मरण नहि.
अरिष्ट. अमंगल, पीडा, संताप.
अर्चन. सेवा, पूजा.
अर्थ. सार, फल, लाभ.
अर्भक. बालक, छोकरुं.
अल्पधी. थोडी बुद्धिवाळुं.
अल्पज्ञ. थोडुं जाणनार, अणसमजु. अल्प एटले थोडुं. ज्ञ जाणनार.

अवकृपा.	गेरमेहरबानी.
अवगणना.	न गणकारवुं.
अवलंबन.	वळगी रहेवुं, पकडवुं, आश्रय, आशरो.
अविद्या.	अज्ञान.
अविनाश.	नाश नहि पामे तेवुं, सदाकाल रहे एवुं.
अविहित.	जे करवानुं कहेलुं नहि ते; जे करवानो निषेध करेलो ते.
अव्यक्त.	गुप्त, अदृश्य, माणसनी दृष्टिवडे देखाय नहि एवुं.
अस्तित्व.	होवापणुं.
आर्तिहारक.	आर्ति एटले दुःख, संताप; हारक एटले हरण करनार, लइ लेनार.
आशय.	हेतु, मतलब, भावार्थ, तात्पर्य.
आश्वासन.	दिलासो, धीरज.
इष्ट.	इच्छेलुं, प्रिय, वाहालुं, सारुं.
ईश.	धणी, स्वामी, राजा.
उत्पादक.	उत्पन्न करनार, सरजनार.
उद्भव.	उत्पत्ति.
उन्नति.	उंची अवस्था. उत्कृष्ट स्थिति.
उपकृति.	उपकार, पाड.
उपग्रह.	ग्रहनी पाछळ फरनार नानोग्रह जेम चंद्र ए पृथ्वीनो उपग्रह.

उपशांति. शांति.

उपसंहार. समेटी लेवुं.

उपाधि. मोह जाल. विषयो, पदार्थो, कारणो.

उपेक्षा. विसारवुं, भूलवुं.

उभय. बेउ.

ऊर्मि. उछाळो, तरंग, मनोवृत्ति.

ऐहामुष्मिक. आ लोक अने परलोकनुं. ऐहिक एटले अहींनुं, आ संसारनुं अने आमुष्मिक एटले परलोकनुं के मुआ पछीनुं.

औदार्य. उदारपणुं.

औषधी. वनस्पति.

कटाक्ष. जराक नजर करवी, सहज जोवुं.

कन्द. संग्रह, मूळ.

करुणाब्धि. दयाना सागर.

कर्त्तृत्व. कर्त्तापणुं.

कर्तुमकर्तुम् अन्यथाकर्तुम्. कर्तुम् करवाने. अकर्तुम् न करवाने; अन्यथा कर्तुम्, बीजां रुप करवाने.

कर्त्तव्य. करवा योग्य. (कर्त्तव्य कर्म एटले फरज धर्म) जे काम आपणे करवां जोइए ते.

कामद.	इच्छा पूरी पाडनार.
कारुण्य.	करुणा, दया.
किल्बिष.	पाप.
क्लिष्ट.	ताणी तोशीने वेसाडेलुं. खोटुं.
कुपित.	कोपायलुं, क्रोधायमान थयेलुं.
कृतज्ञ.	करेलो उपकार जाणनार.
कृतघ्न.	करेलो उपकार भूलीजनार.
कृतकृतार्थ.	आ जगत्‌मां जे करवानुं ते करी चूकेलो.
कृपा.	महेर.
कृपाघन.	घणी कृपावाळो.
क्रम.	अनुक्रम.
गहन.	न कळाय एवुं, न समजाय एवुं.
गुणान्वित.	गुणयुक्त, गुण भरेलुं; अन्वित एटले युक्त के भरेलुं.
ग्रहगण.	ग्रहोनां टोळां.
ग्रहद्युति.	एक ग्रह बीजा ग्रह के सूर्य उपर थइने जतो जणाय ते.
ग्रहराज.	सूर्य.
घांटी.	कठण मार्ग, मुशकेल वखत.
चमत्कृति.	अचरत पमाडे एवां काम.

चिद्घन. मोटुं चैतन्य, परमेश्वर.
चिद्रूप. चैतन्यरूप, चिदात्मा.
जगत्त्रयगुरु. त्रण जगत्‌ना गुरु.
जगन्निवास. जगत्‌मां व्यापी रहेला.
जनित. उत्पन्न थयेलुं, उपजेलुं.
तत्पद. परमेश्वर, ते पद.
तदनुसार. ते प्रमाणे, तेने अनुसरीने; तत् एटले ते, अनुसार, प्रमाणे.
तंत्र. रचना; जगत्तंत्र एटले जगतनी रचना, गोठवण.
तोष. संतोष.
त्राता. तारनार, रक्षण करनार.
त्रिभुवन. (त्रिलोक जुओ.)
त्रिलोक. १ स्वर्ग, २ मृत्युलोक, ३ नरक.
त्रिविधि. त्रण प्रकारनुं, १ अध्यात्मिक, एटले शरीर अने मन संबंधी संताप, जेवा के, खेद, शोक रोग इत्यादि. २ आधिभौतिक, सृष्टिना उत्पात, जेवा के भूकंप, रेल, दुष्काल, आग, इत्यादि. ३ आधि दैविक-अकस्मात् दैवीकोप, जेवा के वीजळीनुं पडवुं, कोगळीयुं इत्यादि.

नित्यमेव.	सदा, रोज, नित्य.
निदान.	नक्की.
निंद्य.	निंदा करवा योग्य.
निधान.	भंडार.
निपात.	पडवुं.
निमग्न.	डुबेलुं, लपटायलुं.
नियंता.	नियम चलावनार, सर्व अधिकार चलावनार राजा, बधा ब्रह्मांडने नियममां राखनार.
नियंतृत्व.	नियंतापणुं.
निवृत्त.	शान्ति पामेलुं.
निर्मित.	निर्माण करेलुं, ठरावेलुं.
निवारो.	दूरकरो, नाशकरो, कहाडी नांखो.
निशमणि.	चंद्र.
निःशेष.	बीलकुल, अशेष, बधुं, तमाम.
निषिद्ध.	मनाकरेलुं, जे करवानी ना कहीछे, अविहित, निंद्य.
निष्ठा.	श्रद्धा, विश्वास, अचल प्रीति.
निष्ठुर.	नठारुं, खोटुं, माठुं.
नेति.	एवो नथी, कशा जेवो नथी, कोइ जेवो नथी. न+इति-नेति ए श्रुति वचन छे.

महोदधि.	महासागर.
माया.	शक्ति, मोह, प्रपंच.
मुक्त.	छूटुं, उत्तम गति पामेलुं.
मूक.	मूगो, बोबडो.
यथा.	जे प्रमाणे, जेटलुं.
यद्वातद्वा.	जेम तेम.
याचवुं.	मागवुं, जाचवुं.
यातना.	दुःख, पीडा.
याम.	पहोर (रात्रदिवसना), गति करनारा.
युत.	युक्त.
रति.	प्रेम, स्नेह.
रवींदु.	सूर्य अने चंद्र.
रिष्ट.	माठुं, खोटुं.
लक्ष्य.	जोवानुं ते.
लता.	वेलो.
लिप्त.	गरक, लपटाइ गयेलुं, फसाइ गयेलुं.
वत्सल.	वहालुं, प्रिय (भक्तवत्सल एटले जेने पोताना भक्त वहाला छे.)
वन्दु.	नमुं.
वंद्य.	नमवा योग्य.

वह्नि.	अग्नि.
वर.	वरदान, बक्षीस.
वरेण्य.	वखाणवा जोग.
वरद.	वरदान करनार.
वरिष्ठ.	सर्वोत्तम, सउथी मोटुं.
वाक् काया मनथी.	वाणी, शरीर अने मनथी—एटले बोलवुं, करवुं, अने धारवुं.
वाञ्छा.	इच्छा.
विकर्म.	दुष्ट काम.
विकसित.	खिलेली.
विकार.	बगडेली मनोवृत्ति.
विडंबना.	दुःख, संताप.
विदारो.	दूर करो.
विधाता.	मोटो निर्माण करनार, ठरावनार.
विधान.	विधि, सेवानो प्रकार,
विनयभाव.	नम्रता.
विपत्ति.	दुःख, संकट, आपत्ति, आपदा.
विबुद्ध.	वधारे बुद्धिवाळुं.
विभु.	सर्वव्यापक, बधे ठेकाणे हाजर.

विमल.	मेल वगरनुं, चोख्खुं.
विमुख.	दूर, आघुं.
विराजमान.	शोभायमान.
विरास्या.	थाक्या.
विश्वाधीश.	विश्वना अधीश एटले उपरी.
विश्वेश.	विश्वना धणी, ब्रह्मांडना स्वामी.
विश्वंभर.	जगतनुं भरणपोषण करनारा.
विषय.	इंद्रियोने भोगववानी वस्तु.
विषाद.	खेद.
विहित.	जे करवाने कहेलुं छे, सारां काम, घटारत.
विज्ञप्ति.	विनति, अरज, मागवुं.
विज्ञान.	विशेष ज्ञान.
वृथा.	मिथ्या, फोगट, नकामुं.
वृष्टि.	वरसाद.
व्रतस्थ.	नियम पाळनारा.
व्यष्टि.	पृथक् पृथक् वस्तु.
व्योम.	आकाश.
शमदमादि.	एटले शम, दम, तप, तितिक्षा समाधान, अने श्रद्धा. शम एटले मननी शांति, दम एटले मननो निग्रह अथवा मननुं मारवुं, मनने

कहामां राखवुं. तप एटले भक्ति करवामां काळ काढवो, तथा सारां कामनो विचार करवो तथा सारां काम करवां; तितिक्षा एटले आपत्तिनी के दुःखनी वेळा धीरज राखवी, गभरावबुं नहि, अने परमेश्वरनी इच्छाने आधीन रहेवुं समाधान एटले मनने संतोषमां स्थिर राखवुं श्रद्धा एटले ईश्वर एकछे अने तेज पूज्यछे, एवो दृढ विश्वास राखी ते प्रमाणे वर्त्तवुं.

शरण्य. रक्षण करनार, पाळनार, बचावनार.

शशी. चंद्र.

शान्ताकार. शांन्तिरूप.

शाप. दुःख थाय तेवी आज्ञा.

शिव. कल्याण करनार, मंगळकारी.

शिशु. बालक.

शीघ्र. उतावळे.

श्रुति. वेद, एटले ज्ञानना ग्रंथ.

श्रेयः कल्याण, शुभ, सारुं.

षडैश्वर्य. छ ऐश्वर्य. (अंक १० मानी गद्य प्रार्थना टीपमां जुवो.)

सगुण.	जेनामां संपूर्ण अने सर्व सारा गुण छे.
संकल्प.	ठराव, जे वातनुं नक्की कर्युं होय ते.
संचित.	एकठुं करेलुं, भेगुं करेलुं.
सर्ग.	सृष्टिरचना.
सतत.	सदाकाल, हमेश.
सद्धर्म.	साचो धर्म, रूडो धर्म.
सद्य.	तुरत.
सान्निध.	पासे, समीप, नजीक.
सन्ध्या.	परमेश्वरनुं ध्यान करवानो समय के संधि.
सन्मति.	सारीबुद्धि, सारो विचार.
संपूज्य.	रूडी रीते पूजवा लायक.
समष्टि.	समुदाय.
समीप मुक्ति.	मुवा पछी परमेश्वरनी पासे रहेवुं ए समीप मुक्ति.
संरक्षार्थे.	सारा रक्षणने माटे.
सर्व्वविद्.	वधुं जाणनार, सर्वज्ञ.
सर्वथा.	हरेक रीते, वधे प्रकारे.
सर्वज्ञ.	वधुं जाणनार.
सर्व्वात्मा.	परमात्मा.

सर्वान्तर्यामी.	सर्वना अंतःकरणनी वात जाणनार, सर्वना मनमां पेसीने जोनारा.
सर्वादि.	सहुथी पहेला,
सर्वोत्कृष्ट.	सहुथी सारो.
सविता.	उत्पन्न करनार, जगत्कर्त्ता.
संसाराब्धि.	संसारसागर.
संस्कार.	कर्म, काम.
सहनशीलता.	खमी रहेवानो गुण.
सहस्रधा.	हजारवार.
संहार.	नाश.
स्वयंभु.	स्वतःसिद्ध, कोइनाथी उत्पन्न थएला नहि.
स्वर्गापवर्ग.	मोक्षधाम, परमसुखधाम.
स्वल्प.	नानुं, सहेलुं, टूकुं.
सात्विक.	सारुं शान्त प्रकृतिनुं.
साधु.	सद्गुणी माणस.
सानंदाश्चर्य.	आनंद साथे आश्चर्य, हरखनी जोडे अचंबो.
साष्टांग.	आठ अंगथी.
सिंधु.	समुद्र, दरिओ, सागर.
सुखप्रद.	सुख आपनार.
सुतवात्सल्य.	पुत्रप्रेम, वापनुं छोकरां उपर हेत.

सुधा.	अमृत.
सुरवर.	देवमां मोटा, सुर एटले देव, वर एटले मोटा.
सुषुप्ति.	घोर निद्रा, भरउंघ.
सृजाव्या.	उत्पन्न कर्या.
सृष्ट्युत्पत्ति.	जगतनुं पेदा थवुं.
सेतु.	पूल.
स्तव.	स्तोत्र, स्तवन.
स्थिरचर.	जड चैतन्य.
स्रष्टा.	सृजनार, बनावनार, परमेश्वर.
हर, हर्त्ता.	लेइ लेनार, नाश करनार.
हरि.	पाप हरण करनार परमेश्वर. (संस्कृत कोशमां हरि शब्दनो अर्थ विष्णु के कृष्ण कर्यो छे, पण गूजरातना जूना अने नवा कविओए ए शब्दने जगत्कर्ता अने नियंता परमेश्वरने अर्थे वापर्यो छे. प्रार्थना समाजना बधा ग्रंथोमां एज अर्थ राख्यो छे, हरि एटले परब्रह्म परमेश्वर.)
हितार्थे.	फायदाने वास्ते; हित एटले गुण अथवा फायदो; ने अर्थे एटले, वास्ते.
हुताशन.	अग्नि.

३० पितृबोध. ("Parental Advice" नो तरजुमो.)	कृष्णराव भोळानाथ.	०—०—३
३१ भ्रातृभाव.	सत्येन्द्रनाथ टागोर.	०—१—०
३२ परकाल.	"	०—२—०
३३ नव संहिता. (केशवचंद्रसेनना मूळ इंग्रेजीनुं मराठी.)	बळवंत भाऊनगरकर.	१—०—०
३४ (गृह) वास्तुनिमित्त प्रार्थना.	रमणभाइ महीपतराम.	०—१—०
३५ साधनबिंदु.	नारायण हेमचंद्र.	०—४—०
३६ ब्राह्मधर्मनां व्याख्यानं. (प्रथमखंड.)	"	०—२—०
३७ प्रभुप्रार्थना. (केशवचंद्रसेननी मूळ इंग्रेजीनो तरजुमो.)	विनायक अनंतराय.	०-१०-०
३८ स्त्रीधर्मनीति. (पंडिता रमाबाइना मूळ मराठीनो तरजुमो.)	मुकुन्दराम नित्याराम.	१—४—०
३९ व्याख्यान.	वैद्य मयाराम सुंदरजी.	०—०—३
४० सद्धर्मदीपिका. (नवीन चंद्ररायना मूळ [illegible] उपरथी तरजुमो.)	"	०—०—३

९५ आठमुं व्याख्यान. (महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुरना मूळ बंगाळीनो तरजुमो.)		०--०--३
९६ ज्ञानसुधा. (मासिक.) छपाय छे.	वार्षिक लवाजम.	१—३—०
९७ नैमित्तिकउपासनासंगीत.	भोळानाथ साराभाइ.	
९८ भजनसंग्रह.	,,	
९९ भक्तसुहृद. (बालोन्नतिसहाय, ब्रह्मसंगीत, नैमित्तिकउपासनासंगीत अने भजनसंग्रह. ए सर्वनुं एकत्र पुस्तक.)	,,	

इंग्रेजी. (ENGLISH).

1. Asia's Message to Europe	Keshub Chundra Sen	0–8–0
2. Economy of Human Life	B. B. Nagarkur	0–6–0
3. Ends and Aims of College Education.	R. G. Bhandarkur	0–1–0
4. Parental Advice		0–0–6

३० पितृबोध. ("Parental Advice" नो तरजुमो.)	कृष्णराव भोळानाथ.	०—०—३
३१ भ्रातृभाव.	सत्येन्द्रनाथ टागोर.	०—१—०
३२ परकाल.	"	०—२—०
३३ नव संहिता. (केशवचंद्रसेनना मूळ इंग्रेजीनुं मराठी.)	बळवंत भाऊनगरकर.	१—०—०
३४ (गृह) वास्तुनिमित्त प्रार्थना.	रमणभाइ महीपतराम.	०—१—०
३५ साधनबिंदु.	नारायण हेमचंद्र.	०—४—०
३६ ब्राह्मधर्मनां व्याख्यानं. (प्रथमखंड.)	"	०—२—०
३७ प्रभुप्रार्थना. (केशवचंद्रसेननी मूळ इंग्रेजीनो तरजुमो.)	विनायक अनंतराय.	०-१०-०
३८ स्त्रीधर्मनीति. (पंडिता रमाबाइना मूळ मराठीनो तरजुमो.)	मुकुन्दराम निसाराम.	१—४—०
३९ व्याख्यान.	वैद्य मयाराम सुंदरजी.	०—०—३
४० सद्धर्मदीपिका. (नवीन चंद्ररायना मूळ हिंदी ऊपरथी तरजुमो.)	"	०—०—३

अज्ञानोना, अति दृढ तमे, पाशने कापि नांखो. ६
सर्वाध्यक्षा, सकल जगमां, शक्ति तारी अगाध,
साक्षी सर्वान्तरगत तमे, विश्वव्यापी अजात;
प्राणीओनुं, कुशल करता, छो तमे मात तात,
साष्टांगे हुं, अति विनयथी, वंदुं विश्वाधिनाथ. ७
प्रातःकाले, प्रभु करु तने, नित्य हुं वंदनाओ,
सत्क्रीयाओ, सफलित थवा, राखुंछुं वाञ्छनाओ;
सायंकाले, प्रणमि करु हुं, प्रेमथी प्रार्थनाओ,
मागुं नित्ये, शयन समये, पूर्ण तारी कृपाओ. ८
माया तारी, अतिगहन छे, को थकी ना पमाय,
देवा तारा, अनुप पदनुं, माप कोथी न थाय;
क्ती तारी, त्रिभुवन विषे, पूर्णताथी जणाय,
ये तारी, परम करुणाथी जिवोथी जिवाय. ९
रेमांतःकरणथि करुं, मानसी अर्चनाओ,
वारे, नमन करिने, याचुंछुं याचनाओ;
भक्ती, थकि तुज पदे, राखुं हुं भावनाओ,
नसे, मन वचनथी, सर्व पापक्षमाओ. १०
नो, करुं हुं तुळना, तुच्छ हुं प्राणि भाखुं,
अतिशय दयाथी, हुं विश्व निवासुं;
सकळ नियमो, निर्मि चित्ते उलासुं,

३
अंतर्यामि, यजन करिने, प्रेमभावे उपासुं.
वंदुं विश्वाधिपति तमने, विघ्न सर्वे निवारो,
बुद्धीदाता, सतत अमने, सूचनो सद्विचारो;
भक्तीभावे, विनति करुं ते, लक्षमां सर्व धारो,
विश्वोद्धारा, विभु करि कृपा, विश्वसिंधुथी तारो. १२

वंशस्थविल.

नमो नमो नाथ दयानिधी तने, प्रणाम सर्वे करिये सदा असे;
दया करी दुःख बधां निवारशो, प्रसन्न थाओ भवसिंधु तारशो. १
विनंति विश्वेश चिते विचारशो, पतीत जाणी प्रभु ते स्विकारशो;
सदा सुनीती सुमती बतावशो, कृपा करी पाप थकी बचावशो. २

गायन.

पद.

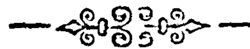
भैरव तथा सर्व रागनां गाय.

मंगल समय आज स्मरीने जगाधिराज,
मळी भक्तनो समाज स्तुतियो तमारी गाय;

्याओ जगमां जणाय, जेनी कलाओ न कदी कळाय. ३
रमात्मा रहि साक्षीरूप, जुवे जगत्नी रचना अनूप;
नमुं ते प्रभु आदि देव, एकाग्र चित्ते करुं नित्य सेव. ४
तमे छो वळि मध्यमां छो, प्रभू तमे अंत विषे रहोछो;
किधी छे रचनाज मारे, सृष्टी बधी हाथ प्रभू तमारे. ५

उपेंद्रवज्रा.

पी मुनीओ नहि कोइ जाणे, स्वरूप जेनुं नहि को प्रमाणे;
ळा जीवोथी न कदी कळाय, प्रभूमहीमा सघळे जणाय. ६
तत्त्व जे साधु जनो महान, करे अहोरात्र तमारुं गान;
महा मुनी मंगळ मार्ग पामे, महा प्रभूना पदमां विरामे. ७



इन्द्रवज्रा.

हे विश्वना देव दयानिधान, आपो मने प्रेमथी दिव्य ज्ञान;
उत्कृष्ट ए अर्चननुं विधान, एकाग्र चित्ते धरुं तारुं ध्यान. ८



मंदाक्रांता.

विश्वाधीशा, विनयथि नमुं, नित्य पाये तमारे,
राखो स्वामी, शरण नथि को, अन्य आधार मारे;
भक्तिद्वारे, प्रभुपद मळे, एज विश्वास मारे,

सर्वात्मारे, विपत्ति समये, आवजो शीघ्र वारे. १
कुखो सामुं, प्रभु नव जुवो, दोष अत्यंत थाय,
देवा तारो, दिन जन गणी, नित्य रे'शो सहाय;
अंतर्यामी, अकलित कला, को थकी ना कळाय,
अल्पज्ञोथी, प्रभु क्यम करी, स्तुति तारी कराय. २
आ संसारे, भ्रमित जिवनी, भक्तिथी मुक्ति थाशे,
सर्वे तेनां, त्रिविधि जनितो, दुःख संताप जाशे;
सत्कर्मोने, अनुसरणथी, सत्य भक्ती गणाशे,
सर्वे तारा, अनुग्रह थकी, विश्वसिंधू तराशे. ३
अज्ञाने में, अगणित चुको, जे किधी ते शमावो,
ऐहीकामुष्मिक सुख थवा, शुद्ध क्रीया बतावो;
पूर्णात्मारे, प्रणत जनने, दीन जाणी निभावो,
आ संसारे, जनहिततणां, कार्य रूडां करावो. ४
सत्ता तारी, जड चर विषे, पूर्णताथी प्रमाणुं,
स्रष्टा स्वामी, सगुण तमने, सर्वथी श्रेष्ठ मानुं;
अंतःशुद्धी, विण विधि वृथा, बाह्य क्रीया हुं जाणुं,
सर्वोत्कृष्टा, शुभफलप्रदा, प्रेमभक्ती बखाणुं. ५
विद्यादाता, अविहित क्रियाथी, सदा दूर राखो,
सद्धर्मोनी, सदय चितथी, सन्मती नित्य दाखो;
दोषो मारा, प्रभू नव लहो, एज विश्वास आखो,

१५ आठमुं व्याख्यान. (महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुरना मूळ वंगाळिनो तरजुमो.) ०--०--३

१६ ज्ञानसुधा. (मासिक.) वार्षिक लवाजम. १--२--०

छपाय छे.

१७ नैमित्तिकउपासनासंगीत. भोळानाथ साराभाइ.

१८ भजनसंग्रह. ,,

१९ भक्तसुहृद. (बालोन्नतिसहाय, ब्रह्मसंगीत, नैमित्तिकउपासनासंगीत अने भजनसंग्रह. ए सर्वनुं एकत्र पुस्तक.) ,,

इंग्रेजी. (ENGLISH).

1. Asia's Message to Europe — Keshub Chundra Sen — 0-8-0
2. Economy of Human Life — B. B. Nagarkur — 0-6-0
3. Ends and Aims of College Education. — R. G. Bhandarkur — 0-1-0
4. Parental Advice — 0-0-6